राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 क्रिकेट विश्व कप 2023-सूर्यकुमार को लेकर गौतम गंभीर ने कहा यह ...

शुभमन गिल ने ठोका 6वां शतक ... 11

वर्ष : 11 | अंक : 135 | पटना, सोमवार, 25 सितंबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

जी-20 के सफल आयोजन से दुनिया भर में भारत के प्रति बड़ी रुचिः मोदी

पीएम ने मन की बात की 105 वीं कड़ी में राष्ट्र को किया संबोधित

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि जी-20 के सफल आयोजन से भारत के प्रति दुनिया भर में रुचि बढ़ी है और पर्यटन को बढ़ावा मिलने से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। श्री मोदी ने रविवार को आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात की 105 वीं कड़ी में राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यटन को कुछ लोग सिर्फ सैर-सपाटे के तौर पर देखते हैं, लेकिन पर्यटन का एक बहुत बड़ा पहलू रोजगार से जुड़ा है। सबसे कम निवेश में सबसे ज्यादा रोजगार, अगर कोई क्षेत्र पैदा करता है, तो वह पर्यटन क्षेत्र है। पर्यटन क्षेत्र को बढ़ाने में किसी भी देश के लिए सद्भावना महत्वपूर्ण है।उन्होंने कहा कि बीते कुछ वर्षों में भारत के प्रति आकर्षण बहुत बढ़ा है और जी-20 के सफल आयोजन के बाद दुनिया के लोगों की रुचि भारत में और बढ़ गयी है। जी -20 में एक लाख से ज्यादा प्रतिनिधि भारत आए। वे यहाँ की विविधता, अलग-अलग परम्पराएं, भांति-भांति का खानपान और धरोहरों से परिचित हुए। प्रधानमंत्री ने कहा कि यहाँ आने वाले प्रतिनिधि अपने साथ जो शानदार अनुभव लेकर गए हैं, उससे पर्यटन का और विस्तार होगा। भारत में एक से बढ़कर एक विश्व धरोहर स्थल भी हैं और इनकी संख्या लगातार बढती जा रही है। कुछ ही दिन पहले शान्तिनिकेतन और कर्नाटक के पवित्र होयसड़ा मंदिरों को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। कर्नाटक के जिन होयसड़ा मंदिरों को यूनेस्को ने विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है, उन्हें,13वीं शताब्दी के बेहतरीन वास्तु कला के लिए

जाना जाता है। इन मंदिरों को मान्यता मिलना, मंदिर निर्माण की भारतीय परंपरा का भी सम्मान है। भारत में अब विश्व धरोहर स्थल की कुल संख्या 42 हो गई है। भारत का प्रयास है कि हमारे ज्यादा-से-ज्यादा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जगहों को विश्व धरोहर स्थल की मान्यता मिले। उन्होंने कहा, जब भी आप कहीं घूमने जाने की योजना बनाएं, तो ये प्रयास करें कि भारत की विविधता के दर्शन करें। आप अलग-अलग राज्यों की संस्कृति को समझें, धरोहर स्थल को देखें। इससे आप अपने देश के गौरवशाली इतिहास से तो परिचित होंगे ही, स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने का भी आप अहम माध्यम बनेंगे।

बच्चों को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करें: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि पुस्तकें अच्छा मित्र होती हैं और बच्चों को इन्हें पढने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

श्री मोदी ने रविवार को आकाशवाणी पर अपनी मासिक कार्यक्रम मन की बात कार्यक्रम की 105 वीं कड़ी में उत्तराखंड के नैनीताल में शुरू हुई घोड़ा लाइब्रेरी का का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि आज का दौर डिजिटल तकनीक और ई- बुक्स का है, लेकिन फिर भी किताबें, हमारे जीवन में हमेशा एक अच्छे दोस्त की भूमिका निभाती है। इसलिए, हमें बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। श्री मोदी ने कहा कि हमारे देश में शिक्षा को हमेशा एक सेवा के रूप में देखा जाता है। उत्तराखंड के कुछ ऐसे युवाओं के बारे में पता चला है, जो इसी भावना के साथ बच्चों की शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं। नैनीताल जिले में कुछ युवाओं ने बच्चों के लिए अनोखी घोड़ा लाइब्रेरी की शुरूआत की है।

सीएम नीतीश पहुंचे जदयू मुख्यालय पार्टी नेताओं संग कई बिंदुओं पर की चर्चा

निर्माण कार्यों का लिया जायजा, पार्टी नेताओं में दिखा उत्साह

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। रविवार यानी छुट्टी के दिन भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार काफी सक्रिय मोड में दिखे। मुख्यमंत्री रविवार सुबह अचानक बख्तियारपुर स्थित अपने पैतृक आवास पहुंच गए। इसके बाद जदयू कार्यालय पहुंचे। यहां से निकलकर वह राबड़ी आवास पहुंच गए। जानकारी के मुताबिक पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव से उन्होंने मुलाकात की। इसके बाद सीएम हाउस के लिए रवाना हो गए। सियासी गलियारों में चर्चा है कि सोमवार को होने वाली कैबिनेट बैठक को लेकर सीएम राबड़ी आवास पहुंचे थे। दरअसल, कैबिनेटे की बैठक अक्सर मंगलवार को होती है। पिछले मंगलवार यानी 19 सितंबर को ही मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक हुई थी। अब 6 दिन के अंदर यानी सोमवार को फिर से कैबिनेट की बैठक बुलाई गई है। संभावना है कि इस कैबिनेट में कुछ बड़ी घोषणाएं हो सकती है।

जदयू कार्यालय अचानक पहुंचे : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आज सुबह 11.30 बजे बख्तियारपुर से लौटने के दौरान में बिना किसी पूर्व सूचना के जदयू मुख्यालय पहुँचे और वहाँ की गतिविधियों का जायजा लिया। उनके आगमन के समय मुख्यालय में मौजूद प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा, विधानपार्षद संजय गांधी, कोषाध्यक्ष ललन सर्राफ, राष्ट्रीय सचिव रवीन्द्र

सिंह, मुख्यालय प्रभारी चंदन सिंह आदि नेताओं ने उनका स्वागत किया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार लगभग आधे घंटे प्रदेश मुख्यालय में रहे। इस दौरान अपने कक्ष में उन्होंने उपस्थित नेताओं के साथ सांगठनिक विषयों पर चर्चा की और जरूरी निर्देश दिए। इसके बाद मुख्यालय के पिछले हिस्से में चल रहे निर्माण कार्य का जायजा लिया। उसी समय कपूर्री सभागार में जदयू व्यावसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ तथा जदयू शिक्षा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में 300 से अधिक युवा पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर रहे थे। मुख्यमंत्री सभागार भी गए और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं को देख प्रसन्नता व्यक्त की और सभी के साथ तस्वीर भी खिंचवाई। मुख्यमंत्री लगभग 12 बजे तक मुख्यालय में रहे। उन्होंने कहा कि वे आगे भी इसी तरह पार्टी मुख्यालय आया करेंगे।

अचानक बख्तियारपुर स्थित अपने पैतृक आवास पहुंचे : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार रविवार को अचानक बख्तियारपुर स्थित अपने पैतृक आवास पहुंचे। इसके बाद पटना के लिए निकल गए। इससे पहले शनिवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जदयू के प्रकोष्ठ अध्यक्षों और प्रदेश प्रवक्ताओं के साथ बैठक में पार्टी नेताओं को दो टूक कहा, कि मजबूती के साथ हमें लोकसभा चुनाव की ओर बढ़ना है। इंडिया गठबंधन के घटक दलों से बेहतर समन्वय बनाकर चलना है। बैठक में मुख्यमंत्री ने जदयू प्रकोष्ठों के प्रदेश अध्यक्षों और प्रदेश प्रवक्ताओं को सरकार और पार्टी की उपलब्धियों की जानकारी आमलोगों तक पहुंचाने का टास्क दिया है। उन्होंने कहा है कि आगामी चुनाव के मद्देनजर संगठन की मजबूती के लिए हर स्तर पर काम करें। जनसंपर्क और जनसंवाद कार्यक्रमों पर अधिक समय दें। प्रवक्ताओं को वरिष्ठ नेताओं के सम्पर्क में रहने तथा पार्टी लाइन पर विभिन्न मुद्दों पर उनसे मार्गदर्शन लेने को कहा।

मुख्यमंत्री ने बैठक में शामिल सभी नेताओं से उनके प्रकोष्ठों के क्रियाकलाप की जानकारी ली और उनका फीडबैक प्राप्त किया। नीतीश कुमार ने प्रकोष्ठों के अध्यक्षों से कहा कि हर बूथ तक आमलोगों से जनसंपर्क कायम करें। अपने-अपने प्रकोष्ठों की प्रकृति के अनुसार उससे अधिक से अधिक लोगों को जोड़ें। सरकार ने समाज के सभी तबकों के लिए काम किया है। हम लोगों के काम तथा उपलब्धियों की जानकारी संबंधित लोगों तक पहुंचाइए। प्रकोष्ठ अध्यक्षों को सप्ताह में एक दिन पार्टी ऑफिस में काम करने का भी निर्देश दिया। इसके अगले दिन रविवार को मुख्यमंत्री जायजा लेने पार्टी के दफ्तर पहुंच गए।

सचिवालय सेवा संघ के प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री को सचिवालय संवाद पत्रिका भेंट की

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार सचिवालय सेवा संघ के प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को सचिवालय संवाद पत्रिका भेंट की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विषेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, सचिवालय संवाद पत्रिका के संरक्षक विनोद कुमार, प्रधान संपादक प्रशांत कुमार, संपादक आदर्श वैभव, शशिकांत सुमन, अवधेश कुमार दास, राजीव रंजन मौजूद रहे ।

लालू प्रसाद ने राजगीर में जू-सफारी का उठाया लुत्फ

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद रविवार को राजगीर पहुंचे। जू सफारी के निदेशक हेमंत पाटिल ने बुके देकर लालू प्रसाद का स्वागत किया। इसके बाद जू सफारी के अंदर राजद सुप्रीमो ने भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। निदेशक ने इसके बाद राजद सुप्रीमो को आर्ट गैलरी में जीवन चक्र के रूप में स्थापित मूर्तियों के बारे में जानकारी दी। श्री यादव प्रदूषण मुक्त वाहन पर सवार होकर जू सफारी के अंदर हिरण सफारी और भालू सफारी का भ्रमण किया। जहां सुंदरी नामक भालू ने लालू प्रसाद की गाड़ी रोक दी। इसके बाद थोड़ी देर रूक कर लालू प्रसाद यादव ने सुंदरी का दीदार किया, इसके बाद बाड़े के अंदर बंद भोला नामक भालू से मिलने सुंदरी चली गई। हालांकि, पूरा सफारी भ्रमण किए बिना ही लालू यादव वापस फॉरेस्ट विभाग के सर्किट हाउस पहुंच गए। यहां उन्होंने अल्पहार लिया। इसके बाद विभाग के अधिकारियों से बातचीत की। लालू यादव के राजगीर पहुंचने की सूचना जैसे ही राजद के कार्यकताओं को मिली इसके बाद अपने नेता से मुलाकात को लेकर राजद कार्यकर्ता वन विभाग के सर्किट हाउस पहुंच गए। कार्यकताओं ने अपने नेता का स्वागत किया और उनका अभिवादन किया।

संक्षिप्त खबरें

राजस्थान के दौसा में सड़क हादसा, पांच की मौत

दौसा। राजस्थान के दौसा जिले के महवा थाना क्षेत्र में ग्राम बरीतकी के पास रविवार को तेज रफ्तार एक रोडवेज बस ने टैंपो को टक्कर मारते हुए पैदल यात्रियों को अपनी चपेट में ले लिया। इस हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई और छह लोग घायल हो गए। घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। हादसा रविवार पूर्वाह्न 11.30 बजे के करीब करौली स्टेट हाई-वे पर हुआ। हादसे के बाद बस चालक फरार हो गया। महवा थाना इंचार्ज जितेंद्र सिंह ने बताया कि बरीतकी गांव के नजदीक बस ने एक टेंपो को टक्कर मार दी। इसी दौरान पास से निकले रहे पदयात्रियों को भी बस ने चपेट में ले लिया। यात्रियों से भरा टेंपो हिंडौन (करौली) की तरफ से आ रहा था। बस महवा की तरफ से आ रही थी। महवा से हिंडौन के भैरूजी के लिए पदयात्रा निकाली जा रही थी। इस बीच पैदल यात्रियों को बचाने की कोशिश में यह हादसा हुआ। बस ने टैंपो को टक्कर मारते हुए तीन पैदल यात्रियों और एक राहगीर को चपेट में ले लिया। वे कैलादेवी (करौली) के दर्शन कर वापस मध्य प्रदेश लौट रहे थे।

मुजफ्फरपुर में दो की संदिग्ध मौत

मुजफ्फरपुर। बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में संदिग्ध लोगों की मौत हो गई, जबकि दो लोगों के आंखों की रोशनी चली गई। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। अपर पुलिस अधीक्षक अवधेश दीक्षित ने रविवार को बताया कि घटना काजी मोहम्मदपुर थाना के क्षेत्र में आने वाले पोखरिया पीर मोहल्ले की है और शराब आपूर्तिकर्ता फरार है, लेकिन उसकी पत्नी और बेटी को हिरासत में लिया गया है। उन्होंने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि पोखरिया पीर मोहल्ले के उमेश शाह और पप्पू राम की मौत हो गई है। उनके परिवार के सदस्यों ने बताया कि वे तीन दिन पहले शराब पीकर घर लौटे थे और इसके बाद बीमार हो गए। एएसपी दीक्षित ने बताया कि दो अन्य लोग धर्मेंद्र और राजू के आंखों की रोशनी चले जाने की भी सूचना मिली थी। धर्मेंद्र ने पुलिस को बताया कि उन्होंने शिवचंद्र पासवान से शराब खरीदी थी। पुलिस ने बताया कि शिवचंद्र अभी फरार है और उसकी पत्नी और बेटी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

अश्विनी चौबे ने बीआईए के नव निर्वाचित अध्यक्ष को दी बधाई

पटना। केन्द्रीय मंत्री अश्विनी चौबे ने बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के अध्यक्ष चुने जाने पर केपीएस केसरी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने उपाध्यक्ष पद के दोनों पद पर चुने गए नरेंद्र कुमार और सीए आशीष रहतोगी को भी बधाई दी। श्री चौबे ने केपीएस केसरी को बधाई देते हुए कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि आपके नेतृत्व में चुने गए नए कार्य समिति के सभी लोग आपके नेतृत्व में बिहार को भारत के औद्योगिक मानचित्र पर प्रतिष्ठा दिलाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। बिहार के औद्योगिक विकास में बिहार सरकार एवं भारत सरकार को आपके द्वारा दिए गए सुझाव और सलाह से बहुत मदद मिलेगी। बी आई ए के सामूहिक सक्षम अध्ययन व शोध और आपके अनुभव का फायदा बिहार के औद्योगीकरण को अवश्य होगा।

भारत और अमेरिका की नौसेना ने सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर की चर्चा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने अमेरिका की चार दिवसीय यात्रा के दौरान तेजी से बढ़ती भारत-अमेरिका रणनीतिक भागीदारी में द्विपक्षीय समुद्री सुरक्षा सहयोग का विस्तार करने के तरीकों पर प्रमुखता से बात की। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी।

नौसेना प्रमुख ने 25वीं अंतरराष्ट्रीय समुद्र शक्ति संगोष्ठी (आईएसएस) में भाग लेने के लिए 19 से 22 सितंबर तक अमेरिका की यात्रा की। भारतीय नौसेना के प्रवक्ता कमांडर विवेक मधवाल ने कहा, नौसेना प्रमुख की अमेरिका यात्रा से द्विपक्षीय सहयोग मजबूत करने के साथ ही हिंद-प्रशांत क्षेत्र में विविध साझेदारों के साथ भागीदारी के लिए नौसेना के उच्च स्तर पर बातचीत करने का महत्वपूर्ण अवसर मिला। अमेरिकी नौसेना ने मुक्त एवं नियम आधारित हिंद-प्रशांत के साझा दृष्टिकोण की ओर काम करने के लिए एक समान विचारधारा वाली नौसेनाओं के बीच सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से न्यूपोर्ट के रोड आइलैंड में यूएस नेवल वॉर कॉलेज में आईएसएस की मेजबानी की थी।

एडमिरल कुमार ने आईएसएस में भाग लेने के इतर अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, मिस्र, फिजी, इजराइल, इटली, जापान, केन्या, पेरू, सऊदी अरब, सिंगापुर और ब्रिटेन समेत विभिन्न देशों के अपने समकक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी कीं। मधवाल ने कहा, यात्रा के दौरान व्यापक बातचीत मुक्त, खुले एवं समावेशी हिंद-प्रशांत के दृष्टिकोण को साकार करने की ओर भारतीय नौसेना की प्रतिबद्धता को दशार्ता है।

महिला आरक्षण लागू करने और जनगणना के बीच कोई संबंध नहीं : राहुल

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस नेता एवं सांसद राहुल गांधी ने लोकसभा और विधानसभाओं में महिला आरक्षण लागू करने के समय को लेकर रविवार को भारतीय जनता पार्टी नीत केंद्र सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि उन्हें महिला आरक्षण और दशकीय जनगणना या परिसीमन अभ्यास के बीच कोई संबंध नजर नहीं आता। श्री गांधी ने यहां असम के एक मीडिया नेटवर्क के कार्यक्रम में कहा कि महिलाओं को लोकसभा और विधानसभा की 33 प्रतिशत सीटें आवंटित करके महिला आरक्षण विधेयक आज लागू किया जा सकता है। राजनीतिक व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि भारतीय महिलाएं राजनीतिक व्यवस्था में उस तरह से हिस्सा नहीं ले रही हैं, जिस तरह उन्हें लेना चाहिए। उन्होंने कहा, उन्हें (महिलाओं को) राजनीति में भाग लेने में मदद करने का सबसे बड़ा कार्य कांग्रेस पार्टी द्वारा पंचायती राज में 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करके

किया गया था। भाजपा पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा,जब हम पंचायती राज में महिला आरक्षण को पारित कराने की कोशिश कर रहे थे तो भाजपा ने इस मुद्दे पर हमारा विरोध किया। ऐसे में महिला सशक्तिकरण में किसकी रुचि है, यह बहुत स्पष्ट है। भाजपा पर ध्यान भटकाने वाली रणनीति अपनाने का आरोप लगाते हुए कांग्रेस नेता ने कहा कि उनकी पार्टी ने अब पिछले अनुभवों से सीख लिया है कि इससे कैसे निपटना है। उन्होंने कहा, हमने सीख लिया है कि भाजपा की ध्यान भटकाने वाली रणनीति से कैसे निपटना है। कर्नाटक चुनाव में, हमने एक स्पष्ट दृष्टिकोण दिया और अब हम बयान पर नियंत्रण रखते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे क्या करने की कोशिश करते हैं, अब बयान पर हमारा नियंत्रण है। मणिपुर संघर्ष के मुद्दे पर चर्चा करते हुए कांग्रेस सांसद ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार का पूर्वोत्तर राज्य की स्थिति पर कोई नियंत्रण नहीं है। उन्होंने कहा, भाजपा वहां नफरत की राजनीति कर रही है। इसने मणिपुर राज्य को नष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा, ह्लमैंने अपने पूरे जीवन में मणिपुर में जो देखा वह कभी नहीं देखा। इंडिया गठबंधन और एकजुट विपक्षी दलों के लचीलेपन के साथ काम करने के बारे में बात करते हुए श्री गांधी ने कहा, सभी चुनौतियों के बीच, हम (इंडिया गठबंधन) एकजुट हुए हैं और मैंने विपक्ष को पहले कभी इस तरह काम करते नहीं देखा-इतने लचीलेपन के साथ क्योंकि हम एक राजनीतिक दल से लड़ रहे हैं लेकिन भारत के विचार का बचाव कर रहे हैं, इसीलिए हमने अपने गठबंधन का नाम आईएनडीआईए रखा है।

उद्घाटन प्रधानमंत्री ने नौ वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई

वो दिन दूर नहीं, जब वंदे भारत देश के हर हिस्से को कनेक्ट करेगी : मोदी

प्रात : किरण

पटना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए देश के 11 राज्यों के विभिन्न गंतव्यों को जोड़ने वाली नौ वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को हरी झंडी दिखाएंगे। रेल मंत्रालय ने बताया कि ये नई वंदे भारत ट्रेनें देश भर में कनेक्टिविटी में सुधार और रेल यात्रियों को विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करने के प्रधान मंत्री के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में एक कदम हैं। वो दिन दूर नहीं, जब वंदेभारत देश के हर हिस्से को कनेक्ट करेगी। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने नौ वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाए जाने को देश में आधुनिक कनेक्टिविटी का एक अभूतपूर्व अवसर बताया।

उन्होंने कहा, देश में बुनियादी ढांचे के विकास की यह गति और पैमाना 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं से बिल्कुल मेल खाते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज से शुरू हुई ट्रेनें अधिक आधुनिक और आरामदायक हैं। उन्होंने कहा कि ये वंदे भारत ट्रेनें नए भारत के नए उत्साह का प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि वंदे भारत ट्रेनों में एक करोड़ ग्यारह लाख से ज्यादा लोगों ने सफर किया है और इस बात पर खुशी जताई कि वंदे भारत के प्रति उत्साह बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने बताया कि 25 वंदे भारत ट्रेनें विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में लोगों की सेवा में है। उन्होंने कहा कि आज इसमें 9 और वंदे भारत ट्रेनों को जोड़ा जा रहा है और वो दिन दूर नहीं, जब वंदेभारत देश के हर हिस्से को कनेक्ट करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि वंदे भारत उन लोगों के लिए फायदेमंद है जो समय बचाना चाहते हैं और एक ही दिन में यात्रा करना चाहते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि रेलवे के प्रत्येक कर्मचारी को यात्रा को सुविधाजनक बनाने और यात्रियों को अच्छा अनुभव प्रदान करने के लिए लगातार संवेदनशील रहना होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में नागरिकों ने रेलवे की स्वच्छता के नए मानकों पर गौर किया है। उन्होंने सभी से महात्मा गांधी को

श्रद्धांजलि देने के लिए 1 अक्टूबर को सुबह 10 बजे प्रस्तावित स्वच्छता अभियान में शामिल होने के लिए कहा। उन्होंने सभी से खादी और स्वदेशी उत्पादों की खरीद के लिए खुद को फिर से समर्पित करने और 2 अक्टूबर से 31 अक्टूबर, सरदार पटेल की जयंती के दौरान स्थानीय लोगों के लिए वोकल फार लोकल होने के लिए भी कहा।

समारोह में राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री, संसद सदस्य, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव और अन्य लोग शामिल हुए। ये नौ ट्रेनें 11 राज्यों- राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, पश्चिम बंगाल, केरल, ओडिशा, झारखंड और गुजरात में कनेक्टिविटी को बढ़ावा देंगी। ये वंदे भारत ट्रेनें अपने संचालन के रूटों पर सबसे तेज गति से दौड़ेंगी और यात्रियों के समय में काफी बचत करेंगी। रूट पर मौजूदा सबसे तेज ट्रेन की तुलना में राउरकेला-भुवनेश्वर-पुरी वंदे भारत एक्सप्रेस और कासरगोड-तिरुवनंतपुरम वंदे भारत एक्सप्रेस लगभग तीन घंटे जल्दी सफर तय करेंगी, हैदराबाद-बेंगलुरु वंदे भारत एक्सप्रेस 2.5 घंटे से अधिक समय की बचत करेगी, तिरुनेलवेली-मदुरै-चेन्नई वंदे भारत एक्सप्रेस 2 घंटे से अधिक समय की बचत करेगी; रांची-हावड़ा वंदे भारत एक्सप्रेस, पटना-हावड़ा वंदे भारत एक्सप्रेस और जामनगर-अहमदाबाद वंदे भारत एक्सप्रेस लगभग एक घंटे के समय की बचत करेंगी तथा उदयपुर-जयपुर वंदे भारत एक्सप्रेस लगभग आंधे घंटे जल्दी सफर तय करेंगी।

पीएम ने बिहार की दूसरी वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को दिखाई हरी झंडी: पटना। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को वर्चुअल माध्यम से पटना-हावड़ा वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाई। यह दूसरी वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन है, जिसे बिहार में शुरू किया गया है। इससे पहले, पटना-रांची वंदे भारत एक्सप्रेस को इसी साल जून में शुरू किया गया था। प्रधानमंत्री द्वारा हरी झंडी दिखाने के तुरंत बाद दोपहर करीब 12.30 बजे ट्रेन पटना जंक्शन से रवाना हो गई।

पूर्व मध्य रेलवे (ईसीआर) द्वारा पटना जंक्शन पर एक उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें बिहार के केंद्रीय मंत्रियों और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने भाग लिया। पूर्व मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी बीरेंद्र कुमार ने बताया, प्रधानमंत्री ने रविवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से पटना-हावड़ा मार्ग सहित नौ वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई। पटना-हावड़ा वंदे भारत एक्सप्रेस 26 सितंबर से अपनी नियमित यात्रा शुरू करेगी। यह ट्रेन 532 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए रविवार रात 10 बजे हावड़ा पहुंचेगी। यह ट्रेन बुधवार को छोड़कर सप्ताह में छह दिन चलेगी। यह पटना जंक्शन से सुबह आठ बजे चलेगी और दोपहर दो बजकर 35 मिनट पर हावड़ा पहुंचेगी। बीरेंद्र ने बताया कि अपनी वापसी यात्रा पर यह ट्रेन हावड़ा से दोपहर तीन बजकर 50 मिनट पर रवाना होगी और उसी दिन रात 10 बजकर 40 मिनट पर पटना जंक्शन पहुंचेगी। इस ट्रेन का ठहराव पटना साहिब, मोकामा, लखीसराय, जसीडीह, जामताड़ा, आसनसोल और दुगार्पुर में होगा। रेलवे ने वंदे भारत एक्सप्रेस से यात्रा करने के इच्छुक यात्रियों के लिए टिकट बुकिंग की सुविधा शुरू कर दी है। एसी एक्जीक्यूटिव क्लास में प्रति यात्री किराया भोजन के साथ 2,725 रुपये और बिना भोजन के 2,325 रुपये है। एसी चेयर कार में प्रति यात्री किराया भोजन के साथ 1,505 रुपये और बिना भोजन के 1,160 रुपये है।

संक्षिप्त खबरें

भारी मात्रा में प्लेटफॉर्म से अंग्रेजी शराब बरामद

दानापुर। खगौल रेल थाना के अंतर्गत जीआरपी के द्वारा दानापुर रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म नंबर वन ए के पूर्वी फुट ओवर ब्रिज के पास लावारिस तीन ट्रॉली बैग में अंग्रेजी शराब वाइट लेवल ब्लैक डेथ स्कॉच नोव बोतल जैकब क्रीक रेड वाइन 8 बोतल एब्सलूट वोडका 6 बोतल 100 पाइप डीलक्स ब्लैडेट स्कॉच 6 बोतल रेयर जीबी ब्लैक स्कॉच व्हिस्की बॉटल 6 सिमरनऑफ वोडका6 बोतल लावारिस अवस्था में बरामद किया गया जीआरपी थानाध्यक्ष रणधीर कुमार ने बताया की लावारिस अवस्था में बरामद किया गया अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज कर ली गई है।

छात्र का जत्था किया सफर

पटना सिटी (प्राकि)। पटना हावड़ा के बीच ट्रेन से सिटी मोंटेसरी स्कूल के छात्र-छात्राओं ने भी सफर किया सभी छात्र-छात्राएं ट्रेन के स्वागत के लिए यहां पहुंचे थे। उन सबों ने अपने स्थानीय विधायक नंदकिशोर यादव का स्वागत किया। मौका था वंदे भारत ट्रेन पर स्कूल के विद्यार्थियों का चयन होकर उस पर सफर करना। पटना साहिब स्टेशन पर केन्द्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद, विधायक नंदकिशोर यादव व मेयर श्रीमती सीता साहू ने ट्रेन का शुभारंभ किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 'मन की बात' सुनकर सभी ने छात्रों को ट्रेन पर बैठाया गया। सबों को पटना साहिब स्टेशन पर कार्यक्रम के दौरान अल्पाहार व ट्रेन में बाढ़ स्टेशन तक की यात्रा में उपहार व अनेक वस्तुएं भी दीं। सभी बच्चे बहुत खुश दिखे। यात्रा करने वालों में आस्था, रुचि, अलका, आयुषी, संध्या, तन्मय सिन्हा, आर्यन, राजवीर सिंह, रौनक राज, गोविंद कुमार, स्कूल के निदेशक विक्रांत अभिषेक माथुर मौजूद थे।

कंगन घाट पर गणपति प्रतिमा का विसर्जन

पटना सिटी (प्राकि)। गणेश उत्सव समारोह और विसर्जन का दौर लगातार जारी है। इस दौरान श्रीश्री गणेश पूजा समिति बाल मंडली मोगलपुरा जमुनी राय का कुआं में सोमवार को जागरण का आयोजन किया जाएगा। 27 को भंडारा का प्रसाद होगा, जबकि 29 सितंबर को प्रतिमा विसर्जन के लिए शोभायात्रा निकाला जाएगा। वहीं रविवार को नुरुद्दीनगंज में श्री गणेश की प्रतिमा स्थापित कर पूजा-अर्चना की गई। इसके बाद रविवार को ढोल ताशा के बीच महिला और पुरुषों का जत्था शोभायात्रा में जयकारा लगाते हुए अशोक राजपथ के रास्ते चौक थाना होते हुए कंगन घाट पहुंचा। ट्रैक्टर पर सवार महिलाएं भजन कर रही थीं। कंगन घाट में प्रथम पूज्य व विघ्न विनाशक श्री गणेश की प्रतिमा का विसर्जन किया गया।

तख्तश्री में बन रहे रिहाइश का लिंटर

पटना सिटी (प्राकि)। गुरुद्वारा बाललीला मैनी संगत के द्वारा तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब परिसर में आधुनिक कमरे का निर्माण की सेवा की जा रही है। इस सेवा के दौरान रविवार को दूसरे तल्ले के लिंटर का कारसेवा शुरू हुआ। इस दौरान कथावाचक ज्ञानी सुखदेव सिंह ने कार्य शुरू होने के पूर्व अरदास यानी विशेष प्रार्थना किया।

अपने गिरेवान में झांके राजद नेता : प्रभाकर

पटना। प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता प्रभाकर मिश्र ने कहा कि भाजपा को भाषा की मयार्दा लालू-राबड़ी से नहीं सीखनी है। वे पहले अपने मानस-निंदक शिक्षा मंत्री के खिलाफ कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि तेजस्वी प्रसाद यादव की मां राबड़ी देवी ने कभी बिहार के राज्यपाल को लंगड़ा कहा था। वे बताएं कि यह किन लोगों की भाषा है ? श्री मिश्र ने कहा कि जिस दल के नेता तिलक लगाने वालों को देशद्रोही और करोड़ों लोगों की आस्था से जुड़े महान ग्रंथ श्री रामचरित मानस को पोटेशियम सायनाइड (जहर) बताते हैं, उसके नेता भाजपा नेताओं के बयान पर किस मुंह से बयान दे रहे हैं ? डिप्टी सीएम को कुछ बोलने से पहले अपने माता-पिता और बड़े भाई के मवालियों जैसे बयान पलट कर देख लेना चाहिए। श्री मिश्र ने कहा कि राबड़ी देवी जी ने जदयू के वरिष्ठ नेता ललन सिंह और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बीच संबंध को क्या कहा था, इसे दोहराया नहीं जा सकता। बिहार की जनता भूरा बाल साफ करो वाला बयान नहीं भूली है।

रेलवे लगातार विकास का आयाम बना रहा : नंदकिशोर यादव

पटना साहिब स्टेशन पर वंदे भारत ट्रेन का हुआ जबरदस्त स्वागत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

रेलवे लगातार विकास के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करता जा रहा है। भले हम जापान में चलने वाले गति सीमा के अनुरूप ट्रेन अपने देश में नहीं चला रहे हैं, मगर उसे टक्कर देते हुए उस तरह का आधुनिक और आरामदायक सफर वाली ट्रेन गति सीमा को बढ़ाते हुए देश के एक से दूसरे शहर को जोड़ने के लिए चलाने का काम किया जा रहा है। और यह सब संभव हो पा रहा है देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के नेतृत्व में। यह बात पटना -हावड़ा वंदे भारत ट्रेन के पटना साहिब स्टशन पहुंचने और हरी झंडी दिखाने के पूर्व अपने संबोधन में बिहार सरकार के पूर्व मंत्री और विधायक नंदकिशोर यादव ने रविवार को कहीं। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी भी कमाल के आदमी हैं। पहले कमाल उन्होंने चंद्रमा फतेह कर किया। आज एक माह पूरा हो गया। भारत चांद पर है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत का झंडा बुलंद रूप से लहरा रहा है। जी 20 शिखर सम्मेलन कर शक्तिशालीदेश के प्रमुख की मेजबानी कर देश का मान बढ़ाया। फिर सूर्य फतह की ओर हम सब हैं। हम सबों ने मिलकर ऐसा प्रधानमंत्री बनाया है, जो जीवन के हर क्षेत्र में विकास के रास्ते पर ले चलने का काम कर रहे हैं। 21वीं सदी में देश विकासशील देश की श्रेणी में खड़ा हो जाएगा। अब पटना साहिब स्टेशन आने को परेशान नहीं होना होगा। पटना घाट में रेलवे की जमीन को बिहार सरकार ने ले लिया है और अब बिछी रेल ट्रैक को उखाड़ कर पटना घाट से पटना साहिब स्टेशन के बीच कर फोर लेन का रोड बनेगा, जिससे पटना साहिब स्टेशन पहुंचना आसान हो जाएगा। साथ ही गंगा पाथवे पर भी जाना सुलभ होगा। पटना साहिब स्टेशन पर एससी वेटिंग रूम बनकर तैयार है। इसे जल्द ही यात्रियों को समर्पित किया जाएगा। भारतीय रेल दुनिया का तीसरा बड़ा नेटवर्क वाला विभाग है। यह लगातार विकास का कदम बढ़ा रहा है। पटना साहिब धार्मिक, ऐतिहासिक और व्यापारिक रूप से सुदृढ़ है। इस कारण से यहां ट्रेनों का ठहराव दिया गया है। साथ ही इस स्टेशन को आदर्श स्टेशन का भी दर्जा दिया गया है, मगर यहां उस स्टेशन के अनुरूप जो यात्रियों को मिलने वाली सुविधाएं हैं, उसे भी जल्द ही यहां पूरा कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि कुछ ट्रेनों का ठहराव और कुछ का विस्तार समय की मांग है। वह इस संबंध में रेलवे के वरीय अधिकारियों से भी बात करेंगे। साथ ही रेल मंत्री और अपने सांसद से भी पहल करने को आग्रह करेंगे। विधायक श्री यादव ने लोगों का आह्वान किया की सफाई पर जोर दें। जो भी सार्वजनिक स्थान है, अपने घर के आसपास, स्टेशन, बस अड्डा से लेकर जो भी सार्वजनिक स्थान है, वहां पर सफाई रखने की जिम्मेदारी हमारे और आप सबों की है। सफाई की कार्य संस्कृति जहां है, वहीं विकास है। पटना नगर निगम की महापौर सीता साहू ने कहा कि बिहार में पहले पटना और रांची के बीच वंदे भारत ट्रेन का परिचालन शुरू हुआ और मोदी जी ने फिर पटना से हावड़ा के बीच चला कर दो राज्यों को सौगात देने का काम किया है। एक तरह से बिहार को दो वंदे भारत ट्रेन उपहार में मिला है। दानापुर मंडल के सीनियर डीएम संजय घोष ने अतिथियों को पुष्प गुच्छ और अंग वस्त्र देकर स्वागत किया। मंच पर तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के तत्कालीन जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह भी मौजूद थे। संचालन संजय राज ने किया। इस दौरान देशभक्ति से ओत-प्रोत गीतों की प्रस्तुति करणदीप राय और संजय राज ने पेश किया। आयोजन में एसीएस श्री विश्वनाथ, आरपीएफ के सहायक कमांडेंट, स्टेशन मास्टर उपेंद्र कुमार, टीआई रंजीत कुमार, नितीन व्यास, सीटीआई धर्मेंद्र कुमार, राजेश कुमार, एएसएम संतोष कुमार के अलावा तख्तश्री कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह, कनीय उपाध्यक्ष गुरुविंदर सिंह, सदस्य राजा सिंह, दलजीत सिंह, हरजीत सिंह, दिलीप सिंह पटेल, महाकांत राय, बलराम सिंह, मनोहर सिंह बग्गा, अमरजीत सिंह, पूर्व डिप्टी मेयर संतोष मेहता, मिथिलेश जायसवाल, सरदार प्रेम सिंह, पूर्व पार्षद स्मिता रानी, अवधेश सिन्हा, धर्मेंद्र प्रसाद मुन्ना, सरोज जायसवाल, अनिता पांडेय, भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर मिश्रा, रामनाथ पटवा, नवल किशोर सिन्हा, रौशन मेहता, ललित अग्रवाल, डा विनोद अवस्थी, अनंत अरोड़ा, अंजनी पटेल।

जल्द हो बिहार फार्मासिस्ट संवर्ग नियमावली अनुरूप डिप्लोमा फार्मासिस्ट की नियुक्ति

17 वर्ष बाद 1539 पद घोषित कर लिया गया वापस

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

डिप्लोमा फार्मासिस्ट ऑर्गनाइजेशन, छात्र संघ, बिहार के द्वारा राजकीय फामेर्सी छात्रावास में छात्र संघ के अध्यक्ष अरविंद कुमार चौधरी की अध्यक्षता में बैठक हुई। इसमें संघ के अनेक जिला के पदाधिकारी एवं फार्मासिस्ट शामिल हुए। बैठक में तीन महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। इसमें अनेक वर्षों के प्रयास एवं पटना उच्च न्यायालय के आदेशानुसार राज्य सरकार के द्वारा 17 वर्षों के बाद 1539 पदों पर डिप्लोमा फार्मासिस्टों की नियुक्ति के लिए विज्ञापन प्रकाशित कर प्रक्रिया प्रारंभ की गई। आवेदन की प्रक्रिया पूरा होने के बाद स्वास्थ्य विभाग के द्वारा अचानक नियुक्ति की प्रक्रिया स्थगित करने और नई नियमावली, जो अभी बनी ही नहीं है, उसके तहत परीक्षा के माध्यम से करवाने के लिए पत्र जारी की गई है। ज्ञातव्य हो कि 1539 पद पर फार्मासिस्टों की नियुक्ति के लिए अधियाचना सामान्य प्रशासन विभाग के द्वारा 30 सितंबर, 20 को ही बिहार तकनीकी सेवा आयोग को बिहार फार्मासिस्ट संवर्ग नियमावली 2014, 2017 एवं 2019 की प्रति संलग्न कर विज्ञापन प्रकाशित करने के लिए भेज दी गई थी। लेकिन आयोग अधियाचना प्राप्त होने के लगभग दो वर्ष बाद 2023 में विज्ञापन प्रकाशित की और अब उस पर भी रोक लगा दी है। संघ बिहार इसका विरोध करता है और राज्य सरकार से आग्रह करता है कि आदेश वापस लेते हुए 1539 पदों पर जल्द से जल्द बिहार फार्मासिस्ट संवर्ग नियमावली के अनुरूप डिप्लोमा फार्मासिस्टों की नियुक्ति की प्रक्रिया पूर्ण करें, जिससे राज्य के सरकारी संस्थानों एवं अस्पतालों में फामेर्सी एक्ट 1948 का पालन हो सके और राज्य के अस्पतालों में मरीजों को सही दवा एवं परामर्श डिप्लोमा फार्मासिस्टों से मिल सके। यदि सरकार हमारी मांगों पर विचार नहीं करती है, तो मजबूरीवश सभी डिप्लोमा इन फामेर्सी योग्यताधारी छात्र आंदोलन करेंगे या पुनः पटना उच्च न्यायालय की शरण में जाएंगे। डिप्लोमा फार्मासिस्ट ऑर्गनाइजेशन ने अपना वेबसाइट एवं एप्लीकेशन लांच किया है। अब सभी डिप्लोमा इन फामेर्सी योग्यताधारी फार्मासिस्ट एवं छात्र डिजिटल रूप से सदस्यता घर बैठे ले सकते हैं और अपनी समस्या एवं सुझाव संघ तक पहुंचा सकते हैं। 25 सितंबर को विश्व फार्मासिस्ट दिवस समारोह का आयोजन छात्र संघ नहीं कर रही है, क्योंकि पूर्व महामंत्री संत कुमार सिंह का निधन हो गया है।

24 तीर्थंकरों को अर्पित की गई धूप, भगवान शीतलनाथ की पूजा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

जैन धर्मावलंबियों का पर्वराज दशलक्षण पर छठे दिन रविवार को उत्तम संयम धर्म को अंगीकार कर धूप दशमी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर हाजीगंज स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरारा मंदिर, कमलदह दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र, गुलजारबाग समेत यहां के सभी जैन मंदिरों में धूप-चंदन की भीनी खुबशू बिखरी। मीडिया प्रतिनिधि प्रवीण जैन ने बताया कि धूप-चंदन की सुगंध से जिनालय महक उठे। श्रद्धालुओं ने जिनालयों में पहुंच कर अग्नि में धूप खेवकर अपने कर्मों की निरजरा की। इस अवसर पर जैन श्रद्धालुओं ने हवन में सुगंधित धूप-चंदन खेव (अर्पण) कर आत्मकल्याण की प्रार्थना की।

दिगम्बर जैन मंदिर में धार्मिक अनुष्ठान की शुरूआत मंगलाचरण, जिनेन्द्र स्तुति, अभिषेक पाठ, महामंत्र णमोकार के उच्चारण के साथ हुआ। जैन श्रद्धालुओं ने प्रातः बेला भगवान का नित्य अभिषेक, चतुष्कोण कलशाभिषेक, शांतिधारा किया। पर्युषण पर्व के मौके पर चल रहे विशेष धार्मिक आराधना में मुख्य दशलक्षण धर्म पूजा, भगवान शीतलनाथ पूजा समेत चौबीसी पूजा, पंच परमेष्ठी पूजा, नंदीश्वर द्वीप पूजा, पंचमेरु पूजा सहित जिनेन्द्र प्रभु के समक्ष 24 तीर्थंकरों को महाअर्घ्य समर्पित किया। इस माया रूपी संसार में मन को स्थिर रखने के लिए कामनाओं पर नियंत्रण और इन्द्रियों पर यही नियंत्रण संयम धर्म है। इसके पूर्व बाड़े की गली स्थित जैन श्वेताम्बर मंदिर से पर्युषण पर्व की समाप्ति पर वरघोड़ा शोभायात्रा निकाला गया। आयोजन में सचिव राजकुमार मालकस और प्रवक्ता ललित जैन, अमरनाथ जैन, भरत मेहता, अंजली जैन, उर्मिला जैन, सूरज नवलखा, दिलीप जैन, नवयुवक मंडल के राहुल जैन, गोलू जैन, अक्षय मेहता, सौरभ जैन, अमर जैन, अमन जैन, कावना जे मेहता, हेमंत जैन, राजेश जैन आदि शामिल थे। शोभायात्रा में रथ पर भगवान महावीर विराजित थे। आगे में इंद्र ध्वजा थी। इस दौरान धार्मिक आयोजन साध्वी प्रज्ञाश्री की देखरेख में हुई। शोभायात्रा अशोक राजपथ के मुख्य मार्ग होते चमडोरिया से खाजेकलां के पानीटंकी तक जाने के बाद वापस मंदिर लौटा।

एमपी विधुड़ी के खिलाफ माले का आक्रोश मार्च, पुतला फूंका

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भाजपा सांसद रमेश बिधुरी द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के सांसद दानिश अली को सदन में अआपत्तिजनक व असंसदीय शब्दों का प्रयोग कर अपमान किए जाने के विरुद्ध आक्रोशपूर्ण जुलूस निकाला गया। श्री गुरु गोविंद सिंह पथ के पीर अली मुफ्त स्वास्थ्य केंद्र से भाकपा माले की पटना साहिब कमेटी के तत्वावधान में निकाला गया और प्रधानमंत्री का पुतला दहन भगत सिंह चौक पर किया गया। माले नेताओं ने कहा कि मोदी सरकार जनता से अनेक वादा जैसे महंगाई कम करने, प्रतिवर्ष दो करोड़ रोजगार देने, महिला सुरक्षा, किसानों की आय दोगुना करने आदि का।लेकिन इसे पूरा करने में केंद्र की भाजपा सरकार असफल साबित हुई। जनता के इसी सवाल को सदन में उठाने पर सांसदों को आतंकवादी, उग्रवादी, नक्सली, खालिस्तानी, टुकड़े-टुकड़े गैंग, गद्दार जैसे गाली-गलौज धमकी दिया जाता है। सदन में भाजपाई सांसदों द्वारा मेज थपथपा कर समर्थन किया जाता है।

दानिश अली अल्पसंख्यक समुदाय से आने वाले सांसद के साथ आपत्तिजनक शब्दों के साथ धमकी देकर देश में सांप्रदायिकता फैला कर देश की एकता और अखंडता एवं लोकतंत्र को खत्म करने और नफरत फैलाने में अमादा है। कमेटी इसकी निंदा कर मांग करती है कि भाजपा सांसद रमेश बिधुड़ी का लोकसभा की सदस्यता समाप्त की जाए। अल्पसंख्यकों को डराने-धमकाने और आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग करने पर विधिसम्मत कार्रवाई की जाए। महिला आरक्षण को 2024 के लोकसभा चुनाव से लागू किया जाए।

कार्यक्रम में सचिव अनय मेहता, नसीम अंसारी, शंभूनाथ मेहता, राखी मेहता, राजेश सिंह कुशवाहा, मुजफ्फर आलम, महेश चंद्रवंशी, ललन यादव, रामनारायण सिंह, डॉ अलीम अख्तर, आत्माराम, श्रवण सिंहा, रामबाबू, मेहंदी हसन, मुनारिक चौधरी, इदरीस खां, महेंद्र यादव, उमा यादव, हसनैन, मोहित राज, रघुनाथ प्रसाद, बजीउद्दीन, मनोहर लाल, सुबोध कुमार, लालबाबू रविदास, देवेन्द्र सिंह, सुजीत पासवान आदि ने भाग लिया।

आज सीएम के समक्ष प्रदर्शन करेंगे नगर निगम के हड़ताली कर्मचारी

पटना, प्रात :किरण संवाददाता

नगर निगम कर्मियों का अनिश्चितकालीन हड़ताल रविवार को चौथे दिन भी जारी रहा। हड़ताल अवधि में निगमकर्मियों पर निगम प्रशासन द्वारा दमनात्मक कार्रवाई आग में घी का काम कर रहा है।हड़ताली कर्मियों में आक्रोश बढ़ता ही जा रहा है। प्रशासन के द्वारा दमन और भयादोहन से भी कर्मियों के हौसले में कोई कमी नहीं आयी, बल्कि आंदोलन और जोर पकड़ता जा रहा है। सोमवार को निगमकर्मी मुख्यमंत्री के समक्ष प्रदर्शन करेंगे।निगमकर्मी मौर्य लोक परिसर, नगर निगम मुख्यालय में जुटेंगे। अपराह्न तीन बजे मुख्यमंत्री के समक्ष प्रदर्शन के लिए प्रस्थान करेंगे।

इसकी सफलता के लिए संचालन समिति के सदस्यों ने सभी अंचल के कर्मियों के बीच घर-घर जाकर सम्पर्क किया। इसकी मॉनिटरिंग पाटलीपुत्र अंचल में अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश सिंह, नूतन राजधानी अंचल में कार्यकारी अध्यक्ष रामयत्न प्रसाद, जलापूर्ति शाखा में सह संयोजक मंगल पासवान, कंकड़बाग अंचल में संयोजक नन्दकिशोर दास, बांकीपुर अंचल में प्रवक्ता जितेन्द्र कुमार, अजीमाबाद और पटना सिटी अंचल में कोषाध्यक्ष नीरज वर्मा और धर्मवीर कुमार ने किया। जनसंपर्क करने वालों में संचालन समिति के सदस्य भीम राम, अरुण कुमार, दुर्गा गोंड, नितीश कुमार, देवेन्द्र प्रसाद, चन्दन कुमार, संतोष कुमार, प्रदीप राम, मुकेश ठाकुर, रमेश राय, सुजीत पासवान, मोहन पासवान, रामदेव सिंह, केशो कुमार आदि शामिल थे।

भारतीय सूढी उत्थान संगठन की साप्ताहिक बैठक में लिए गए कई महत्वपूर्ण निर्णय

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। भारतीय सूढी उत्थान संगठन पटना बिहार रविवार को लड्डू अखाड़ा नयागांव संतोष कमेटी हॉल में बैठक की गई। जिसकी अध्यक्षता मोहित जी के द्वारा किया गया। उन्होंने समाज को मेडिकल से जुड़े सुविधा देने के लिए हर संभव प्रयास करने की बात कही ताकि गरीबों का ससमय पर इलाज हो सके। अध्यक्ष विनोद शौण्डिक ने समाज के लोगों से अपील करते हुए कहा की निम्न वर्ग के लोगों को एक साथ लाकर उन्हें आर्थिक तथा राजनीतिक शोषण से बचाने का काम करना होगा। शैक्षिक विकास आर्थिक विकास आवास समस्या सामाजिक न्याय राजनीतिक न्याय के लिए समाज के प्रति लाभ दिलाने के हर संभव प्रयास करना होगा। बिहार सरकार से किस प्रकार से लाभ मिल सके ताकि हमारे समाज का उद्धार हो सके उसके लिए धुरी पर काम करना होगा। हमारे समाज को जिन लोगों को वृदा पेंशन , विधवा पेंशन, राशन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र बनाया जाएगा जिससे समाज के निम्न वर्गों को कहीं जाना नहीं पड़े वैसे व्यवस्था करना होगा। साथ ही हमारे समाज को एकजुट होकर अति पिछड़ा वर्ग में लाने के लिए संगठन को मजबूत कर बिहार सरकार से मांग करना होगा। क्योंकि सरकार की कूटनीति के कारण हमारे समाज को बहुत सी सारी सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। कोषाध्यक्ष महेंद्र प्रसाद ने कहा धन की कमी नहीं होने देंगे और समाज के प्रति हर संभव प्रयास किया जाएगा जिस समाज का विकास हो सके और बल मिल सके। हमारे समाज के शिक्षक राजकिशोर ने भी शिक्षा पर जोर देकर कहा हमारे समाज और अशिक्षित नहीं रहेगा।

एक सप्ताह में अजीमाबाद अंचल ईओ पर कार्रवाई वर्ना हल्ला बोल आंदोलन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना नगर निगम के अजीमाबाद अंचल के कार्यपालक पदाधिकारी के द्वारा मनमानी एवं सरकारी योजना (कबीर अंत्येष्टि योजना) सहित अन्य योजना का क्रियान्वित नहीं किए जाने एवं हड़ताल के कारण डेंगू, टायफाइड आदि संक्रामक बीमारियों के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए महागठबंधन की महत्वपूर्ण बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व प्रत्याशी मोहम्मद परवेज अहमद तथा संचालन राजद के पूर्व प्रदेश महासचिव सह पूर्व पार्षद बलराम चौधरी ने किया।

बैठक में अध्यक्षीय भाषण करते हुए परवेज अहमद ने कहा कि ऐसे पदाधिकारी, जो गरीब की योजना के साथ अनदेखी कर रहे हैं, वह सरकार विरोधी हैं। ऐसे पदाधिकारी को यथाशीघ्र बर्खास्त किया जाए।

बलराम चौधरी ने मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री से मांग की है कि ऐसे असंवेदनशील कार्यपालक पदाधिकारी को यथाशीघ्र बर्खास्त कर 75 वार्डों में कबीर अंत्येष्टि योजना की राशि यथाशीघ्र उपलब्ध कराई जाए। बैठक में राजद नेता मो जावेद, सीपीआई नेता देवरतन प्रसाद, रजनीश राय, पेंशनर एसोसिएशन के अध्यक्ष अमोद कुमार, शत्रुघ्न यादव, शंभू शरण प्रसाद, प्रमोद कुमार सिन्हा, एजाजुद्दीन उर्फ सानू, शाहीन अनवर, शब्बीर आलम, देवेंद्र राय, भुलेटन महतो श, मो शेरू, रमेश कुमार, अमन कुमार आदि ने कहा कि सरकार गरीबों के लिए योजना बनाती है तथा ऐसे भ्रष्ट पदाधिकारी योजना को लागू कराने में दिलचस्पी नहीं दिखाते हैं, जो निंदनीय है। नेताओं ने सरकार से सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि तीन हजार प्रति माह करने की मांग के साथ अजीमाबाद अंचल के कार्यपालक पदाधिकारी को बर्खास्त करने की मांग की। महागठबंधन का प्रतिनिधिमंडल उपमुख्यमंत्री, समाज कल्याण मंत्री, प्रधान सचिव समाज कल्याण विभाग एवं सिटी अनुमंडल पदाधिकारी से मिलकर ज्ञापन सौंपेगा। नेताओं ने कहा कि उपरोक्त मांगों का क्रियान्वयन एक सप्ताह में नहीं किया गया, तो महागठबंधन के नगर निगम अजीमाबाद अंचल का घेराव कर हल्ला बोल आंदोलन करेगा।

केन्द्रीकृत किचेन रद्द करने और मानदेय वृद्धि को लेकर बैठक संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

फतुहा। शहर के महारानी चौक स्थित भाकपा-माले कार्यालय में रविवार को बिहार राज्य विद्यालय रसोईया संघ, ऐक्टू फतुहा इकाई की बैठक सोना देवी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए संघ की महासचिव सरोज चौबे ने कहा कि सरकार विद्यालय में खाना बनाने की बजाय केन्द्रीकृत रसोई में खाना बनाने का प्रस्ताव लेकर आ रही है लेकिन रसोइयों को महज 1650 रूपए मिलते हैं वह भी महज 10 महीने का। जबकि उनके ऊपर काम का बोझ बढ़ता जा रहा है। उनके साथ सम्मान जनक व्यवहार भी नहीं किया जाता है। भाकपा -माले प्रखण्ड सचिव शैलेन्द्र यादव ने कहा कि सरकार ने अन्य मानदेय कर्मियों का मानदेय बढ़ाया लेकिन विद्यालय रसोइयों को छोड़ दिया। जिससे रसोइयों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। बैठक को संबोधित करते हुए संघ की जिला सचिव सोना देवी ने कहा कि सरकार यदि मानदेय नहीं बढ़ाएगी तो आन्दोलन तेज किया जाएगा। बैठक में रिंकू देवी, चानो देवी, लीलावती देवी, शांति देवी, सावित्री देवी, संजू देवी, पूनम देवी, बबिता देवी, लक्ष्मी देवी, गायत्री देवी, शीला देवी, पाकीजा खातून सहित दर्जनों रसोइया मौजूद थी। बैठक के अंत में संकल्प लिया गया कि यदि मांगें नहीं मानी गई तो 10 अक्टूबर को प्रखंड मुख्यालय पर प्रदर्शन किया जाएगा। रसोइयों ने आगे हड़ताल करने का भी निर्णय लिया गया।

शिया समुदाय ने निकाला जुलूसे अमारी व चुप ताजिया

प्रात : किरण संवाददाता

पटना सिटी। हजरत इमाम ए हुसैन और उनके 72 अंसारों की शहादत पर शिया सुमदाय की ओर जुलूसे अमारी निकाला गया। अंजुमने पंजेतनी के आयोजन में रविवार को चोआ लाल लेन स्थित याहिया मंजिल से निकला यह जुलूस नौजर कटरा इमामबाड़ा पहुंच कर समाप्त हुआ। यहां पर तकरीर हुआ। इसमें ईरान से आए मौलाना जमीर अब्बास जाफरी, मौलाना कमाल अब्बास रिजवी छोलस, झांसी से आए मौलाना नज्फ आबदी, लखनऊ से मौलाना मिसम जैदी, मुफ्फरनगर से आए मौलाना सैयद नजफ अली, मौलना सज्जाद हुसैन रिजवी, मौलाना सैयद मुराद रजा और गुलाम मोहिसन जाफरी साहिब ने तकरीर किया। मुसा अली हाशमी ने सलाम पढ़ा, तो नखावत सैयद डॉ शमीम अजीमाबादी ने पेश की। जुलूस में अंजुमन पंतेजनी के अध्यक्ष तनवीरूल हसन तन्नू, सचिव सैयद अली इमाम, जुलूस के संयोजक जावेद हुसैन, सचिव तौकिद हैदर, इस्तुजा हुसैन मुन्ना आदि ने नौहाखानी की। आयोजन में सैयद जिया उर्फ पन्ना, डॉ सिकंदर अली, शाह सरबर इमाम, शिया वक्फ बोर्ड के चेयरमैन अफजल अब्बास, जावेद अहमद बबलू, टीम सेवा के अध्यक्ष सैयद हसन अली आदि समेत अनेक अंजुमन के लोग शामिल हुए। अंजुमने हुसैनिया के द्वारा चुप ताजिया का जुलूस बावली इमामबाड़ा से निकाला गया। यह अशोक राजपथ के मुख्य मार्ग से होते हुए नौजर कटरा इमामबाड़ा पहुंच कर समाप्त हुआ। यहां पर मजलिस का आयोजन हुआ। जुलूस में अध्यक्ष प्रो अकबर, प्रधान महासचिव मुश्ताक हुसैन, अशफाक अली, करामत हुसैन, नासिर अली और दूसरे अंजुमन से जुड़े लोग भी शामिल थे। जुलूस के नौजर कटरा इमामबाड़ा पहुचंने पर अलविदा की नौहा अंजुमन के लोगों ने पढ़ी।अंजुमने अब्बासिया की ओर से अलविदाई मजलिस का आयोजन कर्नल साहब के इमामाबाड़ा नौजर कटरा में हुआ। इसमें तकरीर के बाद अंजुमन के लोगों ने अलविदा नौहा पढ़ा।

ट्रेन के आते ही ट्रैक, एफओबी व प्लेटफार्म पर उमड़ी भीड़

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। पटना-हावड़ा वंदे भारत ट्रेन के पटना से खुलकर पटना साहिब आने के दौरान जैसे ही पटना साहिब स्टेशन का प्लेटफार्म संख्या एक को छुआ, लोगों की भीड़ रेल ट्रैक, प्लेटफार्म संख्या एक और दो से लेकर फूट ओवरब्रिज पर उमड़ पड़ी। ट्रेन नया फूट ओवरब्रिज के पास आकर ठहराव ली। यहां पूर्व से मौजूद भाजपा के वरीय नेता और स्थानीय विधायक नंदकिशोर यादव, मेयर सीता साहू एवं हजारों की संख्या में मौजूद लोगों ने ट्रेन का स्वागत किया।

इसी ट्रेन से सांसद रविशंकर प्रसाद भी उतरे। इसके बाद सबों ने मिलकर ट्रेन के चालक दल के सदस्यों एवं अन्य का स्वागत किया। वंदे भारत ट्रेन पटना साहिब स्टेशन पर दोपहर 1.35 पर ठहराव ली। वहीं इस ट्रेन को सिग्नल मिलने और हरी झंडी दिखाए जाने के बाद भी आगे बढ़ाने के लिए लोग रास्ता देने के लिए तैयार नहीं थे। स्टेशन परिसर में मौजूद लोगों की भीड़ के हाथ में रहे मोबाइल से वीडियो बनाने, सेल्फी लेने और फोटो खींचने का लगातार प्रयास किया जा रहा था। भीड़ व उत्साह ऐसा की ट्रेन आगे बढ़ाने के लिए लगातार हॉर्न दे रही है, मगर लोग पटरी से हटने के लिए तैयार नहीं थे। बाद में आरपीएफ और जीआरपी के प्रयास से लोगों को हटाने का काम किया गया। इसके बाद सात मिनट का ठहराव लेने के बाद ट्रेन धीमी गति से आगे के लिए प्रस्थान किया। ट्रेन के आने की जैसे ही उद्घोषणा की गई, रेलवे स्कूल के छात्र-छात्राओं ने बैंड की धुन बजाना शुरू किया। पूरा माहौल स्वागतमय बना हुआ था। इस कार्यक्रम कीसफलता का श्रेय सीनियर डीडीएम संजय घोष, स्टेशन प्रबंधक उपेन्द्र कुमार, टीआई रंजीत कुमार, नितीन व्यास, सीआईटी धर्मेंद्र कुमार व राजेश कुमार एवं उनकी टीम को जाता है। वंदे भारत के पायलट के रूप में आगे महिला दल और पीछे पुरुष पायलट दल था।

प्रदेश, महिला व तरुण सभा के निर्वाचित पदा. का किया सम्मान

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। पटना महानगर केसरवानी वैश्य सभा की ओर से बिहार प्रदेश केसरवानी वैश्य सभा सह महिला सभा सह तरुण सभा के सत्र 2023-26 के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का सम्म

विभिन्न शिक्षण संस्थानों से जुड़े 300 से अधिक युवाओं ने ली जदयू की सदस्यता

- मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह के साथ युवाओं ने खिंचवाई तस्वीर
- प्रतिवर्ष दो करोड़ युवाओं को रोजगार देने का वादा जुमला साबित हुआ : उमेश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू मुख्यालय स्थित कपूरी सभागार में जदयू व्यावसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ तथा जदयू शिक्षा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित विशेष कार्यक्रम में बिहार के विभिन्न शिक्षण संस्थानों से जुड़े 300 से अधिक युवाओं ने जदयू की सदस्यता ली। इस खास मौके पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने विशेष रूप से उपस्थित होकर छात्र-छात्राओं को आशीर्वाद दिया। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि हमें इस बात की बेहद खुशी है कि इतनी बड़ी संख्या में युवा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विचारों एवं विकास कार्यों से प्रभावित होकर जदयू से जुड़ना चाहते हैं और नए बिहार के निर्माण में योगदान देना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि जिन युवाओं के कंधों पर देश का भविष्य टिका हुआ है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में वही युवा खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। 2014 में उन्होंने प्रतिवर्ष दो करोड़ युवाओं को रोजगार देने का वादा किया था, लेकिन करोड़ों युवा आज भी रोजगार की तलाश में भटकने को मजबूर हैं। महिला आरक्षण के संदर्भ में श्री कुशवाहा ने कहा कि मोदी सरकार का ये नया जुमला है। ये घोषणा धरातल पर कब उतरेगी, यह देखने की बात होगी। मोदी सरकार को महिला सशक्तिकरण की सीख श्री नीतीश कुमार से लेनी चाहिए। बिहार ने इस क्षेत्र में जो नजीर पेश की है, देश-दुनिया में उसका कोई मुकाबला नहीं है। विधानपार्षद सह कोषाध्यक्ष ललन सर्राफ ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार को उस ऊँचाई पर लेकर जाना चाहते हैं जहाँ से चाहकर भी कोई नीचे ना ला सके। उन्होंने बिहार को उसका पुराना गौरव लौटाया है। बिहार के युवाओं का ये सौभाग्य है कि वे ऐसे नेता के युग में हैं और उन्हें इनके नेतृत्व में काम करने का अवसर मिल रहा है। मुख्य प्रवक्ता नीरज कुमार ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी फर्जी राष्ट्रवाद की आड़ में देश में उन्माद फैलाने की कोशिश कर रही है। देश के युवाओं को इनसे सतर्क रहने की जरूरत है। अंग्रेजों से पाँच-पाँच बार माफी मांगने वालों को ह्यवीरह्ल कहकर महिमामंडित किया जा रहा है। हमारे राष्ट्रध्वज तिरंगा को अशुभ कहने वाले आरएसएस के लोग आज राष्ट्रवादी होने का ढोंग कर रहे हैं। स्वतंत्रता के आंदोलन में इनलोगों का योगदान शून्य है। शिक्षा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अमरदीप ने अपने संबोधन में बिहार में पिछले 18 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में हुए अभूतपूर्व कार्यों की चर्चा की। व्यावसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष धनजी प्रसाद ने कहा कि पार्टी द्वारा चलाए जा रहे ह्यह्यहाटे बाजार-नीतीशे कुमार अभियान को हमें बिहार के हर हाट और बाजार तक पहुँचाना है। इस अवसर पर अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य मुकेश जैन, प्रदेश महासचिव अमर कुमार सिंह, प्रदेश सचिव गणेश कानू, वरिष्ठ नेत्री बेबी मंडलआदि उपस्थित रहे। जिन युवाओं एवं छात्र-छात्राओं ने पार्टी की सदस्यता ली उनका नेतृत्व जदयू व्यावसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ की वरिष्ठ नेत्री बेबी मंडल ने किया।

उपेक्षित समाज के प्रतिभा को पुरस्कृत करना कांग्रेस की परंपरा : अखिलेश

- सदाकत आश्रम में स्व भोला पासवान शास्त्री के जयंती समारोह का हुआ आयोजन

पटना। जो लोग यह समझते हैं कि गरीबी और उपेक्षा से प्रतिभा कुंठित होती है उन्हें बिहार के प्रथम दलित मुख्यमंत्री स्व भोला पासवान शास्त्री के जीवन को आईना बनाकर अपनी सोंच को दुरूस्त करना चाहिए। ये बातें बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री स्व भोला पासवान शास्त्री को याद करते हुए अपने संदेश में कही। रविवार को कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में बिहार के प्रथम दलित मुख्यमंत्री स्व भोला पासवान शास्त्री का जयंती समारोह का आयोजन धूमधाम से किया गया। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह अस्वस्थता के कारण इसमें भाग नहीं ले पाये। बिहार के पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता कृपानाथ पाठक ने प्रदेश अध्यक्ष का प्रतिनिधित्व किया। डा सिंह ने अपने संदेश में कहा कि उपेक्षित समाज के प्रतिभा को पुरस्कृत करना कांग्रेस की परंपरा रही है। यही कारण है कि गरीब और दलित समुदाय से ताल्लुक रखने के वावजूद भोला बाबू तीन बार 1968 से 1972 के बीच बिहार के मुख्यमंत्री बने। इससे पहले वे बिहार में मंत्री भी रहे और 1973 मइंन्दिरा गांधी ने उन्हें अपने केन्द्रीय मंत्रीमंडल में भी शामिल किया। सबकुछ होने के वावजूद जो चीज भोला बाबू को राजनैतिज्ञों की जमात से अलग करती है वह है उनकी सादगी और जिन्दगी जीने की सहजता। मुख्यमंत्री रहते हुए भी वे अक्सर अपनी बैठक पेड़ के नीचे किया करते थे और वहीं खुरदुरे जमीन पर कम्बल बिछाकर बैठ जाया करते थे। इस अवसर पर कृपानाथ पाठक ने भोला पासवान शास्त्री के मुख्यमंत्रीत्वकाल को याद करते हुए कहा कि मैंने अपने जीवनकाल में ऐसा ईमानदार और सुलभ उपलब्ध मुख्यमंत्री नहीं देखा। विधान परिषद में कांग्रेस दल के नेता डा0 मदन मोहन झा ने भी भोला बाबू को याद करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित की।

जयंती समारोह का आयोजन पटना महानगर जिला युवा कांग्रेस के अध्यक्ष राहुल पासवान की अध्यक्षता में किया गया। मंच संचालन उमेश कुमार राम ने किया। इस अवसर पर विधायक प्रतिमा कुमारी दास, सुश्री पूनम पासवान, लाल बाबू लाल, गरीब दास, ब्रजेश पाण्डेय, प्रवीण सिंह कुशवाहा, विनोद शर्मा, रीता सिंह, राजेश राठौड़, आलोक हर्ष आदि नेता मुख्य रूप से उपस्थित थे।

केंद्र सरकार ने 9 वर्षों में किया रेलवे का कायाकल्प : मंगल पांडेय

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 9 नए वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई। मैं उनके इस प्रयास पर आभार प्रकट करता हूं और केंद्र सरकार को अपने शासनकाल में रेलवे के संपूर्ण विकास के लिए बधाई देता हूं। ये ट्रेनें 11 राज्यों के धार्मिक और पर्यटन स्थलों को आपस में जोड़ेंगी, जिनमें राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, पश्चिमी बंगाल, केरल, ओडिशा, झारखंड और गुजरात शामिल हैं। आज देश में कनेक्टिविटी के विस्तार का यह अभूतपूर्व अवसर है। इंफ्रास्ट्रक्चर विकास की यह स्पीड और स्केल 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं को पूरा कर रही है। यही तो नए भारत की प्रेरणा है। आज एक साथ 9 वंदे भारत ट्रेन का शुरूआत होना भी इसी का उदाहरण है। श्री पांडेय ने कहा कि जिन जगहों पर वंदे भारत ट्रेन पहुंच रही हैं,वहां पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है। वहां रोजगार के अवसर भी पैदा हो रहे हैं। आज देश के हर व्यक्ति को नए भारत की उपलब्धियों पर गर्व है। पीएम मोदी की महिला सशक्तिरण की नीति के विजन को दुनिया ने सराहा है। आज कई रेलवे स्टेशनों का संचालन भी महिला कर्मचारियों के द्वारा की जा रही है। पहले भारतीय रेलवे को आधुनिक बनाने पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था। मगर मौजूदा केंद्र की मोदी सरकार रेलवे की कायापलट करने की दिशा में कार्य कर रही है। श्री पांडेय ने कहा कि आज मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी पर जोर दिया जा रहा है। ये वंदे भारत ट्रेनें इसी भावना का एक प्रतिबिंब हैं। रेल यात्रियों की सुविधा के लिए फुटओवर ब्रिज और एस्केलेटर का निर्माण किया जा रहा है। कुछ दिन पहले ही 500 से ज्यादा बड़े रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास शुरू हुआ। रेलवे ने अब स्टेशनों का स्थापना वर्ष मनाना शुरू किया है। तमिलनाडु के कोयम्बटूर और मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल रेलवे स्टेशन से इस पहल की शुरूआत हुई है। इस प्रकार श्री नरेंद्र मोदी की सरकार में पिछले 9 सालों में रेलवे का कायाकल्प हुआ है।

चिराग ने प्रधानमंत्री के प्रति जताया आभार

पटना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा रविवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देश में 9 वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किये जाने का लोजपा रा ने स्वागत किया है। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार जताया और उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के द्वारा आज बिहार को दूसरी वंदे भारत ट्रेन का सौगात मिला है । कुछ दिनों पूर्व बिहार को पहले वंदे भारत ट्रेन का सौगात मिला था जो पटना से रांची तक परिचालन होती है और यह दूसरा वंदे भारत ट्रेन बिहार को मिला जो पटना से हावड़ा तक परिचालन होगा। बिहार की जनता में दूसरी वंदे भारत की ट्रेन चलाई जाने को लेकर काफी खुशी का माहौल है। बिहार की जनता इसके लिए प्रधानमंत्री को शुभकामना प्रेषित कर रहा है। आगे श्री चिराग ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत विकसित देश बनने की ओर अग्रसर है। इस आशय की जानकारी पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन पासवान ने दिया।

हड़ताल पर गए मुखिया की मांगों पर विचार हो : भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने राज्य सरकार से हड़ताल पर गये मुखिया पर कार्रवाई करने के बजाए उनसे वार्ता कर उनकी मांगों पर न्यायोचित विचार विचार करने की मांग की है। बिहार राज्य पंचायती राज अधिनियम-2006 के तहत अगर ग्राम पंचायत के मुखिया 60 दिनों तक अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं करते हैं तो 61वें दिन स्वतः उप मुखिया ग्राम पंचायत के मुखिया के कर्तव्यों का निर्वहन करने लगेगे। परंतु राज्य सरकार ने हड़ताल पर गए मुखिया का अधिकार छिनने के उद्देश्य से इसे 60 दिन से घटाकर 30 दिन कर दिया है, यह उचित नहीं है। पंचायती राज अधिनियम में किये गए बदलाव राज्य सरकार तत्काल वापस ले।भाकपा राज्य सचिव ने बयान जारी कर कहा कि पूरे राज्य में मुखिया अपनी मांगों को लेकर आंदोलनरत है और 16 अगस्त से कार्य बहिष्कार किये हुए है, जिससे राज्य में विकास का कार्य ठप्प पड़ गया है। राज्य सरकार मुखिया महासंघ के प्रतिनिधियों से वार्ता कर हड़ताल को समाप्त कराये। भाकपा राज्य सचिव ने कहा 73वें संविधान संशोधन द्वारा ग्राम पंचायतों को 29 अधिकार दिए गए हैं। इन अधिकारों में राज्य सरकार ने कटौती कर दी है जिसके खिलाफ मुखिया महासंघ आंदोलनरत है। राज्य सरकार जिन अधिकारों में कटौती की है, उसे वापस ले और ग्राम पंचायत को दिये गये सभी 29 अधिकारों को बहाल करे। संविधान के 73वें संशोधन की 11वीं अनुसूची के द्वारा सरकार के 20 विभागों के 79 कार्य ग्राम पंचायतों को, 60 कार्य पंचायत समिति को और 61 कार्य जिला परिषद को सौंपे गए हैं, लेकिन यह अधिकार कागज पर हीं है। राज्य सरकार मुखिया महासंघ के सभी मांगों पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए न्यायोचित फैसला ले और 73वें संविधान संशोधन के तहत ग्राम पंचायतों को मिले अधिकारों को बहाल करें ताकि सही मायने में राष्ट्रपति महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज का सपना साकार हो सके।

लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण एवं श्रम संसाधन मंत्री सुनवाई कार्यक्रम मे होंगे शामिल

राजद कार्यालय में मंगलवार को कार्यकर्ताओं से होंगे रूबरू

पटना। उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के पहल पर राजद द्वारा चल रहे सुनवाई कार्यक्रम में 26 सितंबर मंगलवार को लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री ललित कुमार यादव एवं श्रम संसाधन मंत्री सुरेंद्र राम राजद कार्यालय में कार्यकताओं से मिलेंगे और सुनवाई करेगें। इस संबंध में जानकारी देते हुए प्रदेश राजद के प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि दोनों मंत्री से मिलने वालों को मंगलवार 26 सितम्बर 2023 को राजद कार्यालय में पूर्वाह्न 10 बजे से दोपहर 12 बजे के बीच आवेदक स्वयं उपस्थित होकर रजिस्ट्रेशन कराकर ही सुनवाई कार्यक्रम मे शामिल होंगे। जिनका रजिस्ट्रेशन होगा क्रमानुसार अपराह्न 1 बजे से अपराह्न 3 बजे तक मंत्री द्वय बारी-बारी से कार्यकताओं से मिलकर उनकी समस्याओं को सुनेगें और आवश्यक कार्रवाई करेगें। इन्होने बताया कि राजद कार्यालय में सुनवाई कार्यक्रम निरंतर चल रहा है, और इसमें लोगों की समस्याओं की सुनवाई और कार्रवाई की जा रही है। एजाज ने आगे बताया कि कार्यकताओं को मंत्रीगण से मिलकर अपने-अपने क्षेत्र से जुड़े जनसमस्याओं अथवा शिकायतों से उन्हें अवगत कराने के लिए आवश्यक संलग्नों के साथ लिखित में आवेदन देना होता है, उसी के अनुसार सुनवाई के बाद कार्रवाई की जाती है।

हिंदू-मुस्लिम विवाद खड़ा करवाने की फिराक में भाजपा : राजीव

बोलें- इंडिया गठबंधन को मिल रहे जनसमर्थन से केन्द्र सरकार घबराई

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा सांसद रमेश विधूड़ी के बयान की निंदा करते हुए जदयू के राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि इंडिया गठबंधन को मिल रहे जनसमर्थन से घबरायी भाजपा अब हिंदू-मुस्लिम विवाद खड़ा करवाने की फिराक में है। इन्हें पता है कि काम के नाम पर इन्हें वोट नहीं मिलने वाले इसीलिए यह सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का अपना आखरी हथियार निकालने पर विवश हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि रमेश विधूड़ी ने बसपा सांसद के खिलाफ लोकसभा में जो ओछी टिप्पणी की है, वह भाजपा की सोची समझी प्लानिंग का हिस्सा है। गौर करें तो अभी तक न तो प्रधानमंत्री मोदी ने इसकी निंदा की है और न ही गृहमंत्री अमित शाह या इनके अध्यक्ष जेपी नड्डा ने विधूड़ी की आलोचना की है। छोटी-छोटी बातों पर ट्वीट करने वाले इनके नेताओं की यह चुप्पी यह दशार्ती है कि भरी संसद में एक मुस्लिम नेता के खिलाफ विधूड़ी के जहरीले बोल संयोग नहीं बल्कि भाजपा का सोचा समझा प्रयोग है। जदयू महासचिव ने कहा कि दरअसल समाज को आपस में लड़वा कर वोटों की फसल काटना शुरूआत से ही भाजपा की नीति रही है। चाहे गुजरात हो या उत्तरप्रदेश या केंद्र की राजनीति हर जगह यह जाति-धर्म के नाम पर ध्रुवीकरण कर लोगों को एक दूसरे का दुश्मन बना देते हैं। जनता आपस में लड़ती रहती है और इनके नेता सत्ता का सुख भोगते रहते हैं। इनकी इसी रणनीति के कारण पहले मणिपुर में दो समुदाय एक दूसरे के खून के प्यासे बने और अब हरियाणा में भी यही घटनाक्रम दोहराया जा रहा है।जदयू प्रवक्ता ने कहा कि हकीकत में पिछले नौ वर्षों से बहुसंख्यक साम्प्रदायिकता के नाम पर बेशर्मी से अल्पसंख्यकों को डराया धमकाया जा रहा है। उनमें दहशत और खौफ का माहौल पैदा कर दिया गया है। तथाकथित धर्म संसदों के जरिये मीडिया की मौजूदगी में खुलेआम अल्पसंख्यकों के सार्वजानिक बहिष्कार किये जाने और उनके नरसंहार की धमकियां दी जा रहीं हैं। संविधान और कानून व्यवस्था की लगातार धज्जियां उड़ाई जा रही है। वहीं हेट स्पीच देने के मुकदमें तक दर्ज नहीं किये जाते। उन्होंने कहा कि यह सारे मामले दिखाते हैं कि भाजपा के लिए राष्ट्रवाद और देश की एकता व अखंडता की बातें सिर्फ जनता को भरमाने के हथियार हैं, हकीकत में इन मूल्यों पर इनका कौड़ी भर भी विश्वास नहीं है। अपना वोटबैंक बढ़ाने और सत्ता हासिल करने के लिए यह किसी भी हद को पार कर सकते हैं।

आगामी लोस चुनाव में सभी 40 सीटों पर एनडीए की होगी जीत : कुशवाहा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय लोक जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेन्द्र कुशवाहा रविवार को पटना में रालोजद व्यावसायिक प्रकोष्ठ के प्रदेश पदाधिकारियों एवं जिलाध्यक्षो की एक संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार की जनता 90 के दशक के राजद शासन काल के भयावह मंजर को याद कर आज भी सिहर जाती है। कोई भी व्यापारी बिहार आने में डरता था। राष्ट्रीय लोक जनता दल ने यह संकल्प लिया है कि बिहार को फिर से उस भयानक दौर में जाने नहीं देना है। श्री कुशवाहा ने कहा कि एनडीए के सहयोगी दल के रूप में हम भारतीय जनता पार्टी के साथ हैं परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि हमारी भाजपा की हर विचार धारा अथवा हमारी हर विचारधारा से भाजपा की सहमती हो परन्तु एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के तहत हम एनडीए के एक मजबूत सहयोगी बनकर आगामी लोक सभा चुनाव में चालीसो लोक सभा सीट पर एनडीए की जीत सुनिश्चित करने के लिए पूरी ताकत लगानी होगी। श्री उपेन्द्र कुशवाहा ने महिला आरक्षण बिल के लोक सभा में पारित होने का स्वागत करते हुए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त किया है और कहा कि इस बिल में पिछड़ों और अति पिछड़ों का कोटा भी निर्धारित होना चाहिए। हमारी पार्टी हर स्तर पर इस मांग को मजबूती के साथ रखेगी। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व पूर्व विधायक रमेश कुशवाहा ने कहा कि राष्ट्रीय लोक जनता दल व्यापारी वर्ग सहित समाज के सभी कमजोर वर्गो के लिए मजबुती के साथ खड़ी रहेगी।

पटना नगर निगम में 100 नए ड्राइवर ने संभाली सफाई की कमान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना नगर निगम के सफाई कार्य की कमान रविवार को 100 नए ड्राइवर ने संभाली है। एजेंसी द्वारा पटना नगर निगम को नए ड्राइवर भी उपलब्ध करवाए गए हैं रविवार को मुख्यालय में ड्राइवर ने नगर आयुक्त के समक्ष अपनी उपस्थिति दर्ज की जहां उन्हें अपने दायित्वों का निर्वाह करने का नगर आयुक्त ने निर्देश दिया। गौर तलब है कि सफाई एवं कूड़ा उठाव के लिए पटना नगर निगम के पास पर्याप्त संसाधन उपलब्ध है। बड़ी गाड़ियों के लिए लगभग 100 नए ड्राइवर उपलब्ध करवाए गए है। रविवार को ही उन्हें नगर निगम की जिम्मेदारी भी दी गई।

राजधानी पटना में होगा मौर्य छात्रावास का निर्माण : अभय

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

अखिल भारतीय मौर्य शिक्षक सह शिक्षा मंच बिहार प्रदेश स्तर की कार्यकारिणी की बैठक से सम्मान समारोह का आयोजन राजधानी के पटेल सेवा संघ दरोगा राय पथ में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मंच के मुख्य संरक्षक पूर्व विधायक अभय कुशवाहा, मंच के प्रदेश अध्यक्ष महादेव प्रसाद, सचिव रामानंद प्रसाद, महासचिव कुमारी अंजली भारती, और पटना जिला अध्यक्ष शशि भूषण कुमार वर्मा के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में मंच के मुख्य संरक्षक पूर्व विधायक अभय कुशवाहा ने कहा कि आगामी वर्ष में पटना में भव्य समारोह का आयोजन किया जाएगा, इसमें बिहार के सभी जिलों से लगभग 10 हजार लोगों को विभिन्न सम्मान से सम्मानित किया जाएगा । उन्होंने यह भी कहा कि पटना जिला में एक भव्य मौर्य छात्रावास का निर्माण किया जाएगा जिसमें समाज के छात्र-छात्राओं को भविष्य निर्माण करने में मदद मिलेगी। इस मौके पर मंच के संरक्षक प्रोफेसर जयप्रकाश प्रसाद, नरेश कुमार सिंह ,प्रदेश अध्यक्ष महादेव प्रसाद, सचिव रामानंद प्रसाद, कोषाध्यक्ष विजय कुमार सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ विनोद कुमार, सुरेश प्रसाद वर्मा, प्रवक्ता सुभाष महतो, प्रोफेसर प्रताप नारायण सिंह, शैलेंद्र कुमार, नागेंद्र प्रसाद विजयकांत डॉक्टर प्रवीण पुष्कर, संजय कुमार सिंह,संध्या सिंह, कुमारी स्नेह लता ने अपने-अपने विचार व्यक्त किया मंच का संचालन सचिन रामानंद प्रसाद और अध्यक्षता पटना जिला अध्यक्ष शशि भूषण कुमार वर्मा ने किया।

नगर निगम का दावा : सेवाओं पर नहीं है हड़ताल का कोई असर

सुचारू रूप से किए जा रहे हैं सफाई के कार्य

पटना। पटना नगर निगम ने दावा किया हे कि कर्मचारी संघ के हड़ताल के बावजूद सुचारू रूप से सफाई के कार्य किए जा रहे हैं। साथ ही बयान जारी कर बताया गया है कि कर्मचारी संघ हड़ताल में लगातार हिंसा के लिए कर्मियों को प्रेरित कर रही है। हड़ताल एवं मांग की आड़ में सफाई कार्य में लगे कर्मियों को मारा पीटा और धमकाया जा रहा है। इसके साथ ही संपत्ति को नुकसान भी पहुंचा जा रहा है। बीते गुरुवार से कर्मियों द्वारा हड़ताल का आवाहन किया गया था और उसी दिन से लगातार नगर निगम की कर्मियों पर हमले भी किया जा रहे हैं। हड़ताली कर्मियों को बहला फुसलाकर हिंसक कार्य करवाने एवं अपराधिक घटनाओं को अंजाम देने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

हड़ताल का निगम की सेवाओं पर नहीं पड़ा है प्रभाव : हड़ताल के दौरान भी पटना नगर निगम की सेवाएं आम जनों तक सुचारू रूप से पहुंचने के लिए प्रतिदिन निगम कर्मी जुटे रहे है। रविवार को लगभग 600 सफाई वाहन निकले गए। डोर टू डोर वाहनों द्वारा कूड़ा उठाव, सड़कों की सफाई एवं बरसात के दौरान जल निकासी की व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रही है। इसके साथ ही फॉगिंग एवं एंटी लार्वा के लिए भी प्रतिदिन टीमों को वार्ड में भेजा जा रहा है जिससे बरसात के दौरान डेंगू एवं अन्य बीमारियों पर नियंत्रण रखा जा सके।

गुरुवार से अब तक हो चुकी है कई घटनाएं : प्रतिबंधित क्षेत्र होने के बाद भी हड़तालों द्वारा लगातार मौर्य लोक परिसर में धरना प्रदर्शन, नारेबाजी एवं हंगामा किया जा रहा है। आउटसोर्सिंग एजेंसी के कर्मियों द्वारा पहले दिन ड्राइवर को कार्य न करने के लिए वर्ग लाया गया जिसके परिणाम स्वरूप 25 ड्राइवर पर पटना नगर निगम द्वारा कार्रवाई की गई। पटना नगर निगम के कर्मियों को जीपीओ गोलंबर के पास कार्य करने से रोका गया एवं मारपीट की गई।सीसीटीवी कैमरे से हड़तालियों की पहचान भी की गई जिसके बाद शिकायत दर्ज करवाई गई। नूतन राजधानी के वार्ड संख्या 12 में सफाई कार्य में बाधा पहुँचाया गया, और सफाई कार्य में लगे कर्मियों के साथ मारपीट भी की गई। नूतन राजधानी के वार्ड संख्या 14 में भी सफाई कर्मियों के साथ मारपीट की गई। शनिवार की रात पाटलिपुत्र अंचल के कर्मियों को भी कार्य करने से रोका गया एवं गाड़ियों पर पत्थर बाजी की गई।

पटना नगर निगम द्वारा लगातार की जा रही है कार्रवाई : इन अपराधी के घटनाओं से नगर निगम के कार्य में लगे कर्मियों का मनोबल तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। परंतु नगर आयुक्त द्वारा लगातार ऐसी घटनाओं पर संज्ञान लेते हुए कार्रवाई की जा रही है। बता दें कि पटना स्मार्ट सिटी सीसीटीवी कैमरे से इनकी पहचान कर उनके खिलाफ विधि सम्मत कार्रवाई करने के लिए स्थानीय थाने में एफआईआर किया गया। एवं धारा 107 के तहत कार्रवाई की गई है।

निशुल्क मेगा हेल्थ कैंप में 500 से अधिक ने कराई जांच

पटना। मारवाड़ी हेल्थ सोसायटी राजेंद्र नगर रोड नंबर 7 के द्वारा एक निशुल्क मेगा हेल्थ कैंप का आयोजन सोसाइटी के अस्पताल प्रांगण में प्रातः 10 बजे से किया गया। स्वास्थ्य शिविर में जांच कराने हेतु सैकड़ों की संख्या में मरीज प्रातः आठ बजे से अपना नम्बर लगाने के लिए लाइन में लग गए थे। प्रातः दस बजे से डॉक्टरों ने मरीजो की जांच करना प्रारम्भ किया। इस जांच शिविर में 16 विशेषज्ञ चिकित्सको मरीजों की जांच की। इनमे प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ अभिषेक कुमार, डॉ शिल्पी अग्रवाल, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ विकास सिंह एवं डॉ दिनेश चंद्र, एलर्जी रोग विशेषज्ञ डॉ गौतम मोदी, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ चारु मोदी, पेट रोग विशेषज्ञ डॉ अमित बंका, श्वास रोग विशेषज्ञ डॉ अमिताभ बंका, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉक्टर श्रवण कुमार, मधुमेह रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अंगद कुमार, जनरल फिजिशियन डॉक्टर पूनम नंदन, दंत रोग विशेषज्ञ डॉक्टर हर्षिता बंका एवं डॉ कोमल कुमारी, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ अभिनव सहित कुल सोलह विशेषज्ञ चिकित्सको ने मरीजों को देखा। चिकित्सकों द्वारा लिखे गए सभी तरह के खून जाँच इत्यादि निःशुल्क सोसाइटी अस्पताल में किया गया तथा चिकित्सकों द्वारा लिखी गई सभी उपलब्ध दवाएँ भी मरीजों को निःशुल्क दिए गए।

सरस मेला में रविवार को आगंतुकों की उमड़ी भीड़

चार दिनों में 92 लाख रुपये के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

रविवार का दिन बिहार सरस मेला के लिए खास रहा। अपनी संस्कृति, शिल्प, लोक कला, परंपरा एवं देशी स्वाद से रूबरू होने के लिए लोग पधारें। मेला के पांचवे दिन रविवार को तीस हजार से ज्यादा लोग आये। ग्रामीण शिल्प ,संस्कृति एवं लोक कला और देशी व्यंजनों के प्रति लोगों को आकर्षण इस बात का प्रमाण है कि लोग अपने पूरानी संस्कृति एवं परंपरा की ओर लौट रहे हैं। लिहाजा बिहार सरस मेला अपने धरोहरों को बचाने एवं उन्हें पुनर्जीवित करने में बड़ा प्लेटफार्म और माध्यम बना है। बिहार सरस मेला बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन समिति (जीविका) द्वारा 20 सितम्बर से 27 सितम्बर 2023 तक आयोजित है। बिहार सरस मेला में बिहार समेत 22 राज्यों की स्वयं सहायता समूह से जुडी महिलायें अपने हुनर को लेकर 131 स्टॉल्स पर उपस्थित हैं। बिहार के सभी अड़तीस जिला से स्वयं सहायता समूह से जुडी ग्रामीण महिलाएं अपने-अपने क्षेत्र की संस्कृति, लोक कला, कलाकृतियाँ एवं देशी व्यंजनों को लेकर उपस्थित हैं। सिक्किम, झारखण्ड, उत्तरप्रदेश, आँध्रप्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ़, मेघालय, उत्तराखंड, पंजाब, असम, कर्नाटक, केरल, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, उड़िसा, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर एवं तमिलनाडु से के स्टॉल सुसज्जित हैं। जहाँ स्टॉल धारक के साथ ही आगंतुक भी एक दुसरे के शिल्प और स्वाद से परिचित हो रहे हैं। चार दिनों में लगभग 92 लाख रुपये के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री हुई है। बिहार सरस मेला के चौथे दिन 23 सितम्बर को साढ़े 35 लाख रुपये के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री हुई है। आयोजन के चौथे दिन लगभग 17 हजार 700 लोग आये। सरस मेला में सुसज्जित सभी स्टॉल पर उपलब्ध शिल्प, कलाकृतियाँ , लोक कला एवं देशी व्यंजनों की बड़े पैमाने पर खरीद-बिक्री हो रही है। कई स्टॉल ऐसे हैं जहाँ प्रतिदिन 40 से 50 हजार रुपये से ज्यादा के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री हो रही है। विभिन्न स्टॉल्स पर उपस्थित ग्रामीण परिवेश से बाहर निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने वाली जीविका दीदियाँ बिहार में महिला सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन की झलक प्रदर्शित कर रही हैं। उन्ही महिलाओं में से एक हैं सावित्री देवी। सावत्री देवी मधुबनी के झंझारपुर प्रखंड से आई हैं। सावित्री भगवती जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। सावित्री सिक्की से बने हुए चूड़ी, झुमका, स्टिक, रोटी डब्बा, पेन स्टैंड, टिशु बाक्स , मछली, कछुआ , कॉस्टल जैसे उत्पादों को प्रदर्शनी सह बिक्री कर रही हैं। सावित्री बताई हैं कि जीविका से जुड़ने के बाद उनके हुनर को बड़ा बाजार और पहचान मिली है । पहले उनका हुनर घर तक ही सिमित था लेकिन जीविका से जुड़ने के बाद सिक्की से बने शिल्प एवं कलाकृतियों को अंतरष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। इन्हें बनकर और बेचकर उन्हें मुनाफा हो रहा है। सरस मेला के अन्य आकर्षणों में जीविका दीदियों द्वारा संचालित दीदी की रसोई, जीविका शिल्पग्राम एवं जीविका मधु ग्राम का स्टॉल है। महिला विकास निगम और बिहार महिला उद्योग संघ के स्टॉल भी सुसज्जित हैं । बिहार जीविका द्वारा संचालित सतत जीविकोपार्जन योजना के स्टॉल से गरीबी उन्मूलन एवं स्वरोजगार के लिए किये जा रहे कार्य

संक्षिप्त खबरें

भाजपा कार्यकताओं ने सुनी पीएम की मन की बात

समस्तीपुर, कल्याणपुर। कल्याणपुर उत्तरी मंडल भाजपा के कार्यकताओं ने क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर शक्ति केंद्र पर पीएम नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम रेडियो और मोबाइल के सहारे सुना। जिसमें क्षेत्र के पुरुषोत्तमपुर, ध्रुवगामा, खरसंड, तीरा आदि शक्ति केंद्र पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें दर्जनों कार्यकताओं ने भाग लिया। उक्त जानकारी देते हुए मंडल अध्यक्ष तेज नारायण प्रसाद ने कहा कि पीएम के मन की बात कार्यक्रम में विभिन्न शक्ति केंद्रों पर काफी संख्या में कार्यकताओं ने भाग लिया। मौके पर राधेश्याम ठाकुर, रंजन चौधरी, कुमोद यादव, रामनाथ राम, रामचंद्र सिंह एवं विनोद सिंह सहित सभी कार्यकर्ता मौजूद थे।

जिसके हाथ में हसुआ, खुरपी वो उठा लिया अब कलम

समस्तीपुर जिले के बिथान प्रखंड क्षेत्र के 10 केन्द्रों पर रविवार को महादलित, दलित एवं अल्पसंख्यक अतिपिछड़ावर्ग अक्षर आंचल योजना अंतर्गत बुनियादी साक्षरता परीक्षा शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। मौसम प्रतिकूल रहने के बावजूद भी महिलाओं ने परीक्षा में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। परीक्षा में शामिल होने के लिए शिक्षा सेवकों एवं तालिमी मरकजों द्वारा महादलित- 1009 दलित- 351 एवं अल्पसंख्यक अतिपिछड़ावर्ग- 307 समुदाय के कुल 1720 नवसाक्षर महिलाओं की पंजीयन की गई। जिसमें कुल 1720 नवसाक्षर महिलाएं परीक्षा में शामिल हुई। जिसका अनुश्रवण बीईओ मनोज कुमार मिश्र एवं केआरपी देव कुमार ने किया। प्रखंड कंट्रोल रूम में बीआरपी सुरेंद्र प्रसाद यादव, उमाशंकर यादव, गुणानंद प्रसाद, कामेश्वर कालेलकर आदि थे।

सीएसपी संचालक के डिक्की से रुपए उड़ाए, प्राथमिकी दर्ज

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के पतैलिया हुंडाहा चौक से सीएसपी संचालक के डिक्की से चार लाख रुपए उड़ाए जाने की प्राथमिकी दर्ज की गई। दर्ज प्राथमिकी के माध्यम से पीड़ित पतैलिया वार्ड तीन निवासी दीपक कुमार ने बताया कि मैं पतैलिया हुंडाहा चौक पर एसबीआई का सीएसपी संचालन करता हूं। 20 सितंबर को होम शाखा विभूतिपुर अपने खाता से चार लाख रुपए निकासी कर बैग में रखा और गाड़ी की डिक्की में बैग सहित रखकर अपने सीएसपी केंद्र पहुंचा। सामने मोटरसाइकिल लगाकर बगल में पेशाब करने गया इसी बीच पल्सर बाइक सवार दो अपराधी आया। एक बाईक स्टार्ट रखा और दूसरा मेरे बाईक की डिक्की से रुपया से भरा बैग लेकर फरार हो गया। मेरे द्वारा शोर मचाने पर उपस्थित कुछ ग्राहक अपराधी का पीछा किया लेकिन भागने में सफल रहा। बैग में चार लाख रुपए, खाते का चेक बुक, पासबुक व सीएसपी से संबंधित कुछ कागजात भी था।

सेविका-सहायिका द्वारा जंतर-मंतर पर दिया जाएगा धरना

कल्याणपुर, समस्तीपुर। बिहार आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ के सभी सेविका एवं सहायिका दिल्ली में धरना प्रदर्शन हेतु एक बैठक रविवार को कल्याणपुर कलाकार भवन के परिसर में किया गया। जिसमें 4 अक्टूबर को भारत सरकार के समक्ष जंतर मंतर पर धरना प्रदर्शन का कार्यक्रम को लेकर चर्चा की गई। जिसकी अध्यक्षता करीषणा कुमारी ने किया। वहीं संचालन किरण कुमारी ने किया। कल्याणपुर की सभी सेविका एवं सहायिका दिनांक 3 अक्टूबर से 5 अक्टूबर तक केंद्र संचालन बंद रखेगी और दिल्ली जाएंगी। सेविका सहायिका मुख्य मांगों में आंगनबाड़ी सेविका सहायिका को सरकारी करण करने, सर्वोच्च न्यायालय के आदेश अनुसार ग्रेच्युटी लागू करने, नई शिक्षा नीति के तहत आंगनबाड़ी सेविका को नर्सरी शिक्षिका का दर्जा देने की मांग शामिल है। मौके पर आशा कुमारी, शोभा कुमारी, माला, नीलम कुमारी, अर्चना राज, संगीता कुमारी, अनिता कुमारी, वंदना कुमारी, मंजू कुमारी सहित सभी सेविका एवं सहायिका उपस्थित थी।

जननायक कपूरी चर्चा कार्यक्रम आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। गोह में गौतम बुद्ध नगर भवन में आयोजित जननायक कपूरी चर्चा कार्यक्रम की अध्यक्षता गोह के प्रखंड अध्यक्ष ओमप्रकाश एवं संचालन हसपुरा प्रखंड के प्रखंड अध्यक्ष अमरेश पटेल जी ने किया। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जहानाबाद के सांसद चंदेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी ने कहा के नीतीश कुमार के पद चिन्हों पर चलकर ही अत्यंत पिछड़ा वर्ग का भलाई होगा। विधान परिषद सदस्य गुलाम गौस ने कहा की महिलाओं के आरक्षण में पिछड़ा और ओबीसी के अलावा मुसलमान को भी आरक्षण मिलना चाहिए। मगध प्रमंडल के संगठन प्रभारी विद्यानंद विकल जी ने कहा की जननायक कपूरी ठाकुर के विचारों की विरासत की रक्षा करने और उसे बिस्तार देने की ईमानदार कोशिश श्री नीतीश कुमार ने की है। पूर्व विधायक अशोक कुमार सिंह ने कहा कि केंद्र के भाजपा सरकार अति पिछड़ों के प्रति राजनीतिक अपमान का व्यवहार रखती है इसीलिए जननायक कपूरी ठाकुर को अब तक भारत रत्न नहीं दिया। जननायक कपूरी चर्चा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए औरंगाबाद के पूर्व सांसद और नबीनगर के पूर्व विधायक वीरेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि जन नायक कपूरी ठाकुर का जन्म 24 जनवरी 1924 को ब्रिटिश शासन काल के दौरान समस्तीपुर के पितौंझिया गांव में हुआ था। इसे अब कपूरी ग्राम कहा जाता है। उनके पिता का नाम गोकुल ठाकुर व माता का नाम राम दुलारी देवी था। वे भारत के स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक एवं कुशल राजनीतिज्ञ थे। उन्हें बिहार के दूसरे उप मुख्यमंत्री और दो बार मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला। वह कुशल राजनीतिज्ञ थे। जिसके कारण ही वे बिहार के पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री बने। अपनी लोकप्रियता के कारण उन्हें जननायक की उपाधि मिली थी। वे सादा जीवन उच्च विचार की प्रति मूर्ति थे। उनका नाम महान समाजवादी नेताओं की सूची में आता है। जिन्होंने निजी और सार्वजनिक जीवन के आचरण के ऊंचे मानदंड स्थापित किया था। पूर्व सांसद ने कहा कि वे सरल और सरस हृदय के राजनेता माने जाते थे। सामाजिक रूप से पिछड़े किंतु सेवा भाव के महान लक्ष्य को चरितार्थ करती नाई जाति में जन्म लेने वाले इस महानायक ने राजनीति को भी जन सेवा की भावना के साथ जिया। उनकी सेवा भावना के कारण ही उन्हें जननायक कहा जाता था। वे सदा गरीबों के अधिकार के लिए लड़ते रहे। मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने गरीबों के लिए अनेकों काम किया। पूर्व सांसद ने कहा कि कपुरी ठाकुर अपमान का घूँट पीकर भी बदलाव की इबादत लिखी। कपूरी ठाकुर के मुख्यमंत्री रहते हुए ही बिहार अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए आरक्षण लागू करने वाला देश का पहला सुबा बना था। पूर्व सांसद ने कहा की अति पिछड़ा वर्ग के हित में मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा उनके सामाजिक राजनीतिक शैक्षणिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए उठाए गए कदम अत्यंत महत्वपूर्ण है। पंचायत चुनाव में आरक्षण लागू करने से सामाजिक बदलाव का नया अध्याय शुरू हुआ जिससे विकास मूलक समृद्ध समाज का मॉडल सामने आया और ग्रामीण इलाकों में तनाव और उग्रवाद की घटनाओं पर व्यायाम लगा कार्यक्रम में प्रदेश उपाध्यक्ष विश्वनाथ सिंह, पूर्व प्रमुख मुना चंद्रवंशी, अत्यंत पिछड़ा के वरिष्ठ नेता सीताराम दुखारी, अति पिछड़ा के जिला अध्यक्ष जितेंद्र चंद्रवंशी, पूर्व जिला परिषद मंजू जी, विजय पासवान, राज्य परिषद सदस्य अनिल कुमार यादव, दाउदनगर के सांसद प्रतिनिधि डॉक्टर आर. यू. गुप्ता, मुखिया राजेश चंद्रवंशी, मुखिया मनोज चंद्रवंशी, शशि चौरसिया प्रदेश महासचिव अति पिछड़ा, सत्येंद्र चौधरी, अत्यंत पिछड़ा के प्रखंड अध्यक्ष लालू चंद्रवंशी, सुरेंद्र चंद्रवंशी, विजय विश्वकर्मा सोनम दास, राधा देवी इत्यादि लोग उपस्थित रहे।8

पुलिस ने जितवारपुर में छापेमारी कर 29 कार्टन विदेशी शराब के साथ एक कारोबारी गिरफ्तार

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर रविवार की अहले सुबह मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के जितवारपुर चौथ में छापेमारी कर बड़ी मात्रा में विदेशी शराब के साथ एक शराब कारोबारी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार शराब कारोबारी की पहचान जितवारपुर चौथ वार्ड नंबर 19 निवासी रसोवर यादव के पुत्र रामाश्रय यादव के रूप में हुई है। इसको लेकर मुफ्फसिल थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि थाना क्षेत्र के जितवारपुर चौथ में बड़ी मात्रा में शराब की खेप उतरने की गुप्त सूचना मिली थी। जिसके बाद सूचना के सत्यापन को लेकर पुलिस टीम को छापेमारी के लिए भेजा गया था और क्षेत्र में पुलिस की सक्रियता बढ़ा दी गई थी। वह पुलिस को आता देख कई शराब कारोबारी मौके से भागने में सफल रहे लेकिन पुलिस टीम ने तत्परता के साथ एक शराब कारोबारी को खदेड़ कर पकड़ लिया। वहीं उसे टीम ने 29 कार्टन विदेशी शराब बरामद किया। बरामद शराब को जब्त करते हुए और गिरफ्तार शराब कारोबारी को अपने साथ लेकर थाने ले जाया गया है। जब पुलिस टीम के द्वारा गिरफ्तार शराब कारोबारी से पूछताछ की जा रही थी। गिरफ्तार शराब कारोबारी के विरुद्ध मद्य निषेध अधिनियम के उल्लंघन के तहत मामला दर्ज कर उसे जेल भेजे जाने की प्रक्रिया की जा रही थी।

अंबेडकर मंच की बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। अम्बेडकर ज्ञान मंच, केंद्रीय कमिटी की बैठक रविवार को शहर के गुदरी हजरा प्राथमिक विद्यालय परिसर में रविंद्र कुमार की अध्यक्षता में आहूत हुई।कार्यक्रम की शुरूआत सखिया देवी के साथ सदस्यों ने संविधान निमार्ता बाबा साहेब आंबेडकर के तैलीय चित्र पर पुष्पांजलि के साथ की गई। इस बैठक में सांगठनिक विस्तार के साथ शहर के अंबेडकर चौक पर स्थित संविधान निमार्ता भारत रत्न बाबा साहेब डॉ.भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा के उन्नयन व उक्त स्थान पर साढ़े आठ फीट ऊंची प्रतिमा के अनावरण करने का निर्णय लिया गया।वही आगामी 14 अक्तूबर को अम्बेडकर ज्ञान मांग के स्थापना दिवस वार्षिकोत्सव के रूप में मनाने और सदस्यों को गांव गांव में पहुंच अभिवंचित वर्गो के बच्चे को शिक्षा से जोड़ने, नशामुक्त समाज निर्माण के लिए जागरूकता शिविर आयोजित करने का निर्णय लिया गया। मौके पर मंच के संस्थापक मुनेश राम ने अभिवंचित वर्ग विशेषकर बहुजनए समाज के लोगों का आह्वान करते हुए कहा कि कुछ अतिवादी और जातीय आतंकियों द्वारा बहुजन समाज में जन्मे महापुरुषों व संत गुरुओं के विचारों और आदर्शो से प्रेरित नशामुक्त शिक्षायुक्त,स्वच्छ व स्वस्थ्य समाज का निर्माण करने है।कुछ लोग हमारे संत गुरु महापुरुषों के खिलाफ अनर्लगन टिपण्णी आए दिन सोशल मीडिया पर कर रहे है।ऐसे कतिपय अतिवादियों के खिलाफ हमे संवैधानिक मयार्दाओं का अनुपालन करते हुए शासनजी प्रशासन से उपचारात्मक कार्रवाई की अपेक्षा करने है।कभी भी किसी प्रकार के उकसावे में नहीं आने हैं।वही,इस बैठक में मंच के सक्रिय साथी प्रकाश कुमार को सर्वसम्मति से अनुमंडल अध्यक्ष मनोनित किया गया तथा इनके नेतृत्व में चौदह सदस्यीय अनुमंडल कमिटी का गठन हुआ।साथ ही बैठक में आदापुर के समाजसेवी पंसस सुनीता देवी के पति बच्चा पासवान की निर्मम हत्या की तीव्र भर्त्सना करते हुए उनके हत्यारों को अविलंब गिरफ्तार करने की मांग की गई और सदस्यों ने दो मिनट मौन धारण कर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि दिया तथा इस संकट की घड़ी में शोक संतप्त परिवार के साथ सदैव खड़ा रहने का संकल्प व्यक्त किया गया।मौके पर संस्थापक मुनेश राम,अध्यक्ष रविंद्र कुमार,कोषाध्यक्ष श्रेयांश कुमार उर्फ बिट्टू गुप्ता,ताराचंद राम,प्रकाश कुमार,तोखन राम,चंदेश्वर राम,प्रमोद कुमार, सखिया देवी,अर्जुनदेव पासवान, दिनेश राम, राजू कुमार राम,रामपुकार राम, कामोद राम, रामू कुमार रंजन,संतोष राम,विकास राम संजय राम, भूलन राम,राजन राम,रामदयाल राम,लक्ष्मण राम, कृष्णा राम,उमाशंकर राम,रामेश्वर राम सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

रेलवे ट्रेड यूनियन के राष्ट्रीय नेता के स्मृति दिवस पर यूनियन नेताओं को किया सम्मानित

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

रेलवे ट्रेड यूनियन के राष्ट्रीय नेता रहे स्व. एसके ठाकुर के स्मृति दिवस पर रविवार को समस्तीपुर विकास मंच के द्वारा वर्ष 1974 के ऐतिहासिक रेल हड़ताल में शामिल एक दर्जन से अधिक ट्रेड यूनियन नेताओं को जितवारपुर वार्ड संख्या 16, जितवारपुर वार्ड संख्या 17 तथा जितवारपुर वार्ड संख्या 19 में सम्मानित किया गया।

समाजसेवी राकेश कुमार ठाकुर ने उन्हें पाग, चादर, माला, बेंत, किताब, कलम तथा मोमेंटो से सम्मानित किया। सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए राकेश कुमार ठाकुर ने कहा कि बुजुर्ग हमारे समाज की धरोहर हैं, हमारी अमूल्य सम्पत्ति हैं। बुजुर्गों का सम्मान करना हमारी परंपरा है। वृद्धजनों से हमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सदैव मार्गदर्शन मिलता है। जिस समाज में बुजुर्गों का सम्मान नहीं होता वह समाज विकास नहीं कर सकता है। इसलिए यह जरूरी है कि बुजुर्ग का सम्मान करें। सम्मानित होने वाले रेलवे ट्रेड यूनियन नेताओं में आनंदी राय, रामस्वार्थ राय, लालदेव राय, मौजेलाल सिह, रामप्रीत राय, रामेश्वर राय तथा मिथिलेश राय सहित एक दर्जन से अधिक लोग शामिल हैं।

मौके पर समाजसेवी ई. राजेश कुमार राय, पूर्व पंचायत समिति सदस्य रामविनोद पासवान, अधिवक्ता मो. शाहिद हुसैन, समाजसेवी रूहुल्लाह खान गुड्डू, मनोज कुमार राय, रंजीत कुमार रम्भू, रेलवे ट्रेड यूनियन नेता एसके निराला, ई. पंकज कुमार, जयलाल राय, रामयतन राय, अमरेश राय, रामप्रकाश राय, सत्यनारायण राय, ई. वृजनंदन राय, करमचंद राय, अशोक कुमार मंडल, मुकेश कुमार, अमित कुमार, विजय कुमार आदि मौजूद थे।

प्रभारी प्रधानाध्यापक पर लगा राशि गबन का आरोप

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड के उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मुस्तफापुर के प्रभारी प्रधानाध्यापक पर विद्यालय मरम्मती की राशि का दुरुपयोग करने व गबन करने का आरोप लगाया है। यह आरोप पूर्व विद्यालय विधायक प्रतिनिधि राम नरेश झा ने लगाते हुए जिला शिक्षा पदाधिकारी से लिखित शिकायत करते हुए जांच की मांग की है। उन्होंने आवेदन के माध्यम से बताया कि सरकार द्वारा 10 लाख रूपया का आवंटन विद्यालय मरम्मती व दो शौचालय के निर्माण हेतु मिला। लेकिन प्रभारी प्रधानाध्यापक द्वारा राशि गबन करने की मंशा से टाइल्स लगवाया जा रहा। जबकी विद्यालय के कमरे व बरामदे का फर्श टुटा हुआ है। टूटे फर्श का ढलाई नही करवाया जा रहा है। राशि खर्च हेतू शिक्षा समिति के अध्यक्ष व सचिव को सूचना भी नही दी गई। जानकारी मिलने पर अध्यक्ष व सचिव विद्यालय पहुंचकर प्रभारी प्रधानाध्यापक से शिक्षा समिति के पंजी पर अंकित योजना व कार्य के ब्यौरा जैसे फर्श एवं बरामदे की ढलाई, किचनशेड की मरम्मत, शौचालय व मूत्रालय की मरम्मत, विद्यालय की रंगरोहन के बारे में पूछा तो भड़क उठे। साथ ही मुकदमा करने की धमकी दिया। प्रस्ताव पंजी पर योजना का नाम व राशि लिखने को कहने पर सचिव को बदल दिया। पूर्व विद्यालय विधायक प्रतिनिधि होने के नाते प्रभारी प्रधानाध्यापक से मिलने पहुंचा तो अमर्यादित भाषा का प्रयोग करते हुए कहा हाथ पैर वाला को भगा दिया तो तुम लंगड़ा मेरा क्या बिगाड़ लोगे। इसकी शिकायत प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी से भी की गई लेकिन प्रधानाध्यापक बीईओ से मिलकर सभी बातो से अकात करा दिया। विद्यालय का निरीक्षण भी नही किया गया। वहीं इस संबंध में प्रभारी प्रधानाध्यापक शिव शंकर ठाकुर ने बताया कि मानक के अनुसार काम करवाया गया है। जिसकी जांच भी की गई है। कहीं से भी कोई राशि का दुरुपयोग नही किया गया है।

रोसड़ा को जिला बनाने की मांग लेकर अनिश्चितकालीन धरना, 14वें दिन भी रहा जारी

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

रोसड़ा को जिला बनाने की वर्षों पुरानी मांग को लेकर शहर के सिनेमा चौक पर अनिश्चितकालीन धरना रविवार को 14वें दिन भी जारी रहा। संघर्षरत धरनार्थियों ने रोसड़ा को जल्द से जल्द जिला घोषित करने के लिए बिहार सरकार से अनुरोध किया तथा किसी भी सरकारी प्रशासनिक पदाधिकारी व जनप्रतिनिधि को धरनार्थियों से नहीं मिलने आने पर नाराजगी व्यक्त किया। उन्होंने राजनेताओं पर निशाना साधते हुए कहा कि रोसड़ा की जनता को 30 वर्षों से ठगा जा रहा है।

मिश्रा विश्व बारूद, राजा कुमार राय, मो. इमरान, समर सिंह, रोशन कुमार, कमलेश कुमार, रवि कुमार, करण प्रकाश चौहान, विकास प्रियदर्शी, आदर्श कुमार एवं अधिवक्ता देवदत्त झा समेत दर्जनों लोग खराब मौसम होने के बावजूद धरना में रोसड़ा को जिला बनाने की मांग को लेकर बैठे हुए थे।

वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस के साथ वीडियो फोटो लेने वालों की प्लेटफार्म पर लगी भीड़

प्रात : किरण संवाददाता

झाझा-रविवार से पटना हावड़ा मुख्य रेलखंड पर वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस का परिचालन शुरू हो चुका है हालांकि झाझा रेलवे स्टेशन पर उक्त गाड़ी के ठहराव नही दिया गया है।वही हाजीपुर जोन के महाप्रबंधक अनुपम शर्मा उक्त गाड़ी से झाझा पहुँचे जिसके कारण उक्त गाड़ी को झाझा स्टेशन पर ठहराव किया गया।वही रेलवे की ओर से वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस के साथ अपनी तस्वीर,विडियो बनाकर रेलवे के बेबसाईट पर साझा कर सोशल मीडिया हीरो बने अभियान को लेकर बड़ी संख्या में लोग प्लेटफार्म पर पहुँचे हुये थे।ज्योहि वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस का ठहराव हुआ लोगों ने उक्त गाड़ी के साथ विडियो,फोटो लेने वालो की भीड़ लग गई।वही सुरक्षा को लेकर आरपीएफ के जवान पूरी तरह से प्लेटफार्म पर तैनात रहे और लोगों को गाड़ी से दूरी बनाकर ही विडियो फोटो लेने के लिये कह रहे थे।बताते चले कि वंदे भारत ट्रेन के साथ रेलवे स्टेशन के नाम के साथ विडियो फोटो लेकर रेलवे के बेबसाईट पर पोस्ट करने कर सोशल मीडिया हीरो बने अभियान चलाया था।जिसमे चयनित होने वाले लोगों को प्रशस्ति पत्र एवं अवार्ड दिया जायेगा।

श्री गणेश पूजनोत्सव के बाद हुआ प्रतिमा पूजनोत्सव

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। रक्सौल में श्री मंगलमूर्ति गणेश पूजा समिति द्वारा आयोजित पांच दिवसीय गणपति पूजन महोत्सव रविवार को प्रतिमा विसर्जन के साथ ही समाप्त हो गया। रविवार को जहां गाजे बाजे और जुलूस के बीच धूम धाम से गणपति प्रतिमा का विसर्जन किया गया। वहीं शनिवार की देर रात बांके बिहारी रासलीला का मंचन हुआ। श्री धाम वृंदावन से आई रास लीला मंडली द्वारा 19 से 23सितंबर तक चले रास लीला प्रस्तुति कार्यक्रम में श्री कृष्ण जन्म से ले कर मटकी फोड़, राधा कृष्ण की रास लीला,कृष्ण सुदामा मिलन समेत विविध प्रसंगों की प्रस्तुति दे कर कलाकारों ने मन मोह लिया और खूब वाह वाही बटोरी। वहीं वीरगंज के जीएस म्यूजिकल ग्रुप के कलाकार गोपाल शर्मा, अरविंद लाल यादव, अंजली गुप्ता आदि द्वारा भजन को प्रस्तुति दी है, जिस पर श्रद्धालु झूमते रहे। बनारस के गंगा आरती के तर्ज पर रक्सौल में पहली बार महा आरती की प्रस्तुति काफी चर्चे में रही। पूजा समिति के सचिव कृष्ण कुमार पप्पू ने बताया कि इस महोत्सव के समापन पर पूजा में योगदान और सहयोग देने वालो कमिटी सदस्यों, सहयोगियों और कलाकारों को सम्मानित किया गया।साथ ही श्रद्धालुओं के लिए भंडारा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में अध्यक्ष विजय कुमार ,सचिव कृष्ण कुमार पप्पू , विजय कुमार, कोषाध्यक्ष संदीप चौधरी समेत गणेश शंकर, पिंटू गुप्ता, लक्की कुमार, संतोष गुप्ता, मनीष वर्मा, राजेश, सूरज ठाकुर, अनुराग, निशु, सुनील, रंजीत, बादल कुमार, विक्की आदि की सक्रिय भूमिका रही।

जानकी एक्सप्रेस से टकरायी भैंस, बचाने गई महिला का हाथ टूटा

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर-रोसड़ा रेलखंड के अंगारघाट स्टेशन के पास रविवार की सुबह जयनगर से कटिहार जा रही जानकी एक्सप्रेस से टकरा कर एक भैंस कट गई और भैंस चरा रही एक महिला का हाथ टूट गया। घायल महिला का इलाज सदर अस्पताल में कराया जा रहा है। महिला की पहचान अंगारघाट पंचायत के वार्ड संख्या 10 निवासी रामाशीष पासवान की पत्नी मुखो देवी (45 वर्ष) के रूप में की गई है। घटना के सम्बन्ध में बताया गया कि अंगारघाट रेलवे स्टेशन के पूर्वी आउटर सिगनल के पास एक महिला भैस चरा रही थी। भैस के गले में बंधी रस्सी महिला के हाथ में थी। जानकी एक्सप्रेस ट्रेन जैसे ही पूर्वी आउटर के समीप पहुंची कि घास चर रही भैंस पटरी पर आ दौड़ने लगी। पीछे से ट्रेन आ रही थी। महिला ने भैंस को पटरी से खींचकर अलग करने का जी-तोड़ प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हुई। इस दौरान ट्रेन भैंस से टकरा गई और महिला का हाथ जो भैंस की रस्सी से फंसा हुआ वह ट्रेन के झटके से टूट गया। लोगों के द्वारा घायल महिला को इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां से उसे सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया।

अज्ञात चोरों द्वारा लगभग आधा किलोमीटर ईंट सोलिंग को उखाड़ कर चोरी कर लिया गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली थाना क्षेत्र के महाराजपुर धत्ताटोल के पास पश्चिमी कमला तट बांध पर 20 किलोमीटर से आगे महाराजपुर चौक जाने वाली तट बांध पर आये दिन अज्ञात चोरों द्वारा लगभग आधा किलोमीटर में रात्रि को ईंट सोलिंग को उखाड़ कर चोरी कर लिया गया है. प्राप्त जानकारी के अनुसार बगौल ढाला से आगे महाराजपुर चौक की तरफ जाने वाली पश्चिमी कमला तट बाँध पर चार दिनों से रात्रि में चार से पांच लोगों द्वारा ट्रैक्टर लगाकर कमला तट बांध पर लगे ईट की सोलिंग को उखाड़ कर ट्रैकर पर लादकर अज्ञात चोरों द्वारा ईट की चोरी कर रहा है. वही ईट सोलिंग को उखाड़ने से पश्चिमी कमला तट बांध गड्ढे में तबल्लीन होने से तट बांध कमजोर पड़ गयी है.जब कि तट बांध की निगरानी के लिए जल संसाधन विभाग के फ्लड कंट्रोल झंझारपुर 2 के द्वारा तट बांध को देखभाल के लिए गार्ड को बहाली कर तट बांध की सुरक्षा हेतु लगाया गया है, फिर भी तट बांध पर लगे ईट की सोलिंग को उखाड़ कर अज्ञात चोरों द्वारा लगातार चोरी की जाएगी. इस तट बांध पर लगे ईट की सोलिंग को उखाड़ कर चोरी करने के संबंध में स्थानीय प्रभात खबर पत्रकार द्वारा जिला पदाधिकारी मधुबनी एव सदर अनुमंडल पदाधिकारी मधुबनी को सूचना दी गयी. इस चोरी के सूचना पर जिला पदाधिकारी अरविंद्र कुमार वर्मा ने तत्काल करवाई करते हुए फ्लड कंट्रोल विभाग झंझारपुर डिवीजन - 2 को आदेश दिया कि पश्चिमी कमला तट बांध पर ईंट सोलिंग उखाड़कर अज्ञात चोरो द्वारा चोरी करने को लेकर चोरों के विरुद्ध करवाई करने का आदेश दिया है. वही जल संसाधन विभाग के झंझारपुर फ्लड कंट्रोल विभाग - 2 के कार्यपालक अभियंता कुमुद रंजन झा ने बताया कि पश्चिमी कमला तट बांध 20 किलोमीटर के आगे एव पीछे ईंट सोलिंग उखाड़ कर ईंट की चोरी करने को लेकर स्थल निरीक्षण कर अज्ञात चोरों को पता लगाकर उनके विरुद्ध स्थानीय थाना में प्राथमिकी दर्ज कर कानूनी करवाई की जाएगी।

बाईक चोरी करने आरोपी गिरफ्तार, न्यायायिक हिरासत में भेजा गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली थाना क्षेत्र के खजौली गांव निवासी अखिलेश कुमार का हीरो होण्डा साइन वाइक बीती रात में अपने दरवाजे से चोरी करने के आरोप में कंहौली मल्लिक टोल गांव निवासी पप्पू कुमार एव दीपक कुमार सहनी को वाइक से साथ राजकीय प्राथमिक विद्यालय अकसपूरा से थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने गिरफ्तार करके रविवार को न्यायायिक हिरासत में भेज दिया गया. थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने बताया कि खजौली गांव निवासी अखिलेश कुमार के दरवाजे पर रखे हीरो होंडा साइन वाइक को बीती रात अखिलेश कुमार के दरवाजे पर उनके चाचा जी नरेश कुमार भगत जो दिल्ली में रहता है उनका वाइक दरवाजे पर लगा था. बीती रात मध्य रात्री में दरवाजे से कुछ खरखराहट की आवाज आने पर मैं बाहर निकला तो वाइक दरवाजे से गायब पाया. मैं एव आस पड़ोस के लोगो से वाइक की खोजबीन करने पर आभास हुआ कि वाइक दक्षिण की ओर ले गया है. वही खोजबीन के दौरान अकसपूरा गांव स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय पर पहुँचा तो देखा कि विद्यालय परिसर में चोरी की वाइक छिपकर रखा हुआ है. वाइक चोर को खोजबीन करने पर दोनो वाइक चोर विद्यालय परिसर में छिपा हुआ था. दोनो वाइक चोर को अपने कब्जे में लेकर खजौली थाना को सूचना दी गयी. खजौली थानाध्यक्ष ने सूचना के आलोक में तत्वरित कारवाई करते हुए स्थल पर पहुँच कर वाइक एव दोनो चोर को अपने कब्जे में लेकर थाना पर लाया गया.वही वाइक चोर पप्पू कुमार एव दीपक कुमार सहनी को रविवार को जेल भेज दिया गया.इस गिरफ्तारी के मौके पर एसआइ चरित्र राम जितेश कुमार राम कुमार सहित बीएमपी के जवान मौजूद थे।

हाजीपुर जोन के महाप्रबंधक वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस से झाझा पहुँचकर 11 मिनट तक किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

झाझा- पटना से हावड़ा मुख्यरेलखंड पर परिचालन होने वाली पटना-हावड़ा वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस के परिचालन पीएम नरेंद्र मोदी के द्वारा वीसी के माध्यम से किया।पटना से हावड़ा जा रही सुपरफास्ट में सवार होकर रेलवे हाजीपुर जोन के महाप्रबंधक अनुपम शर्मा झाझा पहुँचे।जहां स्थानीय अधिकारी उनका स्वागत किया।वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस से उतरने के बाद उन्होनें झाझा रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान उन्होनें फुटओवर ब्रीज सहित प्लेटफार्म,मेमूकारशेड आदि की जानकारी अपने साथ चल रहे दानापुर डिवीजन के प्रबंधक जयकांत चैधरी से लिया।महाप्रबंधक ने बताया कि वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस एक मॉडल गाड़ी है जिसमें सभी तरह की संसाधन रेलयात्रियों के लिये उपलब्ध करवाया गया और स्पीड भी इसकी तेज है जिससे पटना से हावड़ा की दूरी कम समय में तय किया जा सकता है।उन्होनें आगे बताया कि भारत की एक ऐसी गाड़ी है जिसका इंतेजार लोगों को लंबे समय था और उस इंतेजार को सरकार को समाप्त करते हुये रेलयात्रियों को वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस का तोहफा दिया।उन्होनें आगे बताया कि रेलवे हमेशा रेलयात्रियों की सुविधाओ का ख्याल रखते आ रहा है।वही जमुई व झाझा स्टेशन पर वंदे भारत सुपरफास्ट एक्सप्रेस का ठहराव नही होने पर महाप्रबंधक ने बताया कि इस पर हमलोग प्रयास करेगे कि जमुई,झाझा में इसका ठहराव हो।इसके लिये रेलवे की ओर से जो भी दिशा निर्देश होगा उसका पालन किया जायेगा।वही लंबे समय से अधूरे पड़े फुट ओवर ब्रीज पर महाप्रबंधक ने कहा कि जल्द फुटओवर ब्रीज भी रेलयात्रियों के लिये चालू कर दिया जायेगा।वही झाझा रेलवे स्टेशन को अमृत भारत के तहत चयनित न होने पर उन्होने कहा कि इस दिशा में भी प्रयास जारी है कि झाझा रेलवे

संक्षिप्त खबरें

जन सुराज के प्रखण्ड कार्यकारणी की बैठक आयोजित

दिघवारा नगर।जन सुराज दिघवारा प्रखंड कार्यवाहक समिति की बैठक रविवार को स्थानीय बरुआ पंचायत सरकार भवन में सम्पन्न हुई।इस अवसर पर प्रखंड कार्यवाहक समिति के सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को मनोनयन पत्र सौंपा गया।मौके पर उपस्थित पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए सोनपुर अनुमंडल युवा अध्यक्ष तनुज सौरभ ने कहा कि प्रशांत किशोर के मार्गदर्शन में जनसुराज आने वाले दिनों में बिहार के जन जन की आवाज बन कर उभरेगी और पूरे बिहार में हर स्तर पर सही लोगों का सक्षम नेतृत्व सामने आएगा।तभी जन सुराज का सपना साकार होगा और इसमें आप सभी की भूमिका अहम होगी।बैठक की अध्यक्षता करते हुए जन सुराज के प्रखंड अध्यक्ष व मुखिया संघ के अध्यक्ष अजित कुमार सिंह उर्फ पप्पू सिंह ने कहा कि संगठन की मजबूती के लिए गतिविधियों को और तेज किया जाएगा।इस क्रम में आगामी 01 अक्टूबर को रामजंगल सिंह इंटर कॉलेज में प्रखंड स्तरीय बृहत बैठक का आयोजन किया जाएगा।बैठक में मुख्य रूप से उपाध्यक्ष बबलू सिंह, प्रवक्ता अजित कुमार सोनू, युवा अध्यक्ष अश्विनी पाण्डेय, महिला अध्यक्ष सोना देवी,पुष्पा देवी के अलावे अनुमंडल महिला अध्यक्ष अमिता सहनी आदि उपस्थित थें।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री का सांसद प्रतिनिधि ने किया भव्य स्वागत

छपरा।भाजपा रास्ट्रीय महामंत्री सह बिहार प्रभारी विनोद तावड़े ,पूर्व मंत्री मंगल पांडेय और प्रदेश महामंत्री जगरनाथ ठाकुर का पटना से छपरा जाने के क्रम मे उनका स्वागत दरियापुर मे फूल माला और अंग वस्त्र से प्रदेश कार्य समिति सदस्य एवं सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह की अध्यक्षता मे जोरदार स्वागत किया गया और परसा मे जिला मंत्री अर्जुन सिंह की अध्यक्षता मे स्वागत किया गया।इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष मंटू बाबा, मंडल अध्यक्ष रामानंद सिंह,परसा मंडल अध्यक्ष भूलन जी, अध्यक्ष अजय पूरी मनोज ठाकुर, किसान मोर्चा विजय सिंह, उपाध्यक्ष मुकेश सिंह, सनी, रामबाबू मांझी, हरिचंरण मांझी,अजय पूरी,सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

इसुआपुर बाजार से बाइक चोरी

इसुआपुर।इसुआपुर बाजार के एक दुकान के सामने रखी मोटरसाइकिल की चोरी हो गई है। इस संबंध में पानापुर थाना क्षेत्र के बकवां गांव निवासी वाहन मालिक हरि किशोर कुमार ने इसुआपुर थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है। जिसमें कहा गया है कि वे मोटरसाइकिल लगाकर रेडीमेड दुकान में कपड़ा खरीदने के लिए गए थे। जब वे बाहर निकाले तो उसकी स्प्लेंडर प्लस मोटरसाइकिल की चोरी कर ली गई थी।

दो युवक गिरफ्तार,बाइक बरामद

डोरीगंज।स्थानीय पुलिस ने चोरी की दो बाइक के साथ एक युवक को गिरफ्तार कर लिया है। थानाध्यक्ष सुरज कुमार ने बताया कि गूप्त सूचना पर थाना क्षेत्र के दियारा स्थित रायपुर बिंदगावा गांव में छापेमारी कर चोरी की दो बाइक होंडा कंपनी की साइन गाड़ी एवं हीरो कंपनी की पैशन प्रो गाड़ी के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया गया है।गिरफ्तार युवक रायपुर बिंदगावा निवासी गोविंदा कुमार है। जिस पर प्राथमिकी दर्ज कर जेल भेज दिया गया है।

महावीर झंडा मेला में भव्य जुलूस यात्रा के बाद कुश्ती आयोजित

मशरक।मशरक प्रखंड के डुमरसन बाजार में दो दिवसीय महावीर झंडा मेला में बाजार अवस्थित महाबीर मंदिर में पूजा अर्चना के बाद विशाल भव्य जुलूस निकाला गया।मौके पर डुमरसन मुखिया बच्चा लाल साह, अरूण कुमार प्रसाद, पैक्स अध्यक्ष संजय कुमार साह, पूर्व उप प्रमुख साहेब हुसैन उर्फ टुनटुन,कर्णकुदरिया मुखिया प्रतिनिधि अशरफ अली,उप मुखिया रोहित गुप्ता, प्रशांत कुमार सिंह, सुमन कुमार सहित हजारो की संख्या में भक्त मौजूद रहें।दूसरे दिन रविवार के शाम बारिश के बीच कुश्ती दंगल प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसे देखने के लिए खराब मौसम में भी हजारों की संख्या में लोग उपस्थित रहे। वही दो दिवसीय महावीर झंडा मेला के पहले दिन शनिवार से ही प्रसाशन चुस्त-दुरुस्त है जिस वजह से शांतिपूर्ण माहौल रहा।

प्रशिक्षु महिला सिपाही ने लगाया छेड़खानी का आरोप

अरवल।अग्निशमन विभाग में प्रशिक्षु महिला सिपाही ने दो दिन पहले प्रधान चालक उमेश और सिपाही नीरज कुमार पर छेड़छाड़ आरोप लगाया था।जिसके बाद दोनों को डीएम वर्षा सिंह ने स्थानांतरित कर दिया और अग्निशमन फायर स्टेशन पदाधिकारी मुन्नू राम और चालक हृदयानंद कुमार से स्पष्टीकरण पूछते हुए दो माह का वेतन बंद करने का दिया निर्देश दिया।स्टेशन पदाधिकारी मामले को लेकर तनाव में चल रहे थे। इसी तनाव में उन्हें हार्ट अटैक आ गया।पटना में शनिवार रात उनकी मौत हो गई।

जन संवाद कार्यक्रम को लेकर जिलाधिकारी ने किया उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

गया।जनसंवाद कार्यक्रम का किया गया आयोजन मालूम हो कि जिलेभर के सभी पंचायतों में जिला ,अनुमंडल एवं प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि की उपस्थिति में जन संवाद कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।जन संवाद का मुख्य उद्देश्य स्थानीय जनप्रतिनिधियों/ प्रखंड समन्वय समिति/ युवा वर्ग/ महिला वर्ग/ सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक रूप से पिछड़े एवं कमजोर वर्गो / दिव्यांगजनों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए सरकार की विभिन्न लोक कल्याणकारी योजनाओं के संबंध में आम जनों को जानकारी प्रदान करते हुए इस संबंध में सुझाव एवं प्रतिक्रिया प्राप्त कर उसका निराकरण करना है।

सरकार द्वारा कई सारे ऐसे कदम और कार्य किया जा रहा है। कही न कही इस नए पीढ़ी के लोगो को शायद पूरी जानकारी नही है। कितना काम एवं विकास पिछले दो दशक में किया गया है। पिछले दो-तीन दशक में क्या-क्या विकास हुए हैं। क्या-क्या कमियां को दूर कर करके हर विभाग के क्षेत्र में एक नया इंफ्रास्ट्रक्चर /नए वातावरण को लाकर हर वर्ग के नागरिकों के बीच योजनाओं से लाभान्वित करवाने का प्रयास किया गया है। सड़क के क्षेत्र में कई बदलाव आए हैं। वर्तमान समय में उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो प्रेतशिला में पहले काफी आवागमन की समस्याएं थी अब सीधे नेशनल हाईवे से जोड़कर के एक तरफ बोधगया और दूसरे तरफ चाकन्द बेला की ओर बनाया गया है। ग्रामीण सड़क सभी जगह बन रहा है, जिसे मुख्यमंत्री टोला संपर्क योजना निश्चय के तहत लिया गया है। सभी सड़के निर्धारित समय सीमा के अंदर पूर्ण करने का निर्धारित है। साथ ही हर गांव में नाली गली का निर्माण करवाया गया है। हर घर नल का जल पहुंचाया गया है। हर घर बिजली से आच्छादित कराया गया।

पूर्व में बिजली की क्या स्थिति थी सब लोग जानते है, अब हर घर में बिजली है, इसके बारे में आप अपने पूर्वज से पूछे। समृद्ध गांव स्वच्छ गांव के तहत हर गांव में लाइट लगवाने का कार्य किया जा रहा है, जो वर्ष 2025 तक पूर्ण हो जाएगा। हर गांव के हर घर में जो भी समस्या है उसे दूर करने का कार्य किया जा रहा है। आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित रखने के लिए जल- जीवन -हरियाली अभियान माननीय मुख्यमंत्री द्वारा प्रारंभ किया गया ताकि दिन प्रतिदिन पर्यावरण चेंजिंग के कारण यह पहल किया गया। समय पर पहले वर्षा होती थी जिससे किसान खेती करते थे लोगों को पानी की समस्या नहीं होती थी, परंतु वर्तमान समय में पर्यावरण संतुलन में थोड़ी बदलाव आया है इसे देखकर पर्यावरण संतुलन के लिए लगातार बड़े-बड़े कदम उठाए जा रहे हैं, जिसमें मुख्य रूप से वृहद पैमाने पर पौधारोपण किया जा रहा है। जल संरचनाओं को बनाया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक जल संग्रह किया जा सके, बड़े-बड़े चेक डैम का निर्माण करवाया जा रहा है। पहाड़ों के पानी जो बर्बाद होते थे उसे भी संरक्षित करने के लिए बड़े-बड़े काम किया जा रहे हैं. उन्होंने कहां की गया एवं बोधगया में हर वर्ष गर्मी के मैसम में पानी की अत्यंत समस्या होती है, पेयजल समस्या हमेशा बनी रहती है। भूगर्भ जलस्तर काफी नीचे चला जाता है।लगभग 178 क्यूबिक मिलियन लीटर पानी जो भूगर्भ जल से निकलता था/ दोहन कर करके लोगों तक पहुंचाया जाता था, उसे देखते हुए माननीय मुख्यमंत्री ने बरसात मौसम में गंगा का पानी बहकर जो अन्यत्र समुद्र में चला जाता था, बर्बाद हो जाता था। उसे पानी को काफी बड़ी चुनौती लेकर संचय करने एवं सदुपयोग करने के लिए गया एवं बोधगया में हर घर गंगाजल उद्धव योजना के तहत लाया गया एवं गया जिले के नीमचक बथानी अनुमंडल के तेतर पंचायत में बड़ा जल संग्रह केंद्र बनाकर हजारों मिलियन लीटर पानी को संग्रह कर गया एवं बोधगया के घरों तक शुद्ध पेयजल उपलब्ध करवाया जा रहा है। इससे गया एवं बोधगया के लोगों को भरपूर मात्रा में पानी भी मिल रहा है और भूगर्भ जल का दोहन भी नहीं किया जा रहा है। यह कार्य काफी ऐतिहासिक कार्य है।

गया जी को आकर्षक बनाने के लिए लाइट भी लगाई गई है,जैसे सीता पथ में भी पूरी रोशनी की व्यवस्था रखी गई है ताकि रात्रि के समय में भी तीर्थ यात्रियों को आवागमन में कोई असुविधा नहीं हो सके। साथ ही सीता पथ में मिथिला पेंटिंग भी करवाया गया है।

26 अवर निरीक्षकों को एसपी व मुख्यालय डीएसपी द्वारा बैच लगाकर नए रैंक से किया अलंकृत

प्रात : किरण संवाददाता

कैमूर। भभुआ एसपी आवास कार्यालय पर इंस्पेक्टर पद पर पदोन्नति होने पर कैमूर एसपी ललित मोहन शर्मा व मुख्यालय डीएसपी साकेत कुमार के द्वारा 26 पुलिस अवर निरीक्षकों को बैच लगाकर सम्मानित किया गया हैं। जहां शासन की पदोन्नति के बाद पुलिस अवर निरीक्षकों को इंस्पेक्टर बना दिया गया है। वहीं एसपी ललित मोहन शर्मा व साथ में मौजूद रहे मुख्यालय डीएसपी साकेत कुमार के द्वारा स्टार लगाकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना एवं शुभकामना दिया गया है। उन्होंने कहा कि जिले के भभुआ टाउन थाना में नए थानाध्यक्ष के रूप में तैनात राम कल्याण यादव सोनहन थानाध्यक्ष राकेश कुमार रौशन लोहारा थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंघम, रामगढ़ थानाध्यक्ष शशिभूषण कुमार कुढ़नी थाना अध्यक्ष कुमार गौरव, चांद थाना अध्यक्ष सचिन कुमार कुदरा थाना अध्यक्ष संजय कुमार बेलाव थानाध्यक्ष विनय कुमार,नुआंव थानाध्यक्ष सुहैल अहमद , मोहनियाँ ट्रैफिक प्रभारी संजय कुमार सहित कई सब इंस्पेक्टरों को स्टार लगाकर पदोउन्नति दिया गया साथ ही जिम्मेदारी के साथ बधाई भी दिया गया है।

निशुल्क रक्त जांच शिविर का हुआ विधिवत उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। अंतरराष्ट्रीय स्वंयसेवी संस्था लायंस क्लब छपरा टाउन की युवा इकाई लियो क्लब के द्वारा निःशुल्क रक्त जांच शिविर का आयोजन शहर के एस.डी.एस पब्लिक स्कूल में आयोजित किया गया. रक्त जॉच शिविर का विधिवत शुभारंभ छपरा शहर के वरिष्ठ नेत्र चिकत्सक डॉ. एस.के पाण्डेय, प्राचार्य डॉ अरुण सिंह, लूपिन डायग्नोस्टिक्स से प्रणव सिंह, उपमेयर प्रतिनिधि धर्मनाथ पिंटू, लायंस अध्यक्ष गोविंद सोनी, लियो आशुतोष पाण्डेय ने किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता लायंस अमित सिंह ने किया। लूपिन डायग्नॉस्टिक के सहयोग से रक्त जॉच कैम्प में कुल 110 पुरुष-महिलाओं को विभिन्न प्रकार के रक्त जांच किए गए.।

रक्त जांच कैम्प में ब्लड शुगर, कोलेस्ट्रोल, थायरायड, सीबीसी, बी. एस.आर, टी.एस.एच एवं अन्य जांचें निःशुल्क की गई। लियो अध्यक्ष आशुतोष पाण्डेय ने कहा की हमारी संस्था स्वास्थ के प्रति जागरूक रहती है और लोगो को भी करती है, ये हमारा चौथा कैम्प है हमारी टीम की कोशिश है की गंभीर बीमारी होने से पहले ही इसकी जानकारी उन लोगो को हो जाए, जो पैसे के अभाव में अपना स्वास्थ जांच नही करा सकते है। वही लियो क्लब सदस्यों के द्वारा इस आयोजित कैंप को डॉक्टर एस के पाण्डेय ने भी सराहना किया। उन्होंने कहा की शरीर हमें रोग की पूर्व सूचना देने का प्रयास करता है. यदि उसे प्रारम्भिक स्तर पर पहचान लिया जाए तो रोग के बढ़ने या घातक बीमारी के पहले उसे रोका जा सकता है. कई मामले में तो बिना दवा के केवल परहेज से ठीक हुआ जा सकता है. उन्होंने जांच के आधार पर कई लोगों को जरूरी सलाह भी दी।

नगर विधायक ने पितृपक्ष मेला की तैयारी को लेकर किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

गया। पूर्व कृषि मंत्री सह गया नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार ने पितृपक्ष मेला 2023 तैयारियों को लेकर पथ निर्माण विभाग के सहायक अभियंता एवं कनीय अभियंता के साथ बैठक कर मुख्य सड़कों का निरीक्षण भी किया है। विधायक ने कहा कि पितृपक्ष मेला 2023 के अवसर पर गांधी मैदान से सिविल लाइन थाना होते हुए जिला स्कूल से राजेंद्र आश्रम से रामसागर तलाव होते चांद चौरा साथ ही एन एच 83 चाकंद से सिकारिया मोड़।काशीनाथ मोड़ से समाहरणालय तक भ्रमण के क्रम में कई स्थानों पर गड्ढे एवं क्षतिग्रस्त सड़कें देखी गई है। इसके साथ ही एन एच 83 बाई तरफ पार्सन फॉरलेनिंग का भी निरीक्षण किया बता दें, कि एन एच 83 में बेला गंज से पुरानी बाजार पथ जो है उसमें 1.9 किलोमीटर चौड़ीकरण एवं मजबूती करण हो रहा है। चाकंद से रामशिला,काशीनाथ मोड़,सिकरिया मोड़ से एन एच 82 जंक्शन गेट नं 5 तक 17.226 किलोमीटर चौड़ीकरण एवं मजबूती करण का कार्य चल रहा है।जिसमें 7 मीटर दोनो तरफ चौड़ीकरण होगा व 1.5 मीटर का डिवाइडर साथ ही फ्लैंक में हार्ड सोल्ड्रिंग के रूप में पेभर ब्लॉक लगाया जाएगा।डिवाइडर के बीच पौधारोपण होगा। चौड़ीकरण के दौरान जो वृक्ष सड़क के चौड़ाई में आएंगे जिसका व्यास 900 एम एम रहेगा उसको दूसरी तरफ पुनः रोपण किया जाएगा।कार्य के 9 माह बीत गए हैं।शेष 15 माह बचे हैं 15 माह बाद मगध वासियों को जाम से निजात मिलेगा। जबकि जल निकासी के व्यवस्था हेतु पुल पुलिया बनाए जायेंगे। इसके साथ ही विधायक ने बताया कि विष्णुपद मंदिर से जुड़ने वाली सभी सड़कों का कालीकरण किया जा चुका है, शेष सभी सड़कों का मरम्मती सहित खराब स्थानों पूर्णस्थापन का कार्य मेला प्रारंभ होने के पूर्व करा लिए जाएंगे।

गया नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत शेरघाटी पथ प्रमंडल में 1 सड़क व अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज, कटारी रेल ब्रिज होते हुए डेल्हा बस अड्डा तक सड़क पर काफी गड्ढे व क्षतिग्रस्त हो गए हैं। अन सड़कों का अविलंब पुर्णस्थापन व कालीकरण करने का सरकार से मांग किया जाएगा। ताकि भविष्य में कोई दुर्घटना ना हो । साथ ही साथ बुडको के द्वारा पीने के पानी की पाइप बिछाने के क्रम में अधिकांश सड़कों का खुदाई करने के बाद पुनर्स्थापना, कालीकरण,पक्कीकरण नहीं होने से गया जिला के लाखों यात्रियों पर्यटकों का आवागमन में काफी सुविधा हो रही है,यदि इस सड़कों का पुनर्स्थापना नहीं हुआ तो बुडको के अधिकारियों पर सरकार द्वारा क्यो नही कार्यवाई की जाएगी। इसके साथ ही विधायक ने कहा कि गया शहर पटना महानगर के तर्ज पर धूल रहित करने के लिए पथ के दोनों ओर पक्की कराया जाएगा।उक्त दौरान शंभू यादव, शिवनारायण ,प्रेमसागर, धीरज रौनीयार राजेश मस्तान, जेपी यादव, कौशलेंद्र , गोपाल पासवान, ऋषि लोहानी ,अमित लोहानी, कुंजन मिश्रा, दिलीप ,जितेंद्र यादव ,डॉक्टर राजकुमार ,मंटू गुप्ता आदि मौजूद रहे।

मढ़ौरा एसडीओ ने गढ़देवी मंदिर का किया निरीक्षण, दिए कई निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

मढ़ौरा ग्रामीण। स्थानीय एसडीओ सह मंदिर समिति की अध्यक्ष डॉ. प्रेरणा सिंह ने रविवार को यहा की प्रसिद्ध गढ़देवी मंदिर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मंदिर समिति के सदस्यों को कई जरूरी निर्देश भी दिए। एसडीओ ने समिति सदस्यों की सहमति से मां गढदेवी के भव्य गर्भगृह व गुम्बद का निर्माण कार्य जल्द ही शुरू कराए जाने की बात कही। उन्होंने नवरात्र के मौके पर यहा होने वाले अत्यधिक भीड़ को देखते हुए मंदिर के पास गाड़ी पार्किंग की व्यवस्था करने का निर्देश भी मंदिर समिति के लोगो को दिया। उन्होंने गढ़देवी मांता के भव्य गर्भगृह और गुम्बद का निर्माण कराने के लिए किसी आर्किटेक से बेहतर नक्शा तैयार कराने, मंदिर के सामने रोड के बीचो-बीच फूल पत्ती व लाईट लगाने, मंदिर का जरूरी रंग- रोगन व मरम्मत कराने के साथ-साथ मंदिर पर रसीद के माध्यम से वसूले जाने वाले विभिन्न शुल्कों का दर पुनः निर्धारित करने के अलावा मंदिर के सामने की दुकानों को व्यवस्थित करने का भी निर्देश दिया। ताकि यहां आने वाले श्रद्धालु दर्शनार्थियों को किसी तरह की कोई परेशानी ना हो और मंदिर परिसर देखने में स्वच्छ व बेहतर दिखे। एसडीओ ने यहां मौजूद दो बड़े शौचालयो तथा एक विवाह भवन को भी जरूरी सुविधाओं से लैस करने का निर्देश दिया ताकि यहां आने वाले पर्यटकों और शादी विवाह में शामिल वर व वधु पक्ष के लोगो को किसी तरह की कोई परेशानी ना हो। एसडीओ ने मंदिर पर रहने वाले पंडित व अन्य कर्मचारियों के साथ-साथ मंदिर समिति के पदाधिकारी और सदस्यों का भी आई कार्ड बनाने और विभिन्न गाड़ियों पर साटे जाने वाला स्टीकर तैयार कराने के साथ-साथ मंदिर परिसर से लेकर गाड़ी पार्किंग एरिया तक में सीसीटीवी कैमरा लगाने और उसे सही सलामत स्थिति में रखने का भी निर्देश दिया। इस मौके पर मंदिर समिति के अश्वनी सिंह, दीपनारायण सिंह, हरेंद्र सिंह, टूकाई बाबा, रणंजय कुमार रमन के अलावा काफी संख्या में दुकानदार व गणमान्य लोग मौजूद थे।

डीयूएसयू जीत पर अभाविप कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव में चार में से तीन सीटों पर जीत दर्ज की । इस अवसर पर जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा इकाई के द्वारा शहर के नगर पालिका चौक पर एबीवीपी के कार्यकताओं द्वारा आतिशबाजी व रंग गुलाल एवं मिठाई खिलाकर एक दूसरे को बधाई दी गई तथा जश्न मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य रवि पांडे ने कहा कि विद्यार्थी परिषद एक अनुशासित छात्र संगठन है। विद्यार्थी परिषद विद्यार्थियों के लिए हमेशा चिंतित रहने वाला संगठन है। देश में जो टुकड़े-टुकड़े गैंग के मठाधीश बने हुए हैं उन लोगों को अरे हाथ से लेते हुए श्री रवि ने कहा कि यह लोग देश को तोड़ने वाले हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों ने अपना प्रचंड बहुमत विद्यार्थी परिषद को देखकर यह साबित कर दिया के देश विरोधी शक्तियों को छात्र बर्दाश्त नहीं करेंगे विद्यार्थी परिषद की जीत राष्ट्रवाद की जीत है। उक्त अवसर पर विश्वविद्यालय संगठन मंत्री पुरुषोत्तम कुमार, विश्वविद्यालय इकाई अध्यक्ष विशाल कनौजिया, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रितेश प्रकाश,नगर सह मंत्री युवराज रंजन, एसएफएस प्रांत सह प्रमुख आशिष कुमार, रवि सिंह, आदर्श राज,आकाश कुमार, आदित्य कुमार,राकेश कुमार,हिमांशु शेखर, आनंद कुमार आदि उपस्थित थे।

आंगनबाड़ी सेविका-सहायिकाओं की हुई बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

इसुआपुर। इसुआपुर बाजार स्थित धर्मशाला परिसर बिशुनपुरा के प्रांगण में रविवार को आंगनबाड़ी सेविका-सहायिकाओं की बैठक आयोजित की गई। जिसमें प्रखंड की सभी सेविका एवं सहायिकाएं मौजूद थीं। बैठक में सेविका-सहायिकाओं को नियमित करने, मानदेय दोगुना करने तथा लंबित मानदेय के मांगों के निदान को लेकर निर्णायक आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया गया। मांगों को सरकार से मनवाने को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल एवं धरना की रूपरेखा तैयार की गई। आंगनबाड़ी कार्यकताओं ने एकजुटता दिखाते हुए कहा कि इस बार दिनांक 29 सितंबर से निर्णायक लड़ाई शुरू की जाएगी। इस आंदोलन के बारे में डीपीओ एवं सीडीपीओ को भी ज्ञापन दिया जाएगा। बैठक को मुख्य रूप से मनीषा कुमारी, शशि कुमारी, चंदा देवी, नीलम देवी ,मंजू कुमारी शाह ,किरण देवी , नीतू कुमारी, नरगिस बानो ,फलहूम निशा, बेबी खातून, सुल्ताना खातून, मीरा देवी,किशलावती देवी नए संबोधित किया।

मुखिया ने लगाया संध्या चौपाल

प्रात : किरण संवाददाता

मशरक। मशरक प्रखण्ड के मुखिया संघ के अध्यक्ष सह बहरौली पंचायत के मुखिया अजीत सिंह ने अपने पंचायत के श्री राम जानकी मंदिर परिसर में ग्रामीणों के बीच एक संध्या चौपाल लगाए। जिसमे उन्होंने बताया की भारत सरकार की स्वच्छ भारत मिशन के तहत आयोजित स्वक्षता ही सेवा पखवाड़ा के नवें दिन आज संध्या चौपाल लगाया गया है। सरकार की मुहिम है की हर घर से सुखा कचरा और गीला कचरा का शत प्रतिशत उठाव हो। जिसके लिए सरकार ने प्रत्येक वार्ड में दो - दो व्यक्ति का चयन किया है। जो व्यक्ति आपके घर पर प्रति रोज जाकर कचरा उठाव करते है और उसे कचरा भवन तक पहुंचाने और वहां पर छटनी कर जैविक खाद बनाने का काम करते है। वही स्वक्षता पर्यवेक्षक के द्वारा बताया गया की प्रत्येक महीना में उपयोगिता शुल्क के तौर पर एक रूपए की हिसाब से तीस रूपए प्रति महीना देकर रशीद लेना है। मौके पर वार्ड सदस्य राम नरेश कुमार राम, अशर्फी महतो, रंजीत कुमार, सोनू कुमार, सफीक अंसारी आदि लोग उपस्थित थे।

डीएम एसपी के नेतृत्व में देर रात से सुबह तक चला सघन अभियान

छपरा. अवैध बालू के परिवहन, खनन एवं ओवरलोडिंग वाहनों के विरुद्ध डीएम और एसपी का संयुक्त अभियान शनिवार की देर रात्रि से रविवार की सुबह तक चला. इस सघन छापेमारी अभियान में कड़ी कार्रवाई करते हुए बड़ी संख्या में ट्रकों को पकड़ा गया साथ ही लाखों रुपए जुमार्ने लगाए गए। यह छापामारी जिला स्तर पर गठित दंडाधिकारी एवं पुलिस बल के विभिन्न दलों के द्वारा की गई जो गरखा चिरांद रोड, मेंहिया एवं अन्य जगहों पर की गई. छापेमारी के क्रम में अब तक 06 की गिरफ्तारी की गई. खनन विभाग ने इस दौरान 15 ओवरलोडेड वाहनों को जब्त किया इनमे कुछ बगैर चालान वाले बालू लदे ट्रक भी शामिल रहे. इन सब पर संबंधित थाने में प्राथमिकी दर्ज कर अग्रेतर कार्रवाई की जा रही है। जप्त वाहनों पर खनन विभाग सारण ने भी लगभग 40 लाख रुपए का दंड अधिरोपित किया है। वही दूसरी तरफ छापामारी अभियान के क्रम में जिला परिवहन पदाधिकारी ने कुल 25 ओवरलोडेड बालू से लदे ट्रकों पर लगभग 37 लाख रुपए का जुमार्ना अधिरोपित किया. जिला पदाधिकारी ने सख्त एवं स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जिला में किसी भी स्थिति में बालू के अवैध खनन, परिवहन एवं ओवरलोडेड वाहनों के परिचालन पर सख्त कदम उठाकर रोक लगाई जाएगी।

भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए नरेंद्र मोदी जी को देश का प्रधानमंत्री बनाना आवश्यक: विनोद तावड़े

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।भारतीय जनता पार्टी छपरा सारण की कोर कमेटी एवं मंडल अध्यक्षों की बैठक जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह की अध्यक्षता में महाराजगंज और सारण लोकसभा की बैठक राजस्थान होटल के सभागार में आयोजित हुई जिसमें मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री एवं बिहार बीजेपी के प्रभारी विनोद तावड़े ने कहा कि भारत को विश्व गुरु बनाने एक विकसित राष्ट्र बनाने एवं दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करने के लिए केंद्र में एक बार फिर भाजपा की सरकार एवं नरेंद्र मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाना आवश्यक है आज भारतीय जनता पार्टी विश्व की सबसे बड़ी कार्यकताओं की पार्टी हमारे कार्यकर्ता बूथ से लेकर पन्ना प्रमुख तक है हमारा लक्ष्य हर बूथ पर भाजपा की जीत सुनिश्चित करना है इस बार हमारा लक्ष्य 400 से ज्यादा सीटों पर जितना है प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सबसे प्रभावशाली और सशक्त नेता है कार्यकताओं नेताओं एवं पदाधिकारी अब दिन रात एक कर चुनाव की तैयारी में जूट जाना है पूर्व मंत्री एवं बिहार भाजपा के पूर्व अध्यक्ष बंगाल भाजपा के प्रभारी श्री मंगल पांडे ने कहा पूरे देश में भाजपा एवं नरेंद्र मोदी जी की लहर है उनके कामों से समाज का हर तबका प्रभावित जितने कम भाजपा की सरकारों ने किया है।

उतना आज तक 70 सालों में किसी सरकार ने नहीं किया आज भारत पूरी दुनिया में शक्तिशाली वैभवशाली एवं प्रभावशाली देश है आदरणीय नरेंद्र मोदी जी पूरी दुनिया के समय मान्य नेता है अबकी बार 400 के पार इसके लिए कार्यकर्ता रहे तैयार इस मंत्र के साथ हम सभी को चुनाव की तैयारी में जी जान से दिन रात चुनाव की तैयारी में लग जाना है बिहार भाजपा के प्रदेश महामंत्री जगरनाथ ठाकुर ने कहा हर बूथ पर कमल को खिलाना है, हर भूत जितना हम सब कार्यकताओं का लक्ष्य है इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम सभी को अभी से लग जाना है महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने कहा बिहार की सभी 40 सीटों को भाजपा की झोली में डालना हम सभी का लक्ष्य है महाठगबंधन के लोगों का खाता बिहार में नहीं खोलने देना है।

आज के इस बैठक में मुख्य रूप से क्षेत्रीय प्रभारी संतोष रंजन,सह क्षेत्रीय प्रभारी क्रांति यादव,छपरा विधायक डॉ सीएन गुप्ता, पूर्व विधायक अनुशासन समिति प्रदेश अध्यक्ष विनय कुमार सिंह, विधायक कृष्ण कुमार मंटू, प्रदेश प्रभारी किसान मोर्चा ब्रजेश सिंह रमण, प्रदेश भाजपा नेता हेम नारायण सिंह, उपेन्द्र सिंह, जिला अध्यक्ष सीवान संजय पाण्डेय,पूर्व जिला अध्यक्ष गोपालगंज प्रभारी अशोक कुमार सिंह, पूर्व अध्यक्ष रमेश प्रसाद, पूर्व अध्यक्ष वेद प्रकाश उपाध्याय, पूर्व अध्यक्ष बंशीधर तिवारी, पूर्व अध्यक्ष रामदयाल शर्मा,जिला प्रभारी अनूप कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्रत्याशी एवं सारण लोकसभा संयोजक डॉ धर्मेंद्र कुमार सिंह, महाराजगंज लोकसभा प्रभारी अरविंद कुमार सिंह, महाराजगंज लोकसभा संयोजक उमेश तिवारी, रामाकांत सिंह सोलंकी, प्रखंड प्रमुख रिविलगंज राहुल राज, जिला उपाध्यक्ष रमाशंकर मिश्र, अनु सिंह, गायत्री देवी, मनोज गिरी, चैतेंद्र नाथ सिंह, निरंजन शर्मा, जिला महामंत्री विवेक कुमार सिंह, धर्मेंद्र कुमार साह, शत्रुघन भक्त मालेकार, जिला मंत्री अर्जुन सिंह, सुनीता देवी,रामावती देवी,सुमन देवी, रंजन यादव, कोषाध्यक्ष अभय सिंह, जिला कार्यालय मंत्री अर्धदु शेखर, बृजमोहन सिंह, राकेश कुमार सिंह, हेम नारायण सिंह,राणा प्रताप सिंह डब्लू, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष बबलू मिश्रा, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष पुजा शर्मा, युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष राजीव कुमार सिंह, अनुसूचित जाति मोर्चा जिला अध्यक्ष कृष्णा राम,ओ बी सी मोर्चा जिला अध्यक्ष पप्पु चौहान, अल्पसंख्यक मोर्चा जिला अध्यक्ष मेराज अंसारी, विरेन्द्र पाण्डेय,अजीत सिंह, शिवाजी सिंह, गुड्डू चौधरी, हरेंद्र सिंह,मोहन शंकर के साथ साथ सारण एवं महाराजगंज लोकसभा कोर कमेटी के सदस्य, सीवान जिला के पदाधिकारी एवं दोनों लोकसभा के सभी मंडल अध्यक्ष शामिल हुए।

एनटीईपी के तहत सीएचओ का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । टीबी हारेगा देश जीतेगा अभियान को मूर्त रूप देने के लिए राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के तहत वर्ल्ड विजन इंडिया के सहयोग से टीबी निवारण एवं उपचार परियोजना को लेकर कार्यक्रम प्रबंधन (पीएमटीपीटी) से संबंधित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें जिले के

सम्पादकीय

महिला आरक्षण और जातीय जनगणना

महिला आरक्षण बिल पास होने के बाद अब जातीय जनगणना की मांग जोर पकड़ने लगी है। बिहार सरकार पहले ही जातीय जनगणना कर चुकी है। अभी उसका खुलासा नहीं हुआ है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने केंद्र सरकार से जातीय जनगणना कराने की मांग की है। इसके पहले भी इंडिया गठबंधन में शामिल राजनीतिक दलों द्वारा समय-समय पर जातीय जनगणना शुरू करने का दबाव केंद्र सरकार पर बना रहे है। महिला आरक्षण बिल दोनों सदनों से सर्वसम्मति से पास हो जाने के बाद, अब राजनीतिक दलों में जाति जनगणना का सरकार पर दबाव बनाकर चुनौती दी जा रही। लोकसभा चुनाव 2024 को ध्यान में रखते हुए भाजपा ने महिला आरक्षण बिल लाकर महिलाओं के समर्थन पाने का जो सपना देखा था। किसी भी राजनीतिक दल द्वारा उसका विरोध नहीं किया गया। सभी राजनीतिक दलों ने महिला आरक्षण बिल का समर्थन करते हुए पिछड़ा वर्ग एसटी,एससी और अल्पसंख्यक को आरक्षण देने की मांग तेज कर दी है। हिंदुत्व की काट के लिए विपक्षी दलों ने महिला आरक्षण में भी सभी वर्गों की महिलाओं को संसद और विधानसभा में उनकी संख्या के आधार पर अनुपातिक स्थान मिले। इसकी नई लड़ाई राजनैतिक दलों में शुरू हो गई है। राहुल गांधी ने संसद के अंदर भारत के 90 कैबिनेट सचिवों में से मात्र 3 सचिव पिछड़ा वर्ग के होने की बात कहकर पिछड़ा वर्ग का जो उत्पीड़न हो रहा है। इस पर सारे देश का ध्यान आकर्षित करते हुए पिछड़े वर्ग का समर्थन पाने की लड़ाई तेज कर दी है। पंचायती राज अधिनियम में जिस तरह से महिलाओं को वर्ग बार आरक्षण दिया गया है। इसी तरह का आरक्षण त्वरित रुप से लागू करने की मांग को लेकर सरकार और भाजपा पर दबाव बनाया जा रहा है। महिला आरक्षण बिल पास होने के बाद सभी राजनीतिक दलों की महिलाओं में एक नई स्फूर्ति देखने को मिल रही है। भारतीय जनता पार्टी में भी पिछड़े वर्ग के नेता और कार्यकर्ता सक्रिय हो गए हैं। मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने भी महिला आरक्षण में पिछड़े वर्ग की महिलाओं को आरक्षण देने की मांग तेज कर दी है। मध्य प्रदेश में पिछड़े वर्ग की आबादी 50 फीसदी बताई जा रही है। इसको ध्यान में रखते हुए उन्होंने पृथक बुंदेलखंड राज्य की मांग करके अपनी ही पार्टी के ऊपर भारी दबाव बना दिया है। उमा भारती ने 50 फीसदी टिकटें पिछड़ों को देने की मांग कर भाजपा नेतृत्व के लिये परेशानी बढ़ा दी है।

आस्था के केन्द्रों में फैलता विशिष्टता का जहर

डा. रवीन्द्र अरजरिया

जीवन के रागात्मक पक्षों में अध्यात्म का सर्वोच्च महात्व है। ज्योति और परम सत्ता को सभी विभिन्न जीवन शैलियों ने एक स्वर में स्वीकार किया है किन्तु सम्प्रदायों के मध्य चल रही खींचातानी, वर्चस्व की जंग और कट्टरता के प्रदर्शन ने वास्तविक धर्म और धर्म गुरुओं के वचनों के मायनों को हाशिये पर पहुंचाना शुरू कर दिया है। कहीं हिन्दू राष्ट्र की मांग उठ रही है तो कहीं इस्लाम की परम्पराओं को थोपने का षडयंत्र चल रहा है। कहीं खालिस्तान की वकालत करने वाले खूनी जंग छेडने की घोषणायें कर रहें है तो कहीं पाश्चात्य मिशन का साम्राज्य स्थापित करने के प्रयास हो रहे हैं। जीवन पध्दति को प्रभावित करने वाले कारकों को निजता से खींचकर सामूहिकता की दहलीज पर पहुंचा दिया गया है। अजान की आवाज पर इबादत में भागने वालों को शंख और घंटों की आवाजों से परहेज हो रहा है और ऐसा ही प्रतियोत्तर दूसरे पक्ष भी देने लगा है। गुरुवाणी के स्वरों पर प्रार्थना की आपत्ति दर्ज होने लगी है। इन सब के पीछे चन्द षडयंत्रकारियों की वो हरकतें उत्तरदायी हैं जो विदेशी आकाओं के इशारे पर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और संप्रभुता को नस्तनाबूत करने में लगीं है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि समान जीवन शैली अंगीकार करने वालों के मध्य भी ऊंच-नीच की व्यवस्था को जन्म, मान्यताओं, आर्थिक स्थिति, सामाजिक रुतवा, लोकप्रियता जैसे कारकों से आधार पर प्रभावित करना कहां तक उचित है। आस्था के सभी केन्द्रों में विशेष दानदाताओं, राजनैतिक ओहदेदारों, अधिकारियों आदि के लिए अलग से व्यवस्था की जाती है। आम आवाम को दोयम दर्जे का मानकर पंक्तिवध्द होकर अन्दर पहुंचने पर कुछ क्षणों के लिए ही आराध्य को निहारने का मौका दिया जाता है जबकि विशेष प्रबंध के साथ लाव लश्कर लेकर पहुंचने वाले विशिष्ठजनों की आवभगत में आस्था के केन्द्र का पूरा तंत्र ही हाथ बांधे खडा हो जाता है। परमात्मा के दरवाजे भी भेदभाव के साथ श्रध्दालुओं के लिए खोले और बंद किये जाने लगे हैं। पंक्तियां छोटी - बडी हो जातीं हैं। घंटों लाइन में चलने के बाद लक्ष्य तक पहुंचने वाले आस्थावानों को भीड का हिस्सा बनाकर धक्का देने वाला तंत्र ही विशिष्ट व्यक्तियों के सामने गुलाम बनकर खडा रहता है। लम्बी दूरी तय करके उधार के पैसों से आस्था से जुडी मान्यताओं को पूरा करने हेतु पहुंचे मेहनतकश को दिये जाने वाले धक्के निश्चय ही वहां मौजूद परम तत्व को निश्चय ही स्वीकार नहीं होंगे। पक्षपात करने वाली व्यवस्था को अनेक आस्था स्थलों ने अपने संविधान में भी शामिल कर लिया है ताकि संस्था के निजी संविधान की आड में अफसरों, नेताओं, पूंजीपतियों, भारी दानदाताओं, भाई-भतीजों को सुविधायें देकर व्यक्तिगत संबंधों का दायरा बढाया जा सके। साम्प्रदायिक संस्थाओं के व्यवस्था तंत्र में गुटबाजी का मकडजाल फैलता जा रहा है जो व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति के आरोप-प्रत्यारोप को निरंतर प्रचारित करके स्वयं को समर्पित कार्यकर्ता निरूपित करने में जुटा है। निजी हितों की पूर्ति में लगे लोगों के गुट किसी भी दशा में संस्था, संस्था से जुडे श्रध्दावानों तथा समाज के लिए हितकर कदापि नहीं कहे जा सकते। यही गुट अपने अहम् की पूर्ति के लिए वाक्य युध्द से लेकर रक्तरंजित आक्रमणों तक पहुंच जाते हैं। देश-दुनिया में कथित धर्म की आड लेकर षडयंत्रों को मूर्त रूप दिया जा रहा है जबकि वास्तविक धर्म तो ज्ञान की पराकाष्ठा पर पहुंच कर परम तत्व की प्राप्ति के उपाय करना है। सोच, सांसारिकता और संचय की प्रवृत्ति का निजीकरण होते ही वैमनुष्यता का परचम फहराने लगा है। अपने और अपनों के लाभ के अवसर तलाशे जाने लगे हैं। जन समुदाय के व्दारा अभिवादन करने को सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदण्ड माना जाने लगा है। पैसों की चमक से भौतिक उपकरणों का ढेर लगाना ही आज सम्पन्नता का पैमाना बन गया है। संविधान के विपरीत खुलेआम काम करने वाली अनुशासनहीनता का प्रदर्शन अब दबंग होने की परिभाषा बनती जा रही है। भय, लालच और मजबूरी में जकडे निरीहों को सोने के सिंहासन पर बैठे रुतवेदारों के सामने गिडगिडाते हुए अक्सर देखा जाता है। थाना, कचहरी और संवैधानिक तंत्र से समानान्तर दबंगों की निजी सत्ता चल रही है। यह सत्ता आस्था के नाम पर श्रध्दावानों की भीड जुटाकर पैसों की चमक से नेतृत्व पर कब्जा कर लेती है और फिर शुरू हो जाती है तुष्टीकरण की व्यवहारिक परिणति। श्रध्दावानों के कथित मुखिया के रूप में स्थापित होते ही दबंग व्दारा आस्था के केन्द्र का प्रमुख पद हथिया लिया जाता है। बस यहीं से शुरू हो जाता है श्रध्दावानों को बरगलाने का सिलसिला। कहीं आक्रान्ताओं के जुल्मों की दास्तानें सुनाकर आक्रोशित वातावरण का निर्माण होता है तो कहीं लम्बे समय तक सुल्तान के रूप में स्थापित रहने वालों को अपने अतीत की वापसी का पाठ पढाया जाता है। कहीं पाश्चात्य मान्यताओं को थोपने हेतु धन की चमक फैलाई जाती है तो कहीं छल-बल-दल के साथ सब्जबाग दिखाने का तूफानी प्रयास होता है। आस्था के केन्द्रों में फैलता विशिष्टता का जहर अब घातक स्थिति पर पहुंच चुका है। इन केन्द्रों में जब तक आगन्तुकों को एक भाव से नहीं देखा जायेगा तब तक महापुरुषों, परमात्मा के संदेश वाहकों और पुत्रों के वचनों के प्रभाव परिलक्षित हो ही नहीं सकते। आक्रान्ताओं की विभाजनकारी नीतियों को आस्था के केन्द्रों पर लागू करके आपसी सौदार्य के वातावरण को कब्र में पहुंचाने वालों की संख्या में निरंतर इजाफा होता जा रहा है। विश्वास को अंध विश्वास में, श्रध्दा को अश्रध्दा में और धार्मिकता को अधार्मिकता में परिवर्तित करने के कुप्रयास निरंतर हो रहे हैं। आस्था के केन्द्रों को बिना पैसे का व्यवसाय बनाने वालों ने अब अपने साथ खद्दर, खाकी और खतरों को शामिल करना शुरू कर दिया है। इन तीनों का उपयोग करने वाला पर्दे के पीछे से सक्रिय होकर विश्व गुरू की पदवी पर पुनः आसीन होने वाले राष्ट्र को समाप्त करने में एक साथ जुट गये हैं तभी तो बेटों की कुर्बानियां देने वालों के कुछ कथित अनुयायी आज कुर्बानियां लेने वालों के चन्द सिक्कों पर जीभ लपलपा रहे हैं। देश, धर्म और समाज के लिए जान निछावर करने वालों की इबारतों पर कथित ठेकेदारों ने कब्जा करके अपनी व्याख्यायें पेश करना शुरू कर दी है। ऐसे में आम आवाम के जागरूक हुए बिना सकारात्मक परिणाम आना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। इस सप्ताह बस इतना ही। अगले सप्ताह एक नई आहट के साथ फिर मुलाकात होगी।

ओबीसी के नाम पर बेवकूफ बंनाने का ड्रामा

काट दिया गया है। इन दो नफरतों के कारण जरूरत ही समाप्त हो चुकी है। बेहतर है आप आरक्षण के महत्व को समझें। उसके नाम पर खुद को मुख्यधारा से अलग न करें। अपने भीतर जातिगत नफरत को मिटाइये। थोड़ी कोशिश करेंगे तो इस नफरत से मुक्ति मिल जाएगी। आप अच्छा महसूस करेंगे। सभी समाज के लोगों को यह बात समझनी चाहिए कि आरक्षण के कारण अवसर खत्म नहीं होते हैं। अवसर खत्म होते हैं दूसरी नीतियों के कारण। चार पूँजीपतियों की पूँजी बढ़ती रहे इसके लिए आर्थिक नीतियों का जाल बिछाने के कारण अवसर समाप्त होते हैं। लोग यह समझ नहीं पाते हैं कि उनकी नौकरी में रुकावट आरक्षण नहीं है। अवसर की कमी है। सरकार की मूर्खतापूर्ण हरकतों के कारण अवसर समाप्त हो चुके हैं। प्राइवेट हों या सरकारी क्षेत्र में। ये आरक्षण के कारण नहीं हुआ है। चूँकि आप आर्थिक जगत के मुश्किल खेल को नहीं समझ पाते तो फिर से आरक्षण पर पहुँच जाते हैं कि इसकी वजह से नौकरी नहीं मिल रही है।

डॉ. सत्यवान सौरभ
लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं

सांप्रदायिकता और आरक्षण ने भारी संख्या में युवाओं का मानसिक और राजनीतिक विकास रोक दिया है। उन्हें कुंठित बना दिया है। उनकी जरूरत समाप्त हो चुकी है क्योंकि वे सामाजिक न्याय की मुख्यधारा से कट गए हैं। काट दिया गया है। इन दो नफरतों के कारण जरूरत ही समाप्त हो चुकी है। बेहतर है आप आरक्षण के महत्व को समझें। उसके नाम पर खुद को मुख्यधारा से अलग न करें। अपने भीतर जातिगत नफरत को मिटाइये। थोड़ी कोशिश करेंगे तो इस नफरत से मुक्ति मिल जाएगी। आप अच्छा महसूस करेंगे। सभी समाज के लोगों को यह बात समझनी चाहिए कि आरक्षण के कारण अवसर खत्म नहीं होते हैं। अवसर खत्म होते हैं दूसरी नीतियों के कारण। चार पूँजीपतियों की पूँजी बढ़ती रहे इसके लिए आर्थिक नीतियों का जाल बिछाने के कारण अवसर समाप्त होते हैं। लोग यह समझ नहीं पाते हैं कि उनकी नौकरी में रुकावट आरक्षण नहीं है। अवसर की कमी है। सरकार की मूर्खतापूर्ण हरकतों के कारण अवसर समाप्त हो चुके हैं। प्राइवेट हों या सरकारी क्षेत्र में। ये आरक्षण के कारण नहीं हुआ है। चूँकि आप आर्थिक जगत के मुश्किल खेल को नहीं समझ पाते तो फिर से आरक्षण पर पहुँच जाते हैं कि इसकी वजह से नौकरी नहीं मिल रही है। जबकि जिन्हें आरक्षण मिला है उन्हें भी नौकरी नहीं मिल रही है।

अब आते हैं ओबीसी पर। केवल केंद्र सरकार के संस्थानों में शिक्षकों के खाली पदों को जोड़ लें तो पता चलेगा कि ओबीसी के चालीस से साठ फीसदी तक पद खाली हैं। ओबीसी कोटे की 16000 मेडिकल सीटों का चले जाना किसी अपराध से कम नहीं है। यूजीसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक देश भर के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में मात्र 09 ओबीसी प्रोफेसर पढ़ा रहे हैं जबकि स्वीकृत पद 304 हंव तो ओबीसी को भी वाजिब हक नहीं मिल रहा है। ओबीसी नेता के राज में ओबीसी को भी नौकरी नहीं मिल रही है। वर्ना केवल केंद्रीय विश्वविद्यालयों में कई हजार ओबीसी के नौजवान लेक्चरर बन गए होते। कितना बड़ा सामाजिक बदलाव होता। इन पदों पर बहालियां होती हैं तो सभी नौजवानों को भी लाभ मिलता। आरक्षण का अभिप्राय भी प्रतिनिधित्व से ही है। यह प्रतिनिधित्व धीरे-धीरे महिला, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग एवं दिव्यांग और हाल में आर्थिक रूप से पिछड़े समाज के लिए भी किया गया है। अब आरक्षण तो लागू हो गया लेकिन उसे जमीन पर लाने की जिम्मेदारी जिन कंधों पर थी, वह सभी जातिवादी मानसिकता से ग्रस्त, गैर-समता में विश्वास करने वाले थे। यही कारण है कि आज भी चतुर्थ श्रेणी को छोड़ कहीं पर भी आरक्षित वर्ग को प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया है। क्या उपयुक्त पद के लिए आरक्षित वर्ग के कैंडिडेट नहीं मिलते अथवा मानसिक बीमारी के कारण इस वर्ग का समावेशन नहीं किया जा रहा है।

पिछले कई वर्षों में देश भर के केंद्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों में ओबीसी आरक्षित वर्ग की सीटों को नहीं भरा गया। देश के कई विश्वविद्यालय में तो अधिकतर पदों पर यह लिख दिया गया कि हमें ओबीसी आरक्षित वर्ग में कोई भी उपयुक्त अभ्यर्थी नहीं मिला। इसलिए सभी पद खाली रख लिए गए ताकि बाद में इनको सामान्य वर्ग से भर दिया जाये। अब आप सोच सकते है कि किस सोच के साथ उपयुक्त नहीं-लिख कर आरक्षित वर्ग को कमतर बताने का प्रयास किया गया है। आप देखेंगे तो पाएंगे कि देश भर के संस्थानों में ओबीसी के लोगों के साथ सभी में यही हाल है। ओबीसी की अधिकतर सीटों पर एनएफएस (कोई भी उपयुक्त अभ्यर्थी नहीं मिला) लगा दिया है। आज एनएफएस को लेकर देश भर के आरक्षित वर्ग में काफी रोष है। अब सवाल यह उठता है कि पिछड़े वर्ग के अभ्यर्थियों को एनएफएस किया जाना, कुछ लोगों की जातिवादी मानसिकता का परिचायक तो नहीं है। क्या ये लोग अपने विवेक का इस्तेमाल बेईमानी के लिए करते हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा तो ये समस्या एक दिन विकराल रूप बन जाएँगी।

आंकड़ों का अध्यन करें तो हम पाएंगे कि देश के कुल केंद्रीय विश्वविद्यालयों में अन्य पिछड़ा वर्ग में केवल 5 उप-कुलपति है। अगर रजिस्ट्रार देखें तो पिछड़े समाज के तीन हैं। देश के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर की तय सीटों की मात्र 4.5 प्रतिशत ही भरी गई हैं। अमूमन यही स्थिति एसोसिएट और असिस्टेंट प्रोफेसर में भी है। सीटों के खाली रहने के साथ-साथ ओबीसी के साथ क्रीमीलेयर का घटिया खेल खेलकर उनको कहीं का भी नहीं छोड़ा जा रहा है जिसकी वजह से उनका जाति का सर्टिफिकेट तक छिना जा रहा है।

छह या आठ लाख की मामूली सीमा से ओबीसी का हक मारकर आने वाली पीढ़ियों को पंगु बनाया जा रहा है जबकि अन्य आरक्षित वर्गों में न तो कोई क्रीमीलेयर है न कोई और बाध्यता? जिसकी वजह से इन वर्गों के बड़े-बड़े अफसरों के बच्चे भी पीढ़ियों तक आरक्षण का फायदा उठा पाएंगे। देखें तो भारत में कुल आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा ओबीसी आरक्षित वर्ग से आता है लेकिन इसी वर्ग की हालत कोई खास अच्छी नहीं दिखती। जिस तरह से प्रतिष्ठित संस्थानों में जाति के आधार पर योग्य और अयोग्य होने का खेल खेला जाता है, वह शर्मनाक है। हालांकि, ओबीसी अभ्यर्थियों के साथ किया गया यह धोखा कोई नया नहीं है। गत वर्ष यानी 2022 में शिक्षा मंत्रालय ने एक लिखित जवाब में देश के उच्च सदन राज्य सभा को बताया था कि केंद्रीय विश्वविद्यालयों में 880 प्रोफेसरों के पद सहित 3,669 आरक्षित श्रेणी के शिक्षण पद रिक्त हैं। इसमीं 1761 पद ओबीसी के रिक्त हैं। संविधान में दिए गए अधिकारों के लिए जब देश के एक बड़े समाज को लड़ना पड़ेगा तो ऐसे में भारत कैसे मजबूत राष्ट्र बनेगा। सबका साथ सबका विकास के साथ सबका विश्वास होना भी जरूरी है। देश में हिस्सेदारी के सवाल पर देश के बड़े वर्ग के भीतर निस्संदेह कुछ बेचैनी और असंतोष है, जिसका समाधान सरकार के पास ही है। बड़े समाज को पीछे छोड़ हम अपने देश को सशक्त नहीं कर सकते। क्या यह कहना उपयुक्त नहीं है कि सारे तथ्यों को जानते हुए भी सरकारों द्वारा ओबीसी वर्ग के साथ धोखा किया जा रहा है?

चुनाव से ठीक पहले विपक्षी गठबंधन में शामिल होकर सबको चौंका सकती हैं मायावती

वैसे तो पिछले दो दशकों में बसपा लगातार कमजोर हुई है, लेकिन अभी भी उसके पास 14 फीसदी दलित वोट बैंक मौजूद है। इसी के चलते बसपा से सब हाथ मिलाना चाहते हैं, तो मायावती को भी अपनी इस ताकत पर गुमान है, जिसके चलते वह फूंक-फूंक कर कदम आगे बढ़ा रही हैं, तो बसपा से हाथ मिलाने को इच्छुक नजर आ रहा एनडीए और आईएनडीआईए गठबंधन भी कुछ बोलने को तैयार नहीं है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि दोनों गठबंधन के नेताओं ने हार मान ली हो। सूत्र बताते हैं कि गुपचुप तरीके से मायावती को अपने खेमे में लाने के लिए दोनों गठबंधन दलों के आकाओं द्वारा लखनऊ से लेकर दिल्ली तक में साथ जोड़ने की कोशिश की जा रही है। बताते हैं कि लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती के भाजपा और कांग्रेस गठबंधन से दूरी बनाकर चलने के चलते आईएनडीआईए गठबंधन को यूपी में लोकसभा की 80 सीटों पर करारा झटका लग सकता है।

स्वदेश कुमार
वरिष्ठ पत्रकार और पूर्व राज्य सूचना आयुक्त, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी बड़ा चुनावी फैक्टर बन गयी है। बसपा सुप्रीमो मायावती किसी भी पार्टी के साथ हाथ मिलाने को तैयार नहीं हैं जिसके चलते राजनीति के गलियारो में हड़कम्प मचा हुआ है। वैसे तो पिछले दो दशकों में बसपा लगातार कमजोर हुई है, लेकिन अभी भी उसके पास 14 फीसदी दलित वोट बैंक मौजूद है। इसी के चलते बसपा से सब हाथ मिलाना चाहते हैं, तो मायावती को भी अपनी इस ताकत पर गुमान है, जिसके चलते वह फूंक-फूंक कर कदम आगे बढ़ा रही हैं, तो बसपा से हाथ मिलाने को इच्छुक नजर आ रहा एनडीए और आईएनडीआईए गठबंधन भी कुछ बोलने को तैयार नहीं है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि दोनों गठबंधन के नेताओं ने हार मान ली हो। सूत्र बताते हैं कि गुपचुप तरीके से मायावती को अपने खेमे में लाने के लिए दोनों गठबंधन दलों के आकाओं द्वारा लखनऊ से लेकर दिल्ली तक में साथ जोड़ने की कोशिश की जा रही है। बताते हैं कि लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती के भाजपा और कांग्रेस गठबंधन से दूरी बनाकर चलने के चलते आईएनडीआईए गठबंधन को यूपी में लोकसभा की 80 सीटों पर करारा झटका लग सकता है। ऐसे में आईएनडीआईए एक बार फिर मायावती पर डोरे डालने में लग गया है। बसपा नेत्री मायावती से गुपचुप तरीके से बातचीत की जा रही है क्योंकि चुनाव जीतने के लिए इंडिया गठबंधन यूपी में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता है।

बताते चलें कि बसपा के बिना सपा-कांग्रेस एक साथ मिलकर 2017 का विधानसभा चुनाव लड़ के देख चुके हैं जिसका कोई फायदा इन दोनों दलों को नहीं हुआ था इसीलिए इस बार मायावती को भी जोड़ने की कोशिश की जा रही है। बसपा को साथ लाने की कोशिश में यूपी के विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस और बसपा के शीर्ष नेताओं के बीच बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ था। अभी तक यह बातचीत अपने मुकाम तक तो नहीं पहुंच सकी थी, लेकिन तब से दोनों के बीच संवाद बना हुआ है। इसमें गांधी परिवार और उसके करीबी शामिल हैं। राजनीतिक सूत्रों के मुताबिक पिछले महीने कांग्रेस की नेता प्रियंका गांधी और बसपा सुप्रीमो मायावती के बीच गठबंधन को लेकर गुप्त रूप से चर्चा भी हो चुकी है। बसपा की ओर से उसके एक पूर्व सांसद की भी इस बातचीत में अहम भूमिका है।

गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव से पहले बसपा-कांग्रेस की गठबंधन की कोशिशें परवान नहीं चढ़ पाई थीं। तब तय हुआ था कि विधानसभा की 125 सीटों पर कांग्रेस और शेष 278 सीटों पर बसपा लड़ेगी। खबरें लीक हुईं और फिर सत्ता पक्ष की ओर से ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी गईं कि दोनों ही दलों को कदम पीछे खींचने पड़े। चुनाव के बाद राहुल गांधी ने सार्वजनिक रूप से कहा भी था कि हम बसपा को आगे रखकर यूपी में विधानसभा चुनाव लड़ना चाहते थे, पर वह तैयार नहीं हुई। इस बार लोकसभा चुनाव के ऐन पहले ही आधिकारिक रूप से घोषणा करने की रणनीति है। दूसरी तरफ कहा यह भी जा रहा है कि क्या आईएनडीआई गठबंधन में बसपा के आने से सपा सहज रहेगी, इसका जवाब मुश्किल है, लेकिन कांग्रेस नेतृत्व, यूपी में बसपा को साथ लाने में ज्यादा रुचि ले रहा है। इसकी वजह है कि बसपा के पास अभी भी 14 फीसदी दलित वोट बैंक है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय का बागेश्वर (उत्तराखंड) विधानसभा सीट को लेकर सपा के खिलाफ दिया गया बयान भी इसी कवायद से जोड़कर देखा जा रहा है।

बताया जा रहा है कि अजय राय ने यह बयान हाईकमान से इशारा मिलने के बाद ही दिया था। संभावना जताई जा रही है कि जैसे-जैसे कांग्रेस की बसपा के साथ बात आगे बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे इस तरह के और बयान भी आ सकते हैं। गांधी परिवार के नजदीकी नेता के मुताबिक वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में सपा के साथ कांग्रेस के अनुभव अच्छे नहीं रहे। उस चुनाव में कांग्रेस को ज्यादा सीटें देने की बात सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव लगातार कहते रहे, लेकिन 145 सीट देने के वादे के बावजूद कांग्रेस को 105 सीटें दी गईं। इसमें से करीब 10 सीटों पर सपा ने अपने प्रत्याशी को पंजे पर चुनाव लड़वाया था।

बहरहाल, जिस तरह से आईएनडीआईए गठबंधन में बसपा को लाने की कोशिश की जा रही है, उससे बसपा अपर हैंड में नजर आ रही है। बसपा यदि कांग्रेस-सपा गठबंधन के साथ चुनाव लड़ती है तो वह अपनी मर्जी वाली सीटों पर चुनाव लड़ेगी और ऐसी सीटों की संख्या भी अधिक होगी। बसपा 20 से 25 सीटों तक के लिए अपनी दावेदारी पेश कर सकती है। बसपा की दावेदारी को ना करना सपा, कांग्रेस के लिए आसान नहीं होगा। अगर वह बसपा को उसकी इच्छा के अनुसार सीट नहीं देती है तो बसपा के बगैर चुनाव लड़ने पर सपा-कांग्रेस गठबंधन को बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है। वहीं बसपा यदि भाजपा के साथ चली गई तो आईएएनडीआई के लिए लड़ाई और भी मुश्किल हो सकती है।

महिला आरक्षण: बातें हैं बातों का क्या?

तनवीर जाफरी

महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिये जाने वाला बहुप्रतीक्षित महिला आरक्षण विधेयक जिसे वर्तमान सरकार ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम का नाम दिया है, कई दशकों की प्रतीक्षा के बाद लोकसभा में ऐतिहासिक बहुमत के साथ पारित हो गया। इस विधेयक के समर्थन में 454 मत पड़े जबकि 2 मत इस के विपक्ष में भी पड़े। गोया लगभग पूर्ण बहुमत से इसे संसद ने पारित कर दिया। सदन में महिला आरक्षण विधेयक पारित होते ही सत्ता और विपक्ष दोनों में इसका श्रेय लेने की होड़ मच गयी। कांग्रेस ने इसे अपना बहुप्रतीक्षित विधेयक बताया जबकि संसद के नये भवन में इस पहले विधेयक को पारित कराकर भारतीय जनता पार्टी इसे चुनाव पूर्व का अपना मास्टर स्ट्रोक बता रही है। इस विधेयक में कहा गया है कि लोकसभा, राज्यों की विधानसभाओं और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। इस विधेयक के पारित होने के बावजूद महिलाओं को आरक्षण का लाभ कब से मिलना शुरू होगा इसका किसी को ज्ञान नहीं। केवल कयास लगाए जा रहे हैं। किस वर्ग की महिलाओं को मिलेगा यह भी पता नहीं है। और कैसे मिलेगा यह भी स्पष्ट नहीं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के नाम से पारित हुये इस अधिनियम में संविधान के 128 वें संशोधन में लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं को 33% आरक्षण देने का प्रावधान है। हालांकि इसी वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव व 2024 में प्रस्तावित लोकसभा के आम चुनाव में महिला आरक्षण लागू होना असंभव है। क्योंकि महिला आरक्षण के ड्राफ़्ट के अनुसार इस कानून के बनने के बाद होने वाली पहली जनगणना और फिर सीटों के परिसीमन के बाद ही महिलाओं हेतु आरक्षित सीटों का निर्धारण किया जायेगा। जबकि 2010 में यू पी ए के शासनकाल में राज्यसभा में महिला आरक्षण सम्बन्धी जो पिछला विधेयक पारित हुआ था उसमें परिसीमन की शर्त नहीं थी। और भाजपा ने भी उस समय परिसीमन जैसी किसी शर्त के बिना ही उस विधेयक का समर्थन किया था। सवाल यह है कि आज जब भाजपा सरकार महिला आरक्षण को लागू करने के लिए अधिनियम बना रही है तो उसे सबसे पहले परिसीमन से जोड़ने की आवश्यकता क्यों महसूस हो रही है? क्या इसी लिये नए नारी शक्ति वंदन अधिनियम में महिला सीटों के आरक्षण के लिए अनुच्छेद 334ए जोड़ा गया है। जिसमें कहा गया है महिला आरक्षण के लिए परिसीमन अनिवार्य होगा? माना जा रहा है कि परिसीमन का मकसद लोकसभा सीटें बढ़ाना भी हो सकता है। गौरतलब है कि 2021 में होने वाली जनगणना भी अभी तक नहीं हुई है। यदि सब कुछ निर्बाध रूप से और बिना किसी टाल मटोल के हुआ तो शायद महिला आरक्षण 2026 से लागू हो सके अन्यथा अनिश्चितता की सूरत बनी रहेगी। हालांकि सरकार ने यह जरूर बता दिया है कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम लागू होने से लोकसभा में महिलाओं की संख्या 82 से बढ़कर 181 हो जाएगी। यह भी बताया गया है कि 15 वर्ष के लिए आरक्षण का प्रावधान है हालांकि संसद को इसे बढ़ाने का अधिकार होगा।

बहरहाल महिला आरक्षण विधेयक पारित होने के बाद अनेक विश्लेषकों व राजनीतिज्ञों की तरह तरह की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। कांग्रेस चाहती है कि इसे तत्काल लागू किया जाये। इसे लागू करने के लिए जनगणना या परिसीमन की कोई जरुरत नहीं है। जबकि कुछ का मत यह भी है कि जब महिलाओं को आधी आबादी कहकर सम्बोधित किया जाता है तो उनके लिये आरक्षण भी 33 प्रतिशत क्यों,50 प्रतिशत क्यों नहीं? और यदि वास्तव में सरकार की नीयत महिला आरक्षण अधिनियम को लेकर साफ है तो परिसीमन व जनगणना जैसे बहानों की जरुरत क्या? जिस तरह भाजपा द्वारा दिल्ली के पार्टी मुख्यालय में महिलाओं को इकठ्ठा कर बाकायदा जश्न मनाकर प्रधानमंत्री का महिला आरक्षण अधिनियम के लिये पार्टी की महिलाओं द्वारा धन्यवाद किया गया और उन्हें महिलाओं का इस सदी का सबसे बड़ा नायक व इतिहास पुरुष बताने की कोशिश की गयी उससे कम से कम एक बात तो स्पष्ट है कि बावजूद इसके कि आगामी विधानसभा व लोकसभा किन्हीं भी चुनावों में महिला उम्मीदवारों के लिए इस आरक्षण का कोई लाभ नहीं मिलेगा परन्तु इसके बावजूद यह भी तय है कि महिला आरक्षण का यह मुद्दा निकट भविष्य के सभी चुनावों में मुख्य मुद्दा बनने वाला है। इसे इसलिये जरूर सरकार का मास्टर स्ट्रोक कहा जा सकता है कि सरकार ने आधी आबादी के प्रति अपनी हमदर्दी का सन्देश भी दे दिया और पुरुषों का वर्चस्व भी फिलहाल यथावत बना रहने दिया। तो क्या केवल चुनावी लाभ हासिल करने की गरज से ही यह सारी कवायद की गयी? जिस तरह संसद के नये भवन में महिला आरक्षण के रूप में पहला विधेयक पेश किया गया और उसे ऐतिहासिक समर्थन के साथ पूर्ण बहुमत से पारित भी करा लिया गया इससे बेशक यह संकेत तो मिलता है कि सरकार आधी आबादी की हित चिंतक है। परन्तु इन सवालों से भी यही सरकार कैसे बच सकती है कि जब इसी वर्ष 28 मई को नये संसद भवन का उद्घाटन किया गया था उस समय देश की महिला राष्ट्रपति को इस भवन के उद्घाटन हेतु क्यों आमंत्रित नहीं किया गया था? जबकि वह उनका अधिकार भी था और यदि वे उद्घाटन करतीं तो राष्ट्रपति के महिला होने के नाते आज अच्छा सन्देश भी जाता? और जब बात नये संसद भवन के उद्घाटन की होती है तो उस दिन को देश इसलिये भी नहीं भूल सकता क्योंकि उसी दिन विश्व में देश का नाम रोशन करने वाली महिलाओं ने जो एक भाजपा सांसद द्वारा उनका यौन शोषण किये जाने के चलते जंतर मंतर पर धरना दे रही थीं उन्होंने उसी 28 मई को नये संसद भवन के सामने महिला पंचायत आहूत की थी जिसे सरकार ने बलपूर्वक होने नहीं दिया। यहाँ तक कि महिला खिलाड़ियों का तम्बू भी धरना स्थल से उखाड़ फेंका। महिला आरक्षण पर हुई चर्चा के दौरान पंजाब की सांसद हरसिमरत कौर बादल ने भी अपने भाषण में जहां देश में महिलाओं की वास्तविक स्थिति बयान करने की कोशिश की वहीं वे यह बताने से भी नहीं चूकीं कि महिला खिलाड़ियों के यौन शोषण का आरोपी भाजपा सांसद इस समय भी लोक सभा में मौजूद है। तृणमूल कां

संक्षिप्त खबरें

देव सूर्य मंदिर में 24 घंटे के अखंड कीर्तन का आयोजन

औरंगाबाद। जिले की सूर्य नगरी देव सूर्य मंदिर प्रांगण में 24 घंटे के अखंड कीर्तन का आयोजन किया गया। यह अखंड कीर्तन सुबह 9 बजकर 40 मिनट पर शुरू हुआ जो सोमवार को सुबह 9 बजकर 40 मिनट पर समाप्त होगा। इसमें श्रोता के रूप में जितेन्द्र कुमार यादव और ब्रजेश गिरी शामिल हुए। विदित हो कि यह अखंड कीर्तन का आयोजन देव प्रखंड के रघुनंदन बीघा, रावल बीघा, हसौली, कोइरी बीघा व कुंडा गांव एवम सदर प्रखंड के कामा बीघा गांव के लोगों के आर्थिक और शारीरिक सहयोग से किया जाता है। लगभग 100 वर्ष पहले से ही यह आयोजन होते आ रहा है। इसका संचालन मनोज सिंह एवं डिस्को सिंह के द्वारा किया गया। इस मौके पर रामजी चौहान, अक्षयवर यादव, रामस्वरूप यादव, जनेश्वर यादव, प्रमोद सिंह, अशोक सिंह, सियाराम सिंह, रविन्द्र सिंह, अरविंद सिंह, रविन्द्र सिंह, अजीत सिंह, रामदयाल यादव, मीता राम, नन्हू राम, रामस्वरूप महतो, सुरेश महतो, राजा पासवान, मनीष सिंह, टी एन सिंह, संतोष साव, अमरेश गिरी, अरुण गिरी, रामजनम यादव, विनय राम, गणेश पासवान, अंजय गिरी सहित कई लोग उपस्थित हुए।

गणेश महोत्सव के पांचवें दिन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर में नौ दिवसीय गणेश महोत्सव के पांचवें दिन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि विधायक प्रतिनिधि प्रदीप कुमार सिंह, जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी, समाजसेवी राम पुकार ओझा, राणा सुनील सिंह, आचार्य प्रेमचंद पांडेय एवं संचालक राजेश रंजन ने दीप प्रज्वलित करके किया। संबोधन के क्रम में मुख्य अतिथि ने कहा कि इस तरह के प्रतियोगिता से बच्चों में मानसिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक विकास भी होता है। बच्चों में बचपन से ही कंप्टीशन की भावना बरकरार हो जाती है और वे पढ़ाई में विशेष ध्यान देने लगते हैं। विदित हो कि लगातार 11वर्षों से गणेश पूजा के आयोजन में प्रतिवर्ष क्विज प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती रही है प्रायोजक की भूमिका युवा सामाजिक संस्था द्वारा निभाई जाती है।मौके पर अध्यक्ष शुभम गुप्ता, सचिव लव कुमार शर्मा, शिक्षक रविकांत कुमार की विशेष सहभागिता रही। क्विज प्रतियोगिता में कक्षा 5, 6 ,7 के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

बाइक की ठोकर से जख्मी की उपचार के दौरान मौत

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के सलखन्नी में बाइक की ठोकर से जख्मी व्यक्ति की उपचार के दौरान आईजीआईएमएस पटना में मौत के बाद मृतक के पुत्र के द्वारा दी गई फर्द बयान के आधार पर विभूतिपुर थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। फर्द बयान के माध्यम से पीड़ित रोसड़ा थाना क्षेत्र के रहुआ निवासी मृतक रामदेव सहनी के पुत्र अजीत कुमार सहनी ने बताया कि मेरे पिता सलखन्नी गांव के ईंट भट्ठा पर काम करते थे। 3 सितंबर को साईकिल से काम करने जा रहे थे तभी सलखन्नी गांव में एक मोटरसाइकिल पंजीयन संख्या 33 एजेड 9644 के चालक धक्का मार दिया। जिसमें मेरे पिता गंभीर रूप से जख्मी हो गए। स्थानीय क्लीनिक में उपचार के बाद आईजीआईएमएस पटना में उपचार के दौरान उनकी मौत हो गया।

मैत्रीपुल एसएसबी पोस्ट लगते ही पकड़ में आया पहला मानव तस्करी का केस

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। भारत-नेपाल बॉर्डर एक रास्ते एक 40 वर्षीय शादीशुदा इमरान खान एक 17 वर्षीय लड़की को नेपाल ले जाने की कोशिश में था। किंतु मानव तस्करी रोधी इकाई क्षेत्रक मुख्यालय एसएसबी कार्यालय की नजरों से ना बच सका और पकड़ा गया। सीमा पर बने मैत्रीपुल पर एसएसबी पोस्ट की तैनाती होते ही तीसरे दिन ही पकड़ में आ गया। बताते चले कि पहले ये एसएसबी पोस्ट कस्टम के पीछे इंडियन आयल के पास ही रहती थी तो सभी ई-रिक्शा, वाहनो, लोगों को की स्क्रीनिंग नहीं हो पाती थी, पर अब सभी वाहनो, ई रिक्शा, लोगों को एसएसबी पोस्ट के सामने से हो कर गुजरना पड़ रहा है। इसलिए एसएसबी की निगरानी और अधिक अच्छी हो गयी है तो ये 40 वर्षीय इमरान खान भी आम यात्रियों की तरह ही नाबालिग लड़की को ले कर निकल रहा था, तभी मानव तस्करी रोधी इकाई टीम की नजर इस पर पड़ी तो हल्का सा संदेह हुआ तो इसे रोक लिया गया।

फिर एनजीओ प्रयास एड जुबेनाइल सेंटर रक्सौल को नाबालिग लड़की की काउंसिलिंग करने के लिए बुलाया गया। जब इंस्पेक्टर मनोज कुमार शर्मा ने पूछताक्ष की तब मे पता चला कि ये व्यक्ति विदेश में कुवैत में काम करता है और उसके 05 बच्चें एक बीवी है।

एक गरीब नाबालिग लड़की के सम्पर्क मे आया और उसको नेपाल घुमाने के लिए और खूब खर्चा करने का लालच दे कर नेपाल ले जाने की कोशिश कर रहा था। बताते चलें कि मानव तस्करी में लिप्त लोग सबसे पहले पीड़ितों का भरोसा जीतते हैं और इसके लिए वो एक दो वर्ष का समय और पैसा खर्च करते हैं फिर जब अवसर मिलता है लड़कियों को नर्क जैसी जिंदगी में झोंक देते हैं। रेडलाइट एरिया में अधिकतर लड़कियाँ ऐसे ही लोगों के द्वारा फंसा कर लाई जाती हैं। जिला समव्यक आरती कुमारी ने जब लड़की की काउंसिलिंग की तो पता चला कि लड़की को कई दिन से बोल रहा था कि नेपाल घूमने चलना, लेकिन लड़की ने पहले मना कर दिया था किंतु बाद में लड़की झांसे में आ गयी और नेपाल जाने को तैयार हो गयी। जबकि नाबालिग लड़की के माता पिता लड़की को हर तरफ खोज रहे थे। बाद में जब लड़की के पिता आये तो भाव विभोर हो गए आँखो में आँसू भर कर मानव तस्करी रोधी इकाई एसएसबी का बहुत बहुत धन्यवाद दिया। पकड़े गए व्यक्ति और नाबालिग लड़की को ओ. पी हरैया पुलिस को अग्रिम कार्यवाही के लिए सौंप दिया गया।

देवकुंड महोत्सव और सीता थापा महोत्सव आयोजित करने का निर्णय

प्रात : किरण, संवाददाता

औरंगाबाद। 28 अक्टुबर को महर्षि बाल्मीकि एवं 27 दिसंबर को साहित्यकार शंकरदयाल सिंह की जयंती आयोजित। उक्त निर्णय आज स्थानीय अधिवक्ता संघ भवन में जनेश्वर विकास केन्द्र के तत्वाधान में रामजी सिंह जी की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित कर लिया गया। सचिव सिद्धेश्वर विद्यार्थी ने बताया कि बैठक में अन्य बातों के अलावा यह निर्णय लिया गया कि औरंगाबाद में चलने वाले विविध महोत्सवों की कड़ी में दो महोत्सव और जोड़े जाएं। मदनपुर प्रखंड स्थित सीता थापा की पवित्र स्थली पर सीता थापा महोत्सव और शिव की पवित्र नगरी देवकुंड में देवकुंड महोत्सव आयोजित किए जाएं ।सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि विपरीत परिस्थितियों में अगर महोत्सव वहां आयोजित नहीं हो सके तो सांकेतिक रूप में जिला मुख्यालय में ही क्रमशः दोनों महोत्सव आयोजित किए जाएं । वैसे सीता थापा महोत्सव की संभावित तिथि 17 एवं 18 दिसंबर 2023 निर्धारित की गई ।विशेष जानकारी देते हुए सचिव सिद्धेश्वर विद्यार्थी ने बताया कि केंद्र के अभियंता विंग के संयोजक धीरेंद्र कुमार सिंह को मनोनीत किया गया। इस प्रस्ताव पर सभी लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त की ।उन्होंने यह भी बताया कि जिले के देव प्रखंड स्थित भवानीपुर के मिट्टी के लाल राष्ट्रीय स्तर पर अपनी ख्याति बनाने वाले साहित्यकार स्वर्गीय शंकर दयाल सिंह की जयंती 27 दिसंबर 2023 को सोल्लास पूर्वक मनाई जाए । इस अवसर पर संध्याकालीन सत्र में एक काव्य गोष्ठी आयोजित हो जिसमें देश के नामचिन्न कवि एवं कवित्रियों को आमंत्रित किया जाए । एक अन्य प्रस्ताव में 28 अक्टूबर को बाल्मीकि जयंती मनाने का निर्णय लिया गया । पुनः कार्यक्रम के अंतिम चरण में कुछ दिनों पूर्व कवि लवकुश प्रसाद सिंह जिन्हें बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन से सम्मानित किया गया है उन्हें जनेश्वर विकास केंद्र की इकाई ने पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया और उनके मंगलमय भविष्य की कामना की। इस अवसर पर जिन लोगों ने अपने वक्तव्य से कार्यक्रम को सफल बनाया उनमें डा सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा, शिक्षक बैद्यनाथ सिंह,शिक्षक उज्जवल रंजन, शिक्षक धर्मेंद्र सिंह ,अधिवक्ता कमलेश कुमार सिंह, विनोद मालाकार,सत्यचंडी न्यास समिति के सचिव राजेंद्र प्रसाद सिंह, उपाध्यक्ष अरुण सिंह, लालदेव प्रसाद , श्रीराम राय समेत कई लोगों शामिल थें। इस अवसर पर जिनकी गरिमामय उपस्थिति बनी उनमें समाज सेवी सुरेश ठाकुर ,बैजनाथ सिंह ,, बीगन बैठा,प्रमोद कुमार सिंह, धीरेंद्र कुमार सिंह, बीरेंद्र प्रसाद, सरपंच संघ के संरक्षक रवीन्द्र कुमार सिंह, प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद सिंह शिक्षक धर्मेन्द्र कुमार सिंह आदि प्रमुख थें। अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ ही सभा की कार्रवाई संपन्न की गई।

जुलूस ए मोहम्मदी से दिया जाएगा देश में अमन चैन का संदेश

प्रात : किरण संवादाता

बोचहा । 12 रबी उल अव्वल के जलसों और जुलूस की तैयारियों के संबंध में शनिवार को बोचहा प्रखंड क्षेत्र के बुधनागरा गांव स्थित मदरसा जामिया तेगिया फैजाने असरफ में बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता पीरे तरीकत अल्लामा व मौलाना हाजी खुर्शीद साहब रिजवी ने की, जामिया तेगिया फैजाने असरफ मदरसा में नबी की मिलाद किस तरह मनाई जाए यह बातें बताई गई उसे सुनने के लिए भारी संख्या में लोग पहुंचे, हाजी खुर्शीद साहब ने जलसों और जुलूस की तैयारी कर रहे लोगों से अपील की के जुलूस में डीजे को शामिल नहीं करें सादगी के साथ चले किसी भी व्यक्ति को किसी तरह का तकलीफ ना दे मोनाजजम तरीके से किया गया काम अल्लाह और रसूल ए पाक को पसंद आता है, अच्छी नियत से किया गया काम को दुनिया भी मानती है।

और आखिरत में इसका सवाब मिलता है, उन्होंने कहा कि अच्छे माहौल में पर्व मनाए और एक दूसरे का भी सड़कों पर निकल के इस्तकबाल करें, जुलूस ए मोहम्मदी का मखसद है कि लोगों के बीच जाकर अच्छी बातें बताई जाए ताकि इंसान बताई गई बातों पर अमल करें और देश में अमन चैन कायम रहे। इस बैठक में मौलाना अली अकबर असरफी, मौलाना इमामुद्दीन अली अहमद, साही जामा मस्जिद के इमाम फखरे आलम साहब, मुफ्ती अजहरूल हक, शहीद रजा, हाफिज आफताब आलम, डॉक्टर मुस्ताक, मोहम्मद अलाउद्दीन, मोहम्मद जसीम, अंजुमन रजा ए मुस्तफा के सदर मुमताज आलम, सेक्रेटरी जफर आलम, खजांची रजब्बा अली सहित सैकड़ो की संख्या में लोग उपस्थित थे।

संसाधन की कमी से जूझ रहा है उ.मध्य विद्यालय करमा, बच्चों की पढ़ाई हो रही है बाधित

प्रात : किरण, संवाददाता

झाझा-प्रखंड क्षेत्र के नक्सल प्रभावित गांव नारगंजों के उत्क्रमित मध्य विद्यालय की हालत दयनीय रहने के कारण विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है ।एक तरह शिक्षा विभाग के सचिव के के पाठक शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने को लेकर दो दिन जिले भर के कई विद्यालयों में पहुँचकर निरीक्षण कर डीईओ को शिक्षा व्यवस्था में शत प्रतिशत सुधार लाने का निर्देश दिया तो वही प्रखंड क्षेत्र के नारगंजो गांव स्थित उ.मध्य विद्यालय की दयनीय स्थिति पर शिक्षा विभाग के कोई भी पदाधिकारी सुंध तक नही ले रहे है ।हालांकि विद्यालय के प्रधानाध्यापक के द्वारा शिक्षा विभाग को कई बार पत्र लिखकर विद्यालय की समस्याओं से अवगत करवाया गया है लेकिन विभाग इस दिशा में सुस्त दिखाई दे रहे है ।मामले को लेकर अभाविप के सोशल मीडिया संयोजक कार्तिक कुसुम ने जिला शिक्षा पदाधिकारी कपिलदेव तिवारी को पत्र लिखकर पुनःसमस्या से अवगत करवाते हुये समाधान किये जाने की मांग किया ।संयोजक ने बताया कि विद्यालय जगह जगह जर्जर हो चुकी है बच्चों के लिये बैठने का टेबुल नही है न ही विद्यालय में शौचालय की उत्तम व्यवस्था है जिसके कारण विद्यालय मे पढाई करने वाले स्कूली बच्चों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है और इसका असर उसकी शिक्षा पर पड़ रहा है ।उन्होनें कहा कि अगर जल्द से जल्द समस्या का समाधान किया गया नही तो बच्चों की पढ़ाई पूरी तरह से बाधित हो जायेगा और बच्चे गुणवतापूर्ण शिक्षा से वंचित हो जायेगे।

राहुल गांधी ही देश की नई उम्मीद और किरण : अखिलेश

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। रविवार को रक्सौल कांग्रेस के बैनर तले बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के पूर्व महासचिव सह नगर प्रतिनिधि रक्सौल सदस्य बिहार विधान परिषद क्षेत्र संख्या 12 के प्रोफेसर अखिलेश दयाल के द्वारा रक्सौल स्टेशन पर कुली भाईयों से मुलाकात की और उनकी समस्याओं को सुनी। पूर्व महासचिव सह नगर प्रतिनिधि ने कहा कि विगत गुरुवार को कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष जननायक राहुल गांधी 163 साल पहले जब पहली बार भारतीय रेल पटरी पर दौड़ी थी, तबसे कुली रेलवे का अहम हिस्सा है। कुलियों की परंपरा में कुली का बिल्ला पहनने वाला उनके परिवार का ही सदस्य होता है और उनके पेशे को आगे बढ़ता है। पूर्व महासचिव ने कहा कि राहुल गांधी ने जब गुरुवार की सुबह आनंद बिहार रेलवे स्टेशन पर 756 नंबर वाला कुल्ली बिल्ला पहना तो वह कुलियों की उसे परंपरा के अहम हिस्से भी बन गये जो कि बिते 150 सौ साल से चलती आ रही है। फिलहाल राहुल गांधी की कुलियों से मुलाकात के बाद सियासी गलियारों में चर्चा इस बात की हो रही है कि अब जननायक राहुल गांधी किस समुदाय से मिलने वाले हैं। पूर्व महासचिव ने कहा कि राहुल गांधी अभी और उन लोगों से मुलाकात करने वाले हैं जो न सिर्फ रोज कमाने खाने वालों की श्रेणी में आते हैं बल्कि अपने भविष्य के लिए चिंता कर रहे हैं ।गुरुवार को राहुल गांधी ने 756 नंबर का बिल्ला लगाकर रेलवे स्टेशन पर समान भी उठाया उनकी समस्याओं के बारे में जाना सियासी गलियारों में चर्चा इस बात की हो रही है कि समूचे देश में तकरीबन 80 हजार की संख्या वाले कुली समुदाय से मिलकर राहुल गांधी क्या संदेश देना चाहते हैं। युवा कांग्रेस के नगर अध्यक्ष अमन कुमार ने कहा कि राहुल गांधी के लिए देश का प्रत्येक व्यक्ति परिवार की तरह है। यही वजह है कि वह उस हर तबके से मिल रहे हैं जिनको सबसे ज्यादा न सिर्फ मदद की दरकार है बल्कि उसकी आवाज उठाने वाला भी कोई नहीं है। अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ अध्यक्ष महम्द जिशान अंसारी ने कहा कि 2008 में पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव ने कुलियों की जीवन स्तर में सुधार के लिए निर्णायक कदम उठाए चतुर्थ श्रेणी में कुछ प्रोन्नति भी हुई, लेकिन बाद में न जाने किन कारणों से बंद कर दिया गया। अनूसूचित जाति प्रकोष्ठ अध्यक्ष आकाश रंजन ने कहा कि कुली समुदाय के लिए सरकार को बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार देने की बात हो जिससे उनका जीवन बेहतर से गुजर सके। उक्त कार्यक्रम में कुली संघ के मेठ शशि कुमार, विश्वकर्मा महतो, बाबुलाल राउत, राजेश राउत, शिवनाथ महतो, आनंद कुमार, नसरुद्दीन अंसारी, युगल कुमार, मनीष कुमार, लड्डू कुमार, विश्वास कुमार, मनोज कुमार सहित अनेकों लोग उपस्थित थे।

केरल के पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार को सदर अस्पताल की बदहाल व्यवस्था से कराया गया अवगत

प्रात : किरण, संवाददाता

औरंगाबाद। सदर अस्पताल आए दिन किसी न किसी वजह से खबरों में रहता है। कभी-कभी थमार्मीटर, ऑक्सीमीटर या ईसीजी जैसे उपकरण काम नहीं करते हैं और कभी-कभी ऑक्सीजन की आपूर्ति बाधित हो जाती है या उनगंभीर मरीजों को ले जाने के लिए समय पर एम्बुलेंस उपलब्ध नहीं होती है। इन सबके कारण शारीरिक और मौखिक दुर्व्यवहार,मरीजों के क्रोध का सामना करना पड़ता है, आपातकालीन स्थिति में काम करने वाले डॉक्टरों और कर्मचारियों को डर में काम करना पड़ता है क्योंकि सुरक्षा स्तर तक नहीं है, इसे बेहतर बनाने के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया है। डेंगू वार्ड बनाया गया है लेकिन अभी भी वहां है मरीजों को प्लेटलेट्स देने की कोई उपलब्धता या सुविधा नहीं है और इसलिए उन्हें रेफर किया जा रहा है। शाम के बाद स्त्री रोग और बाल चिकित्सा विभाग में कोई डॉक्टर उपलब्ध नहीं है, आईसीयू में अगर डॉक्टर उपलब्ध है तो यह सौभाग्य की बात है। यह सब तब से स्पष्ट है कार्यालय समय के बाद उपाधीक्षक स्वयं उपलब्ध नहीं रहते हैं और अस्पताल को भगवान भरोसे छोड़ दिया गया है। सदर अस्पताल में कुल 10 सर्जन पदस्थापित हैं, लेकिन इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है

कि लंबे समय से यहां कोई सर्जरी नहीं हुई है और न ही होती दिख रही है निकट भविष्य में. प्रशासन कोई न कोई बहाना बनाकर हर समय अपना चेहरा बचाने की कोशिश करेगा। ऐसा लगता है कि आला अधिकारियों ने भी अस्पताल आना बंद कर दिया है क्योंकि निकट भविष्य में कोई बदलाव की उम्मीद नहीं है. कोई नहीं जानता कि यह उदासीनता कब रुकेगी और हमेशा की तरह मरीजों और कुछ मेहनती डॉक्टरों और कर्मचारियों को निराश होना पड़ेगा। मौके पर स कांग्रेस जिला अध्यक्ष राकेश कुमार पप्पू सिंह मृत्युंजय कुमार सिंह पूर्व अध्यक्ष अरविंद कुमार सिंह श्याम बिहारी सिंह, रवि सिंह राजपूत ,दिलीप सिंह अरविंद कुमार शर्मा अभिषेक कुमार उर्फ चुलबुल सिंहमृत्युंजय कुमार सिंह जोगिंदर कुमार सिंह अमित कुमार सिंह,प्रकाश कुमार,रंजीत कुमार ,संभू कुमार, विश्वनाथ कुमार सिंहआदि लोग उपस्थित थ

विश्व नदी दिवस पर जल जागरूकता कार्यक्रम

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। विश्व नदी दिवस के अवसर पर नेहरू युवा केंद्र एवं सरला श्रीवास सामाजिक सांस्कृतिक शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान मेंजल जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्क्रमित मध्य विद्यालय हरपुर मचिया उर्दू कांटी में आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाध्यापक मो. मुमताज ने बताया कि विश्व नदी दिवस हर साल सितंबर महीने के चौथे रविवार को मनाया जाता है ।इस दिवस की शुरूआत 2005 में हुई थी उसी साल पहला विश्व नदी दिवस मनाया गया था और तभी से आज तक हर साल मनाया जाता है। नदियों के बारे में जन जागरुकता बढ़ाने के लिए और उनके संरक्षण पर ध्यान देने के लिए इस दिवस को मनाया जाता है। नदियों में फेके जा रहे कूड़ा- करकट नदियों के पानी को दूषित करता है। वह उसमें रह रहे जीवों को भी नुकसान पहुंचा रहा है। ये नदियां ही हैं जो मनुष्शय के जीवन का आधार है ।सरला श्रीवास सामाजिक सांस्कृतिक शोध संस्थान के संयोजक लोक कलाकार सुनील कुमार ने गंगा गीत गंगा गंगा रटईत रहली , गंगा हथीन जलवा के रानी गंगा पूजे चल हे सखी गीत गा कर नदियों की उपयोगिता बताया। कैच द रेन परियोजनांतर्गत जल संचयन विषय पर जागरूकता अभियान में कलाकारों ने अपने अभिनय के माध्यम से बरसात के पानी को बचाने के साथ साथ नदी, तालाब, नहर,कुआं को बचाने को लेकर जागरूक किया ।जागरूकता कार्यक्रम में लोगो से स्वतंत्रता सेनानी, महापुरुषों,सेना के जवानों ,एवं पुरखा पुरनिया के नाम पर पौधा लगाने एवं बरसात के पानी बचाने,नदी पोखर तालाब कुंआ को बचाने के लिए शपथ दिलाया गया। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता फिरोज अहमद ने ब कहा कि बारिश की हर बूंद को सहेजने के लिए जागरूकता अभियान के साथ साथ सरकारी एवं अर्धसरकारी भवन निजी प्रतिष्ठान ,निजी मकानों में वर्षा जल संचयन की व्यवस्था हो जिससे बारिश का पानी नाले व नालियों में बहकर बरबाद न हो।

मुजफ्फरपुर में जहरीली शराब से दो की मौत, दो ने गंवाई आंख की रोशनी

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जहरीली शराब पीने से आज दो व्यक्ति की मौत हो गई तथा दो अन्य को अपनी आंख की रोशनी गंवानी पड़ी है ।घटना काजी महमदपुर थाना क्षेत्र के पोखरिया पीर (अंबेडकर नगर) की है। विश्वकर्म पूजा के मूर्ति विसर्जन के बाद कई लोगों ने स्थानीय दुकानदार से शराब खरीदा और पीया। तबीयत खराब होने पर निजी अस्पताल में इलाज कराया गया । इस घटना में दो लोगों की मौत हो गई । मृतकों के नाम पप्पु राम और उमेश सिंह बताया गया है जबकि धर्मेन्द्र कुमार और राजू सिंह की आंख की रोशनी चली गई है ।इन दोनों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है ।आंखों की रोशनी गवां चुके धर्मेंद्र बताते हैं कि स्थानीय दुकानदार से झमरुआ खरीदकर पिये थे ,अब कुछ दिखलाई नहीं दे रहा है। पीड़ित राजू साह का कहना है की बगल के ही एक बर्फ फैक्ट्री से शराब खरीदकर पिये थे । पहले आंखों की रोशनी ठीक थी ,अब कुछ दिखाई नहीं दे रहा है । मृतक परिजन का आरोप है की लगातार शराब की बिक्री हो रही है इसपर सरकार रोक नही लगा पा रही है। जल्द से जल्द सरकार अवैध शराब बिक्री पर रोक लगाए । पीड़ित के इलाज के दौरान 45 हजार रुपए खर्च हो गए पर उसे बचाया नही जा सका । एक अन्य पीड़ित के परिजन ने बताया कि विश्वकर्मा पूजा की मूर्ति विसर्जन के दिन पांच आदमी मिलकर शराब पिया था । अब जो जिंदा बचा है उसका इलाज चेन्नई में कराने की सलाह डाक्टर ने दी है। घटना की पुष्टि करते हुए पुलिस ने बताया है कि आज काजीमोहम्मदपुर था अम्बेदकर कॉलोनी में 2 व्यक्तियों . पप्पू राम, व उमेश साह की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है। साथ ही 2 अन्य व्यक्तियों के अस्वस्थ होने की बात सामने आयी है। घटना के सत्यापन में स्थानीय व्यक्तियों द्वारा घटना का कारण जहरीली शराब पीने की संभावना व्यक्त की गई है, जिसे देखते पुलिस टीम द्वारा माइकिंग करते हुए जाँच-पड़ताल शुरू कर दी गई है ।पुलिस टीम मौके पर मौजूद है । दोनों मृतकों के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है एवं अस्वस्थ व्यक्तियों को इलाज हेतु अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मादक पदार्थ के साथ दो अंतर्राज्यीय तस्कर समेत 4 गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। गुप्त सूचना के आधार पर मुजपफरपुर पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए दो अंतर्राज्यीय मादक पदार्थ तस्कर को गिरफ्थातार किया गया है। गिरफ्तार तस्कर का नाम घनश्याम और संदीप रावत बताया गया है ।दोन मध्यप्रदेश का रहने वाला बताया जाता है। इसके साथ ही ब्रह्मपुरा , मुजफ्फरपुर के रंजीत कुमार और बिन्देश्वर सिंह को भी गिरफ्तार किया गया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार जिले के गायघाट थाना अंतर्गत एनएच-57 स्थित रेला ढाला पुल के पास 1 ट्रक जिसका रजिस्ट्रेशन नं०-0फ1ऋ8-9378 है पर लोड अफीम जैसा मादक पदार्थ एवं पोस्त तृण (पोस्त गुण) जैसा मादक पदार्थ बरामद किया गया। ट्रक भी जब्त किया गया है ।इस संदर्भ में गायघाट थाना में प्राथमिकी दर्ज कर अग्रेतर कार्रवाई की जा रही है। बरामद पोस्त चूर्ण का वजन 29.650 किलोग्राम तथा 34 ग्राम अफीम जैसा मादक पदार्थ भी बरामद हुआ है।

भाजपा के प्रति लोगों के बढ़ते विश्वास से विपक्ष बेहद परेशान : अजीत

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं भाजपा के प्रति आम लोगों का बढ़ता विश्वास इस देश के विपक्ष को खासे परेशान कर दिया है। परेशान विपक्ष सत्ता के लिए अब तुष्टिकरण का सहारा लेना शुरू कर दिया है। विपक्ष के नेता सनातन धर्म, हिंदू संस्कृति एवं धार्मिक ग्रंथो के ऊपर हमला कर यह साबित कर दिया है कि उनके पास आम जनों के लिए कोई मुद्दा नहीं है वे समाज में तनाव पैदा कर सत्ता पाना चाहते हैं। विपक्ष का यह कदम लोकतंत्र के लिए बेहद घातक है। आम लोग इसे अच्छी तरह समझ गए हैं, वे विपक्ष के इस मंसूबे को कभी सफल नहीं होने देंगे। उक्त बातें रविवार को कांटी क्षेत्र के मिठन सराय कोठियापुर में भाजपा कार्यकर्ता, समर्थकों एवं बुद्धिजीवियों को संबोधित करते हुए भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने कहा। उन्होंने कहा कि आज समाज के बहुसंख्यक लोग मोदी जी के नीति एवं जनहित में उठाए गए कदमों का मुरीद बन गए हैं। मोदी जी के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ा है, सब चाहते हैं की अगली बार फिर से भारत का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बने। श्री कुमार ने उपस्थित लोगों से मोदी सरकार के साढ़े नौ वर्षों के कार्यकाल में जनहित में किए गए कार्यों का लाभ अधिक से अधिक जरूरतमंद लोगों तक पहुंचे इसके लिए सकारात्मक पहल करने का अपील किया। उन्होंने भाजपा कार्यकताओं से हाल के दिनों में प्रधानमंत्री के द्वारा लॉन्च किए गए पी एम विश्वकर्म योजना तथा 75 लाख परिवारों को फिर से उज्ज्वला योजना के तहत गैस कनेक्शन देने का निर्णय से आम लोगों को अवगत करते हुए उन्हें योजना का लाभ दिलाने का अपील किया। इस अवसर पर आयोजित बैठक की अध्यक्षता समाजिक कार्यकर्ता राम सेवक साह ने किया। बैठक को पैक्स अध्यक्ष कविता देवी , रामकृष्ण सिंह, राम विनोद सिंह , महेश प्रसाद सिंह, डॉक्टर राम आशीष सिंह , रामस्वरूप राम , साजन सहनी, भिखारी सहनी, राजेश झा, नवल किशोर झा, मोहन पासवान, राम प्रवेश पटेल, शिव शंकर राय , सुरेश सिंह ,सुधन पासवान , राजकुमारी देवी ,सीता देवी ,उर्मिला देवी , झरिया देवी आदि ने भी संबोधित किया। वक्ताओं ने लोगों से नरेंद्र मोदी द्वारा चलाए जा रहे योजना का लाभ अधिक से अधिक जरूरतमंदो तक पहुंचाने का अपिल किया।

शिक्षक सम्मान समारोह का किया गया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। शहर के ब्लॉक मोड़ समीप रोटरी क्लब के सभागार में रविवार को प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन ऑफ बिहार जिला इकाई औरंगाबाद के द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि शिक्षा विभाग की डीपीओ गार्गी कुमारी, दयाशंकर सिंह, नगर परिषद अध्यक्ष उदय प्रसाद गुप्ता, रोटरी क्लब के अध्यक्ष मरगूब आलम, सचिव अविनाश प्रताप सिंह, प्रो. विजय सिंह, प्रो. शिवपूजन सिंह, प्रो. रामाधार सिंह, साहित्यकार सुरेंद्र प्रसाद मिश्र, केशरी नंदन गुरु आदि ने दीप जलाकर किया। कार्यक्रम में प्राइवेट स्कूल के सेवानिवृत शिक्षकों को अंगवस्त्र और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इनमें सावित्री देवी, जनार्दन मिश्रा जलज, राजेंद्र प्रसाद, कमलेश पांडेय शामिल हैं। वक्ताओं ने कहा कि एक शिक्षक का काम छात्र को अंधेरे से प्रकाश की ओर लेकर जाना होता है। आज के शिक्षकों ने शिक्षा प्रदान करने की एक ऐसी व्यवस्था बना रखी हैं जिसके कारण लोगों को सही आदमी बनाया जाता है। पहले छात्रों को आश्रम में शिक्षा दिया जाता था और उसमें कोई राजकीय मदद नहीं ली जाती थी ताकि शिक्षक स्वतंत्र रूप से अपना दायित्व निभा सके। वहीं आज के समय में शिक्षक अपनी आर्थिक समस्याओं से जूझते हुए भी लोगों को शिक्षा दे रहे हैं। शिक्षक अभाव में जीने के आदि हो जाते हैं लेकिन शिक्षा देना नहीं भूलते हैं। कहा कि सरकार के भरोसे आज अगर समाज रहता तो बहुत बड़ी संख्या अशिक्षित रह जाती क्योंकि सरकारी कार्यों में क्या स्थिति है यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। कार्यक्रम में पूर्व उप प्रमुख मनीष राज पाठक, एसोसिएशन के संयोजक हरि पाठक, अध्यक्ष रवि कुमार, सचिव सूरज प्रकाश, कोषाध्यक्ष रवि रंजन, उपकोषाध्यक्ष मंटू कुमार गुप्ता आदि मौजूद रहें।

संक्षिप्त खबरें

राज्य में 4 लाख से अधिक नीलाम पत्र वाद लंबित : विकास आयुक्त

मुंगेर। शनिवार को प्रमंडलीय सभागार में प्रमंडल के सभी जिलों के नीलम पत्र वाद निष्पादन सहित अन्य कार्यों की समीक्षा की गई और संबंधित पदाधिकारी को दिशा निर्देश दिया गया। इस बैठक में विकास आयुक्त सह राजस्व पार्षद बिहार के सदस्य विवेक कुमार सिंह, प्रमंडलीय आयुक्त संजय कुमार सिंह सहित सभी छह जिले जिसमें मुंगेर ,लखीसराय ,जमुई खगड़िया ,बेगूसराय व शेखपुरा के डीएम, एडीएम सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे। विकास आयुक्त शाह राजस्व पर्षद के सदस्य श्री सिंह ने कहा राजस्व प्रशासन की रीड है यह व्यवस्था सैकड़ो वर्षों से चल आ रही है। इसमें अपार समाहर्ता एवं आयुक्त की भूमिका परिभाषित है। इस कार्य में जो आधारभूत है जिसकी विशेष समक्ष आपको है उन्होंने कहा कि पीआरडी अधिनियम। विशेष फोकस है क्योंकि यह संदर्भ में दूर चला गया था और इसका उपयोग नहीं किया जा रहा था अनुसरण एवं समीक्षा समुचित रूप से नहीं हो रही थी उन्होंने कहा कि राज्य में नीलाम पत्र वाद के चार लाख से अधिक मामले लंबित है इसमें लगभग 80 अरब रुपए की राशि शामिल है जो चिंता का विषय है नीलाम पत्र वाद मामलों की समुचित समीक्षा के लिए एवं सहायता के लिए सॉफ्टवेयर शेयर किया गया है जिस पर नए एवं पुराने नीलम सत्र वाद मामलों की प्रस्तुत प्रथम चरण में एंट्री की जाएगी और सॉफ्टवेयर के माध्यम से ही नीलम पत्र वाद मामलों के त्वरित निष्पादन की दिशा में अनुसरण कार्यवाही की जाएगी।

स्नान करने के दौरान तेज धार में बही 12 वर्षीय बच्ची

संग्रामपुर (मुंगेर) । संग्रामपुर थाना क्षेत्र के जवाहर नगर गांव की 12 वर्षीय खुशबू कुमारी पिता बिष्णु मांझी बदुआ नदी में स्नान करने के दौरान डूब गयी ।जिसे स्थानीय ग्रामीण एवं आपदा मित्र द्वारा काफी खोजा गया लेकिन नही मिली ।जानकारी देते हुए उप प्रमुख सचिन कुमार ने बताया कि सुबह करीब 9 बजे कर्मा पुजा को लेकर अपने सहेली के साथ खूशबू कुमारी स्नान करने गयी थी,बदुआ नदी में तेज धार में डुबने से साथ में गये सहेली ने हल्ला किया जबतक ग्रामीण पहुंचे तब तक खूशबू तेज धार में कहां चली गयी अबतक पता नही चल पाया है ।उप प्रमुख श्री कुमार ने बताया कि अंचलाधिकारी स्नेहा सत्यम और संग्रामपुर थाना को भी जानकारी दी गयी थी ।जिसमें आपदा मित्र को ढूंढने के लिए भेजा गया था शाम 6 बजे तक खोजबीन किया लेकिन पता नही चल सका ।वही परिजनों को रो रो कर बुरा हाल है।

विश्वकर्मा पूजा की आड़ में तमंचे की नोक पर नचाई गई नर्तकी

पूर्णिया । पूर्णिया में विश्वकर्मा पूजा को लेकर आयोजित कार्यक्रम की आड़ में तमंचे के नोक पर अश्लील डांस का वीडियो सामने आया है। रात भर पिस्टल लहराते हुए भद्दी भद्दी गानों पर अश्लील ठुमका चलता रहा और पुलिस को इसकी भनक तक नहीं लगी। वहीं तमंचे पर डिस्को का ये वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो जानकीनगर थाना क्षेत्र के विश्वकर्मा चौक की है। इस वीडियो को एक विशाल भाई नाम के फेसबुक आईडी से पोस्ट किया गया है। जानकीनगर चौक के लोगों का कहना है कि विश्वकर्मा पूजा सिर्फ नाम का था। भक्ति के बजाए पूरी रात नर्तकी का अश्लील डांस ही चला। इतना ही नहीं अश्लील गानों पर डांस करती नर्तकी थकी महसूस करने लगी। तो फिर तमंचे के नोक पर उस नर्तकी से अश्लील डांस करवाया जाता रहा। धमक पिस्टल की थी तो नर्तकी भी मजबूर होकर कमर हिलाती रही। वहीं इस वायरल वीडियो को लेकर जानकीनगर थाना के इंस्पेक्टर ओमप्रकाश ने बताया कि पिस्टल लहराता वायरल वीडियो मेरे संज्ञान में आया है। वीडियो की जांच की जा रही है। जांच के बाद दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

खिचड़ी महाप्रसाद के साथ साथ पाठ्य सामग्री का किया गया वितरण

पूर्णिया/ केनगर । इंजीनियर रविंद्र कुमार मेमोरियल ट्रस्ट पूर्णिया के द्वारा आस्था मंदिर जेल चौक पर पूजन कर सार्वजनिक रूप से खिचड़ी महाप्रसाद का वितरण किया गया। ट्रस्ट के निदेशक बिक्रम कुमार मेहता ने जानकारी दिया की ट्रस्ट के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों कृत्यानंद नगर और पूर्णिया पूर्व प्रखंड क्षेत्रों के कई विद्यालयों में स्कूली बच्चों के बीच कॉपी, कलम आदि वितरण का कार्यक्रम निरंतर होता रहा है। निदेशक श्री मेहता ने जानकारी दिया की स्व इंजीनियर रविंद्र कुमार का सपना था की शिक्षा का लौ समाज के हर कोने तक पहुंचे, ताकि समाज के बच्चे पढ़ लिखकर राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में अपना नाम रौशन करते हुए समाज, प्रदेश, देश का सेवा करेंगे ।निदेशक ने बताया की हर डेढ़ दो माह के अंतराल पर जिले के विभिन्न स्कूलों में स्कूली बच्चों के साथ कार्यक्रम आयोजित कर बच्चों के बीच पारितोषिक वितरण किया जाता है।

ग्रामीणों को अबतक नही मिला सरकारी योजनाओं का लाभ : ग्रामीण

आजादी के 76वें साल बीत जाने के बाद नही हुआ ग्रामीण विकास, योजना का लाभ से वंचित है सैकड़ो ग्रामीण

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। सूबे में विकास को लेकर केंद्र सरकार व राज्य सरकार द्वारा आए दिन शहरी क्षेत्र के हर गांव कस्बे में विकास की गतिविधियों में कई योजनाओं के संचालित किये जाने के साथ साथ सड़क मार्ग निर्माण, पुल व पुलिया सहित नाली निर्माण कार्य पूर्ण करने की ढोकली घोषणा की ढोल पीटते हुए नजर आती हैं। इसी कड़ी में नवगछिया पुलिस जिला परिक्षेत्र इलाके में आजादी के बाद से ही ग्रामीणों के विकासशील योजना की कोई वास्तविक हकीकत जमीन स्तर पर नजर नही आती दिख रही हैं आलम यह है कि क्षेत्र इलाके के गांव में पहुंच पथ मार्ग हेतू उक्त समुचित योजनाओं का लाभ नहीं पहुंच पा रहा है। गांव में कस्बे में मनरेगा योजना के तहत लाख सड़क बनाने की भले ही दावेदारी करती हो लेकिन धरातल पर अब भी ऐसे कई मोहल्ले है जहां गांव पहुंच पथ मार्ग की कोई सुविधा है और न ही लोगों को परिचालन के लिए आने जाने का कोई रास्ता है, इलाके के लोगों के बीच गांव में सड़क निर्माण किया गया है और न ही घरों के गंदा पानी निकासी हेतू कोई नाला व नाली का निर्माण हुआ है। आलम यह है कि सड़क व नाला के अभव में ग्रामीणों की जीवनशैली नारकीय हालत में देखने को मिल रहा है ।नवगछिया पुलिस जिला परिक्षेत्र के अनुमंडल नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत एसपी आवास के समीप विगत दो सौ वर्षों से आश्रित सैकड़ो परिवार से घिरी घनी आबादी वाले गांव में सरकार की योजनाओं का समुचित लाभ का फायदा नही मिल पा रहा है, आलम यह है कि गांव तक पहुंचे के लिए उक्त गांव में न ही सड़क है और न ही जल निकास के लिए नाला का निर्माण कार्य किया गया है।

सड़क व गंदा पानी निकासी की समस्या के समाधान के लिए बाट जोह रहे नवगछिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत वार्ड संख्या 8 के ग्रामीणों ने सड़क व जलनिकासी की समस्या को लेकर सैकड़ो ग्रामीणों के हस्ताक्षरयुक्त आवेदन जिलाधिकारी भागलपुर एवं पथ निर्माण विभाग भागलपुर के कार्यपालक अभियंता को कई बार लिखित ज्ञापन सौंपा है। वही ग्रामीणों द्वारा दिये गये लिखित आवेदन में कहा है कि नवगछिया एसपी कोठी के समीप निवास करने वाले सैकडों परिवार विगत दो सौ वर्ष से निवास कर रहे है, लेकिन अब तक हमलोगों को घर पहुंच पथ मार्ग हेतू कोई सड़क ही नही है, जिससे हम ग्रामीण परिवार के लोगों को जंगल भरे पगडंडी का सहारा लेकर गांव से शहर की ओर आते जाते रहे हैं। उक्त समस्या के कारण गांव के लोगों के बीच किसी गम्भीर रोग इलाज हेतू हम ग्रामीणों के बीच गांव में कोई भी ससमय पर एम्बुलेंस, अग्निशमन वाहन सहित मृत्यु के पश्चात अर्थी निकालने का कोई रास्ता शेष नही रहने के कारण घोर समस्या उत्पन्न हो जाती है ।आलम यह है कि हर साल बरसात आने के बाद तीन चार फीट गांव इलाके में जलजमाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे गांव वासियों को अपने घरों से निकलना मुश्किल हो जाता है। इलाके में जहरीले सांप व कीड़ों से जूझना पड़ता है। जिससे हम ग्रामीणों की हालत नारकीय हो गई हैं। वही उक्त गांव के बच्चों के शिक्षा विकास में सबसे बड़ी समस्या की जद्दोजहद में ग्रामीण इलाके के बच्चों का भविष्य अंधकार में समाहित होता दिख रहा है।

शिक्षा की जोह रहे सैकड़ो बच्चों को पढाई करने कोशो चल कर जंगल झाड़ियों से भरे पगडंडियों का सहारा ले शहरी क्षेत्र इलाके में बच्चों हर दिन गुजरना पड़ता है। वही गांव इलाके के दर्जनों बच्चों का भविष्य शिक्षा से वंचित होती दिख रही है। जबकि उक्त गांव के समीप पश्चिम दिशा की ओर पथ निर्माण विभाग की कई डिसमिस जमीन भी अवस्थित है। ग्रामीणों को राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच 31 स्थित बद्री बाबू पेट्रोल पंप के समीप उत्तर दिशा की ओर कुंजबिहारी सिंह के घर के समीप से होकर रेलवे ओवरब्रिज व सड़क एवं नाली निर्माण की व्यवस्था है ही नही उक्त इलाके के लोगों के बीच सड़क व नाली बन जाने से ग्रामीणों की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान होने के साथ साथ सरकार योजना लाभ मिल पायेगा। उक्त सड़क बन जाने से पथ निर्माण विभाग को भी अपने कार्यालय स्थल पहुंच मार्ग हेतू सुविधा सुलभ हो जाएगी। वही ग्रामीणों ने स्थानीय जिला के जिलाधिकारी से आग्रह करते हुए कहा है कि यह सड़क ही उनके गांव विकास मार्ग का एकमात्र रास्ता शेष है। वही ग्रामीणों ने इलाके के सर्वांगिक विकास को लेकर सड़क निर्माण कार्य हेतू एनओसी पास कराये जाने की अपील की है।

कुख्यात टॉप टेन अपराधी मो. टिंकू चढ़ा पुलिस के हत्थे

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। विगत दिनों जिले के टेन टॉप सूची में दर्ज कुख्यात व चर्चित मोस्ट वांटेड अपराधी झारखंड व बंगाल के बॉर्डर इलाके में छुपे रहने की वरीय पुलिस अधीक्षक आनंद कुमार को गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी ।ज्ञात हो कि मोजाहिदपुर थाना क्षेत्र के मुगलपुरा हुसैनाबाद इलाके के रहने वाले अपराधी फेकू मियां के पुत्र मो. टिंकु मिंया उर्फ तालिब अपने अपराधिक कारनामो से चर्चित है। अपराध के दुनिया में लोगों के बीच अपना भय बनाने वाले में से एक है, जो जिले के थाना पुलिस अपराधिक पंजी में टॉप टेन सूची में शामिल हैं, वो जिले में कई आपराधिक मामलों को अंजाम दे पुलिस को चकमा देकर फरार चल रहा था। वही पुलिस द्वारा वांछित अभियुक्तों के विरुद्ध कार्रवाई किये जाने के दिशा में लगातार अपनी गतिविधियों को जारी किये हुए दिख रही है। इसी कड़ी में पुलिस सूची में टॉप टेन की सूची में दर्ज अपराधी की गिरफ्तारी के लिए गुप्त सूचना के आलोक में उक्त अपराधी के कोलकता से सडक मार्ग द्वारा भागलपुर आने की जानकारी प्राप्त हुई थी। मिली जानकारी के तहत एसएसपी ने त्वरित वांछित अपराधी मो. टिंकू मिंया की गिरफ्तारी को लेकर नगर पुलिस अधीक्षक भागलपुर अमित रंजन के निगरानी में पुलिस उपाधीक्षक विधि व्यवस्था डॉ. गौरव कुमार नेतृत्व में एक एसआईटी टीम का गठन किया गया। वही गठित टीम को निर्देशित करते हुए संबंधित मिली सूचना के आधार पर मोस्टवांटेड अपराधी मो. टिंकु मिंया उर्फ तालिब के विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई किये जाने के निर्देश दिये गये थे। वही गठित टीम सदस्यों ने उक्त वांछित अपराधी को नाटकिय अंदाज में धरदबोचा है।

वही अपराधी मो. टिंकू मिंया उर्फ तालिब की गिरफ्तारी से पुलिस ने एक बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है। जिले के टॉप टेन सूची में शामिल अपराधी में एक है वह लंबे समय से पुलिस को चकमा देने में सफल रहा था। गिरफ्तारी को लेकर बताया जा रहा है कि अपराधी मो. टिंकु मिया उर्फ तालिब पर कई अपराधिक मामले दर्ज है, कई थानों में हत्त्या, आर्म्स एक्ट बमबाजी, पिरोती मांग सहित कई संगीन मामले में मुख्य अभियुक्त सूची में दर्ज हैं, वो अपनी गिरफ्तारी के डर से लगातार अपना ठिकाना बदलते रहता था। अपराधी मो. टिंकु मिंया एक सक्रिय किस्म का अपराधी है, इसके डर से आमजनों में काफी भय का माहौल बना हुआ था।]

जिस कारण से कोई भी लोग उसके संबंध में पुलिस को इसके ठिकाने की सूचना नहीं देते थे। इसकी गिरफ्तारी को लेकर विगत कुछ माह से पुलिस लगातार दबिश देने की कवायद में डटी हुई थी। वही इसकी गिरफ्तारी को लेकर पुलिस उपाधीक्षक (विधि-व्यवस्था) डॉ. कुमार गौरव के नेतृत्व में गठित टीम सदस्यों के द्वारा सफल रूप से वांछित अपराधी मो. टिंकु मिया उर्फ तालिब को गिरफ्तार कर लिया गया है। उक्त मामले को लेकर वरीय पुलिस अधीक्षक कार्यालय बेस में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान एसएसपी आनंद कुमार ने जानकारी दी।

थाना प्रभारी व एसआई के पदौन्नति को ले बधाई सह सम्मान समारोह आयोजित

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। पुलिस मुख्यालय द्वारा भागलपुर के पुलिस पदाधिकारी को उच्चतर पद पर कार्यकारी प्रभार से सम्मानित किये जाने के बाद स्थानीय जनप्रतिनिधियों व समाजसेवी द्वारा जोगसर ओपी थाना प्रभारी रंजीत कुमार और सब इंस्पेक्टर रीता कुमारी का इंस्पेक्टर पद पर प्रमोशन दिये जाने को लेकर शांति समिति जोगसर थाना प्रांगण में एक अभिनंदन सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस दौरान उपस्थित लोगों ने इंस्पेक्टर रंजीत कुमार और इंस्पेक्टर रीता कुमारी को पुष्प गुच्छ एवं अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। इस मौके पर शांति समिति के कमल जायसवाल ने कहा कि जिले के जोगसर थाना में पदस्थापित हुए इन दोनो पदाधिकारियों के होने से यहां के थाना के लिए विशेष है। थाना परिसर में जब कोई भी फरियादी अपने कष्ट को लेकर आते हैं, तो सबसे पहले दोनों पदाधिकारी द्वारा उन्हें बैठने के लिए कहा जाता है। यही सबसे बड़ी बात है, उसके बाद उनका काम भी होता है। ऐसे ईमानदार इंस्पेक्टर के लिए उपस्थित लोगों व जनप्रतिनिधियों ने दोनों पुलिस पदाधिकारी को शुभकामना देते हुए इंस्पेक्टर पदौन्नति की बधाई व शुभकामनाएं दी। इस मौके पर आँचल इंसपेक्टर संजय कुमार सुधांशु सहित अन्य पदाधिकारी के अलावा कई सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद थे।

एसडीआरएफ के पहुंचने से पूर्व ही आपदा मित्र सदस्यों की टीम ने की कवायद शुरू

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। जगदीशपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत खलखलिया नदी में डूबने से एक व्यक्ति की मृत्यु होने की सूचना सामने आई है। वही घटना को लेकर बताया जा रहा है कि घटना स्थल पर एसडीआरएफ टीम के पहुंचने से पूर्व ही आपदा मित्र के सदस्यों ने मृतक व्यक्ति के शव को नदी से खोज कर बाहर निकाला है। घटना को लेकर मिली जानकारी के मुताबिक जगदीशपुर थाना परिक्षेत्र के उद्देशी गांव के समीप चानन नदी पार करने के दौरान विगत शुक्रवार को एक व्यक्ति नदी के तेज धार में डूब गया था। जिसकी तलाश परिवार के सदस्यों द्वारा की जा रही थी। वही इस घटना की सूचना ग्रामीणों द्वारा अंचल अधिकारी को दिया गया। वही घटना की सूचना मिलते ही अंचलाधिकारी ने त्वरित जिला एसडीआरएफ टीम को सूचना दी थी, परंतु रात होने के कारण एसडीआरएफ की टीम मौके पर नहीं पहुंच पायी थी। वही अहली सुबह जब क्षेत्र के आपदा मित्र सदस्यों को मामले की सूचना मिली तो उन्होंने मौके पर पहुंच कर डूबे हुए व्यक्ति की खोज शुरू कर दी। वही आपदा मित्र सदस्यों की टीम ने काफी खोजबीन के बाद मृतक के शव को घटनास्थल से कुछ ही दूर पर शव को देख त्वरित आपदा मित्रों की टीम ने नदी के बहाव का सहारा लेते हुए मृतक के शव को पानी से सफलता पूर्वक बाहर निकाल लिया। वही मौके पर मौजूद घटना से पीड़ित परिवार के सदस्यों के मुताबिक मृतक व्यक्ति की पहचान अमरपुर थाना के खंजरपुर इलाके के 45 वर्षीय पिंटू राम के रूप में हुई है।

वही घटना को लेकर ग्रामीणों द्वारा बताया गया कि मृतक व्यक्ति अपना ससुराल नदी तैरकर पार कर जा रहा था, इसी बीच पानी के तेज बहाव में नदी में डूब गया था। नदी के दूसरी ओर मृतक पिंटू राम का साला अनील राम इंतजार कर रहा था। वही मृतक की मां ने कहा कि मेरा बेटा ससुराल में बली पूजा का का प्रसाद खाने जा रहा था। वही मृतक पिंटू राम अपने पीछे दो पुत्र और दो पुत्री को छोड़ गए है। वही परिवार में बड़ा पुत्र सूरज कुमार गुजरात में मजदूरी करता है, एवं छोटा पुत्र रोशन कुमार पढ़ाई करता है। वहीं बड़ी पुत्री मौसम कुमारी की शादी तय कर चुका था, और छोटी पुत्री सोनी कुमारी पढ़ाई कर रही है। मृतक खुद चापाकल फैक्ट्री में मजदूरी कर अपना परिवार का जीवन यापन करता था। आपदा मित्र टीम सदस्यों में अमित कुमार, तुलसी यादव, सुशील यादव, दिलीप यादव, बबलू शाह, मो. मुस्तकीम, आशीष रंजन, नेमानी यादव ने अपनी कुशलता से मृतक पिंटू राम के शव को बरामद कर काफी सराहनीय योगदान दिया है। वही अंचलाधिकारी सुजीत कुमार, सुधन यादव एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी रघुनंदन आनंद के द्वारा संबंधित आपदा मित्र सदस्यों को पुरस्कृत करने की बात कही है।

नि:शुल्क स्वस्थ जांच शिविर का किया आयोजन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। अखिल भारतीय आयुर्वेदिक विज्ञान सम्मेलन के तत्वावधान में स्वर्गीय कविराज विद्या नारायण शास्त्री के पुण्य स्मृति पर आयुर्वेदिक सेवा, संस्थान रेड क्रॉस रोड आदमपुर स्थित निशुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में सैकड़ो लोगों ने निशुल्क स्वास्थ्य जांच को लेकर सुबह से ही लोगों ने डायबिटीज, उच्च रक्तचाप के साथ-साथ कई रोगों का इलाज परामर्श के साथ साथ निःशुल्क जांच का लाभ उठाया। इस दौरान शहर के कई गणमान्य शिक्षा विदित, समाज सेवी सहित कई लोग उपस्थित थे। वही कार्यक्रम के दौरान शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. अजय कुमार सिंह ने बताया कि कविराज विद्या नारायण शास्त्री एक अच्छे और कुशल कवि थे, उनकी कविताओं में प्राकृतिक सौंदर्य से लेकर श्रृंगार रस की कविताएं मानो बोलती थी।

दो दिवसीय 15वां राज्य स्तरीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता का हुआ समापन

21 जिले के कुल 42 टीमों के बालक बालिका खिलाड़ियों ने लिया हिस्सा

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। दो दिवसीय 15वां राज्य स्तरीय बॉक्सिंग जूनियर व सब जूनियर प्रतियोगिता के समापन को लेकर स्थानीय सैंडिस कंपाउंड मैदान परिसर स्थित खेल भवन सह व्यायाम शाला भवन में विधिवत रूप से सम्पन्न हुआ है, वही प्रतियोगिता में जो खिलाड़ी विजयी घोषित होने के साथ में चयनित हुए हैं उन्हें अब राष्ट्रीय स्तर पर अपना जौहर दिखाने का मौका मिलेगा। प्रतियोगिता कार्यक्रम को बिहार बॉक्सिंग संघ और जिला बॉक्सिंग संघ के तथावधान में आयोजन किया जा रहा है। जिसकी मेजबानी रेशमी शहर भागलपुर ने की। वही इस 15वें राज्य स्तरीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता में बिहार के 21 जिलों के कुल 42 टीम के कुल 2 सौ से अधिक खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था। इस प्रतियोगिता में जूनियर और सब जूनियर कैटिगरी रखी गई थी, जिसमें बालक व बालिका वर्ग के मैच आयोजित की गई थी, जिसमें खिलाड़ियों के द्वारा प्रस्तुत किये गए कुशल जौहर प्रदर्शन में कई मैच काफी रोमांचक थे। वही प्रतियोगिता के विजयी हुए प्रतिभागी खिलाड़ी को खेल प्रबंधन ने मैडल व प्रसस्तिपत्र से सम्मानित किया है। वहीं प्रतियोगिता के आयोजक के द्वारा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी खिलाडियों को उत्साहित किये जाने की दिशा में मैडल व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है। इस बॉक्सिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता के पारितोषिक वितरण समारोह कार्यक्रम में भागलपुर बॉक्सिंग एसोसिएशन के सेक्रेटरी राजीव कुमार सिन्हा प्रेसिडेंट राजकुमार रंजन, ऑगेर्नाइजर सेक्रेटरी मो. हामूंद अंसारी, ऑगेर्नाइजेशन प्रेसिडेंट विजय कुमार यादव, जिला खेल पदाधिकारी जय नारायन कुवर, समाज सेवी विजय यादव, भारतीय जनता पार्टी के युवा नेता बंटी यादव, संतोष कुमार के अलावे जिला बॉक्सिंग समिति के सचिव सहित नेशनल खिलाड़ी व कई जिलों से आए सैकड़ो खिलाड़ी मौजूद थे।

सात साइबर अपराधी को किया गया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । पूर्णिया पुलिस की सक्रियता और तत्परता लगातार देखने को मिल रही है। इस बार पूर्णिया पुलिस ने सात साइबर अपराधी को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए सभी अपराधी से जो खुलासा हुआ है वे काफी चौकाने वाले हैं। दरअसल ये सभी साइबर अपराधी भोले भाले गरीब लोगों का अकाउंट खरीदता था जिसके एवज में उसे थोड़ी सी रकम भी देता था। ये रकम अकाउंट के प्रकार पर भी निर्भर करता था जिस अकाउंट का उपयोग ये साइबर ठग साइबर क्राइम के लिए करते थे। पूर्णिया के साइबर डीएसपी कौशल किशोर कमल ने बताया कि इनका साइबर हिस्ट्री अंतरराज्यीय है जो बिहार सहित दूसरे राज्यों के लोगो को भी अपनी जालसाजी का शिकार बनाता था। इनके पास से कई ऐसे डिजिटल उपकरण और दस्तावेज मिले है जिसका तार दूर दूर तक फैला है। उन्होंने बताया कि ये सभी साइबर अपराधी पूर्णिया जिले के श्रीनगर प्रखंड के सिंधिया गांव के रहने वाले हैं और मुख्य रूप से भोली भाली जनता को झांसे में लाकर बड़ी राशि का प्रलोभन देकर अकाउंट खोलवाने का काम कर रहा था। जिस अकाउंट पर फ्रॉड कर राशि मंगाई जा रही थी। अभी तक इसने चार सौ से ज्यादा लोगो से अकाउंट ओपन करवाकर ठगी का काम किया है। लेकिन कितनी राशि की ठगी की है इस दिशा में अनुसंधान जारी है। साइबर थाना में प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए साइबर डीएसपी कौशल किशोर कमल ने बताया कि गिरोह के सदस्य लोगों को लालच देकर बैंक अकाउंट खुलवाते थे। बाद में उनके अकाउंट की पूरी जानकारी साइबर अपराध से जुड़े लोगों को उपलब्ध करवाते है।

अपराधी लोगों से ठगी हुई राशि के ट्रांजैक्शन उन अकाउंट में करवाते है। इसके एवज में आरोपी को आधा प्रतिशत और अकाउंट होल्डर को एक प्रतिशत कमीशन देते है। फिलहाल पुलिस के हाथ अकाउंट बेचने वाले लगे हैं। इनके सहारे पुलिस साइबर ठगों तक पहुंचने का प्रयास कर रही है। वहीं, इसे लेकर साइबर डीएसपी ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि रंगभूमि मैदान के समीप व्हाइट आई 20 कार में 7 संदिग्ध युवक मौजूद है जो अकाउंट सेलिंग का काम करते है।

भूराजस्व निष्पादन संबंधी समस्या का पारदर्शिता के साथ हो समाधान : डीएम

प्रात : किरण ब्यूरो

पूर्णिया । जिला प्रशासन पूर्णिया द्वारा भू राजस्व संबंधित विषयों पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन प्रेक्षागृह सह आर्ट गैलरी पूर्णिया में आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयुक्त पूर्णिया प्रमंडल पूर्णिया सह मुख्य अतिथि मनोज कुमार एवं जिला पदाधिकारी पूर्णिया कुन्दन कुमार द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन किया गया। कार्यशाला में अपर समाहर्ता केडी प्रौज्ज्वल द्वारा आयुक्त एवं जिला पदाधिकारी तथा कार्यशाला में उपस्थित सभी संबंधित पदाधिकारी एवं गर्मियों का स्वागत किया गया। अपर समाहर्ता महोदय द्वारा कार्यशाला के उद्देश्यों पर गहनता से जानकारी दी गई। अपर समाहर्ता द्वारा बताया गया कि जिला पदाधिकारी के निर्देश एवं मार्गदर्शन में राजस्व के कार्यों में काफी प्रगति हुई है।

इसी प्रकार आगे भी जिला पदाधिकारी के नेतृत्व में टीम भावना से काम करने के लिए हम सभी पदाधिकारी संकल्पित हैं। आयुक्त द्वारा अपने संबोधन में राजस्व विभाग की महत्ता पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया। आयुक्त द्वारा सभी संबंधित पदाधिकारी को पारदर्शिता एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य के निष्पादन को लेकर कई आवश्यक मार्गदर्शन दिया गया। आयुक्त द्वारा आगे बताया गया कि जहां जहां भू विवाद के गंभीर मामले आते हैं तो वैसे स्थल का स्थानीय जांच संबंधित अंचलाधिकारी एवं राजस्व अधिकारी द्वारा स्वयं करें और जांच प्रतिवेदन अभिलेख बध्द अनिवार्य रूप से करें। आप सभी के बेहतर कार्य से जिला पूर्णिया का लगान कि वसूली में बिहार की रैंकिंग में प्रथम स्थान तथा राजस्व के सभी कार्यों की प्रगति में द्वितीय स्थान प्राप्त है। इसके लिए उनके द्वारा जिला पदाधिकारी सहित सभी राजस्व पदाधिकारी को धन्यवाद दिया गया। भू विवाद एवं राजस्व के कार्यों में गुणवत्तापूर्ण एवं पारदर्शिता के साथ निष्पादन को लेकर कई आवश्यक बिंदुओं पर कार्य करने का मार्गदर्शन दिया गया।

जिलाधिकारी द्वारा बताया गया कि राजस्व के निष्पादन में नई-नई चुनौतियां प्रतिदिन आ रही हैं जिसका निष्पादन पारदर्शी ढंग से करने की आवश्यकता है। जिला पदाधिकारी द्वारा कार्यशाला में उपस्थित सभी राजस्व कर्मचारी एवं सभी अमीन सहित बंदोबस्त से जुड़े कानून, सिविल प्रभारी एवं अन्य को सरकार की इस महत्वाकांक्षी सभी योजनाओं का यथा अभियान बसेरा परिमार्जन अतिक्रमण आधार सीडिंग दाखिल खारिज बेदखली आदि का ससमय निष्पादन करने निर्देश दिया गया।

गरीब व युवा विरोधी मोदी सरकार पूंजीपतियों की है सच्ची हितैषी : कनीज फातमा

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । केंद्र में पिछले नौ साल से कुंडली जमाकर बैठी मोदी सरकार पूरी तरह से गरीब और युवा विरोधी है। उन्हे देश के युवाओ को पिछले नौ वर्षो सिर्फ ठगने का काम किया है और गरीबी व बेरोजगारी से कोई लेना-देना नहीं है। उक्त बातें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सदस्य कनीज फातमा ने एक प्रेस बयान जारी कर कही है। उन्होंने कहा कि भाजपा वाले धार्मिक उन्माद फैलाकर समाज तोड़ने का काम करने पर विश्वास करती है। उन्होंने कहा कि आज देश में भाजपा भगाओ-देश बचाओ के नारे के साथ मोदी सरकार हटाओ-लोकतंत्र बचाओ जैसे मुहिम तेज गति से चलाने की जरूरत है। भाजपा गरीब, मजदूर, शोषित, वंचित समाज और बाबासाहेब भीम राव अम्बेदकर के द्वारा लिखे गए संविधान की भी घोर विरोधी है और उसे बदलना चाहती है। भाजपा सरकार कभी भी दलितों को आगे बढाना नहीं चाहती है ये सिर्फ अमीरों और पूंजीपतियों की पार्टी है उन्हे देश लोकतंत्र से कोई मतलब नहीं है।

कांग्रेस नेत्री श्रीमती फातमा ने कहा कि केंद्र में बैठी भाजपा सरकार मध्यमवर्गीय और व्यावसायियों की घोर विरोधी है। छोटे -छोटे व्यवसायियों को जीएसटी और सीएसटी के माध्यम से लूटने का काम किया है। आज देश में महगाई और बेरोजगारी चरम सीमा पर है लेकिन सरकार को इसकी कोई चिंता ही नहीं है। मोदी सरकार को देश के विकास और रोजगार से कोई मतलब नही है। वे अपना हर जगह फोटो लगवाने में मस्त है। उन्होंने कहा कि हम सभी कांग्रेस के समर्पित कार्यकर्ताओ ने ठाना है देश से भाजपा को भगाना है देश के गद्दी पर एक बार फिर से कांग्रेस को बैठाना है ताकि देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाकर रखा जा सके और समाज के हर वर्ग का समुचित विकास हो।

आग लगने से चार कपड़ा एवं एक चप्पल दुकान जलकर राख

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया/बड़हरा कोठी । बड़हरा गुदरी बाजार के पश्चिम दिशा स्थित दुकानों में आग लग जाने से चार कपड़ा एवं एक चप्पल जूता का दुकान सहित कुल पांच दुकान एवं उसमे रखा सारा सामान जलकर राख हो गया। घटना रात्रि लगभग एक बजे की बताई जा रही है। आग लगने से 50 लाख से ज्यादा क्षति का अनुमान लगाया जा रहा है। मिली जानकारी के अनुसार रात्रि लगभग एक बजे दुकान से आग की लपटें उठते देख स्थानीय लोगों द्वारा चीख पुकार कर एक दूसरे को जानकारी देते हुए आग बुझाने का प्रयास शुरू किया गया। किन्तु आग की भयंकर उठती लपटें एक दूसरे से सटे पांच दुकानों में फैल गई। आग की भयावहता को देख स्थानीय लोगों द्वारा दमकल विभाग धमदाहा को आग लगने की सूचना दी गई। सूचना पर धमदाहा से पहुंची दो दमकल गाड़ियों द्वारा आग पर काबू पाया गया। आग लगने से मो सहजाद का कपड़ा दुकान, संजय दास का कपड़ा दुकान, गौरी दास का कपड़ा दुकान, मो. अवजल का कपड़ा दुकान एवं मो मौताज का चप्पल दुकान एवं उसमे रखा सारा सामान जलकर राख हो गया है। जानकारी मिलते ही बड़हरा थाना के पुलिस पदाधिकारी द्वारा घटनास्थल पर पहुंच जांच पड़ताल किया गया। अभी तक आग लगने के सही कारणों का पता नही चल सका है। इस संबंध में अंचलाधिकारी स्नेहलता देवी ने बताई की जानकारी के

संक्षिप्त खबरें

जिलाधिकारी ने पार्किंग स्थल का किया निरीक्षण

गया ।पितृपक्ष मेला के दौरान बनाये जाने वाले विभिन्न पार्किंग स्थल का भी निरीक्षण जिला पदाधिकारी द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि हर वर्ष प्रेमशिला में जाम की समस्या रहने की शिकायत प्राप्त होती रहती है। इस वर्ष भी एक चैलेंज के रूप में प्रेतशिला में ट्रैफिक व्यवस्था का पालन करवाया जाएगा। प्रेतशिला पार्किंग स्थल में निरीक्षण के दौरान पहुंच पथ एवं पार्किंग ग्राउंड समतल करवाने को कहा। उन्होंने कहा कि बड़े-बड़े बस को पार्किंग के लिए नेशनल हाईवे पर एक लेन को रिजर्व करके रखने को कहा ताकि ज्यादा भीड़ होने पर उसे प्रयोग किया जा सके। इसके साथ ही फोर व्हीलर का पार्किंग प्रेतशिला के पार्किंग स्थल किसान कॉलेज में रखें। फोर व्हीलर को आगे से चाकन्द मोड़ से होते हुए मद्द निषेध कार्यालय के पास से होते हुए प्रेतशिला को घूमते हुए वापस हाईवे पर ले जाया जाएगा। कोई भी फोर व्हीलर वापस नेशनल हाईवे के ग्राउंडपास पार नहीं आएगा। उन्होंने पैदल निरीक्षण करते हुए निर्देश दिया की पार्किंग स्थल पर सभी ड्राइवर को रुकने के लिए पर्याप्त शेड की व्यवस्था रखें, स्नानागार, पेयजल की व्यवस्था मुकम्मल रखें।

मुख्यमंत्री उधमी योजना का ऑनलाइन आवेदन 30 सितम्बर तक

गया ।अति पिछड़ा प्रकोष्ठ जनता दल यू के जिला अध्यक्ष विनोद कुमार ने बताया कि 15 सितंबर से 30 सितंबर तक मुख्यमंत्री उद्यमी योजना का ऑनलाइन आवेदन की जा सकती है ।मुख्यमंत्री उद्यमी योजना का लाभ लेने के लिए लाभार्थी को इंटर पास होना चाहिए ।जाति, आवासीय, आय प्रमाण पत्र, बैंक पासबुक, आधार कार्ड के साथ कैफे से आवेदन किया जा सकता है। कुमार ने बताया कि उद्यमी योजना के अंतर्गत लगभग 100 प्रकार का व्यवसाय की सूची उपलब्ध है। लाभार्थी अपने योग्यता क्षमता एवं रुचि के हिसाब से उद्योग का चयन कर सकते हैं। इस योजना में 50% सब्सिडी है। 10 लाख रुपया कर्ज उद्योग लगाने के लिए मिलता है। जिसमें 5 लाख अनुदान है और 5 लाख वापस करना है। अनुसूचित जाति जनजाति, अतिपिछड़ा, महिलाओं को बिना ब्याज एवं अन्य सभी को एक परसेंट ब्याज पर कर्ज दिया जाता है। 7 साल में पूरा कर्ज वापस करना है। कुमार ने अपील किया कि अधिक से अधिक बेरोजगार शीघ्र आवेदन करें और लाभ ले।

समीक्षात्मक बैठक रामबाबु सिंह की अध्यक्षता में किया गया

आरा। राष्ट्रीय कुंवर सेना की समीक्षात्मक बैठक कैम्प कार्यालय रामबाबु सिंह का आवास गैस एजेंसी रोड पकड़ी आरा में राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल सिहे शकरवार की अध्यक्षता में किया गया। इस बैठक में पिछले दिनो कुँवर सेना द्वारा लिये गये आन्दोलनकारी कार्यो, उसकी सफलता एवम् उनमें सुधार, संगठन विस्तार, हुआ। कार्यक्रमों पर गंभीर चिंतन, विचार-विमर्श किया। कुँवर सिंह रमना मैदान के सौन्दर्यीकरण के नाम पर स्थानीय सांसद सह केन्द्रिय मंत्री आरके सिंह द्वारा विभागीय सी. एस. आर की राशि को लूट के खिलाफ, महाधारना एवम् पुतला दहन का साकारात्मक परिणाम के लिये कुँवर सेना के समर्थन में आये लोगों को धन्यवाद दिया। आनन्द मोहन सिंह के जनसंवाद सह सम्मान समारोह के सफलता पर संतोष व्यक्त करते हुए उनके द्वारा आहुत 23 नवम्बर के जनसभा में अपनी भूमिका तय की गयी और कोने कोने से किसी भी जिला से अधिक संख्या में लोगों को लेकर पटना पहुँचने के लिये साधन-सुविधा मुहैया करने पर विचार-विमर्म हुआ।

पिकअप ने वाहन में मारी जोरदार टक्कर चालक व सहचालक की मौत

कैमूर। मोहनियां थाना क्षेत्र के एनएच 2 पर स्थित मुठानी के समीप पिकअप ने अज्ञात वाहन में जोरदार टक्कर मार दिया जहां चालक व सहचालक का घटना स्थल पर मौत हो गई। पिकअप पर मवेशियों को रोहतास के खुरमाबाद लेकर जा रहा था। बताया गया कि पिकअप रविवार की अहले सुबह अज्ञात वाहन में पीछे से टक्कर मार दी जिससे पिकअप का अगला हिस्सा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया जिसमे दबकर चालक सह चालक की घटना स्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई है ।वहीं इस दौरान पिकअप पर लदे हुए 3 मवेशियों की भी मौत हो गई है, और क्रूरता पूर्वक कई मवेशी भी बुरी तरह जख्मी हो गए हैं। सूचना पर पहुंची मोहनिया पुलिस एवं एनएचएआई के कर्मियों द्वारा घंटो मशक्कत के बाद पिकअप में फंसे दोनों शव को बाहर निकाला गया ।मृतक की पहचान चालक कैमूर जिला के चैनपुर के निवासी स्वर्गीय सोहराब अंसारी का पुत्र कासिम अंसारी व सह चालक केवा का रहने वाला नसीम साह का पुत्र सकील साह के रूप में हुई है। वहीं सूचना पर पहुंची पुलिस एवं एनएचआई की कर्मियों ने शव का पंचनामा करने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भभुआ सदर अस्पताल में भेजा। जहां सदर अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों को सौंप दिया गया है।

श्री कृष्ण चेतना समिति सभागार में 1942 के अमर शहीद अकली देवी के शहादत स्मृति दिवस समारोह मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। श्री कृष्ण चेतना समिति सभागार में 1942के अमर शहीद अकली देवी के शहादत स्मृति दिवस समारोह शहीद अकली देवी सेवा संस्थान के अध्यक्ष यादव रामसकल सिंह भोजपुरिया के अध्यक्षता में मनाया गया ।संचालन संस्था के सचिव बबन पंडित ने किया ।समारोह के उद्घाटन पूर्व विधान पार्षद श्री लालदास ने उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर किया ।अपने उद्घाटन भाषण में पूर्व विधान पार्षद श्री लालदास राय ने कहा कि आजादी को हासिल करने के लिए जो संघर्ष17वी शताब्दी में19शताब्दी के मध्य तक पूरे भारत में किये गए उनमें अनेक जातियोंधर्मो एवं सम्प्रदाय के लोगो ने कुबार्नी दी उसमें कौन बड़ा था कौन छोटा था यह सवाल आज भी जिंदा है क्योंकि बौद्धिक अकादमिक इतिहासकारों इसमें काफी डंडी मारी किया है ।यही कारण है कि अकली देवी का इतिहास के पन्ने में नही है यदि वो किसी राजघराने के बहु बेटी होती तो उनका नाम इतिहास के पन्ना में होता ।राजद के वरिष्ठ नेता ने कहा कि शहीद अकली देवी आजादी के अग्रदूत थी उसने देश के आजादी के लड़ाई में महिलाओं के बीच जनजागरण चलती थी। लोजपा रामबिलास के जिलाध्यक्ष राजेश्वर पासवान ने राजकीय समारोह के निमंत्रण पत्र पर शहादत दिवस के जगह पर पुण्यतिथि आयोजक पर निंदा प्रस्ताव लाया जिसे उपस्थित जन समूह ने समर्थन किया ।प्रो विजय सिंह मुंखिया ने कहा कि शहीद अकली देवी ने पारम्परिक हथियार से15सितम्बर1942को लड़ते हुए देश के लिए शहीद हो गयी ।समारोह को सम्बोधित करने वालो लोगो मे शेषनाथ यादव डॉ रघुबर चन्द्रवँशी भीम पटेल श्याम कुमार मुन्नू अजय यादव निर्मल शक्रवार सुरेश यादव बिंदेश्वरी शर्मा डॉ सुखदेव शर्मा रामजी यादव मृत्युंजय भारद्वाज विनोद चन्द्रवँशी पूर्व जिला पार्षद अमरदीप ब्यास जिला पार्षद धनंजय सिंह ज्ञानचंद कुशवाहा सुरेन्द्र आजाद कमलेश यादव सत्यनारायण यादव अशोक मास्टर विरमानी सिंह रजनीश यादव सुदर्शन यादव महेंद्र गिरी मण्डल हरेराम पासवान श्री भगवान पासवान भुनेश्वर यादव अमरदीप कुशवाहा नन्दी पासवान उपेन्द्र पासवान अमर पासवान रजनीश यादव चन्दन पासवान जितेंद यादव गौरी यादव विजय पासवान बद्री यादव सुबास यादव लालबाबू यादव हरिचरन यादव गुप्तेश्वर शर्मा स्वागत भाषण कोषाध्यक्ष विनोद कुमार धन्यनवाद ज्ञान युवा राजद के प्रदेश महासचिव सह जिला पार्षद भीम यादव ने किया।

आत्मनिर्भरता से युवा बढ़ रहे हैं लगातार आगे: जीवन कुमार

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आज के डिजिटल जमाने में आत्मनिर्भर होकर युवा अपने मेहनत और कुशलता की बदौलत लगातार व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे है और इसका जीता जागता उदाहरण है युवाओं में गजब का आत्मविश्वास क्योंकि यह किसी भी व्यक्ति को संबल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है उक्त बातें गया भाजपा के विधान पार्षद जीवन कुमार ने कही, आज वह जिले के जीरो माइल पानी टंकी कृष्ण पुरी स्थित शालू अलंकार ज्वेलर्स दुकान के उद्घाटन के मौके पर कही, माननीय विधान परिषद सदस्य जीवन कुमार के यहां पहुंचने पर लोगों ने जोरदार स्वागत किया उसके बाद उन्होंने विधिवत रूप से इस प्रतिष्ठान का रिबन काटकर उद्घाटन किया, वही इस मौके पर उन्होंने बातचीत के क्रम मेंकहा कि लगातार केंद्र सरकार के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र भाई मोदी जी के द्वारा तमाम क्षेत्रों में विकास किया जा रहा हैं जिसका जीता जागता उदाहरण है कि लोग अब खुद व्यवसाय के क्षेत्र में उतर रहे हैं और आरा शहर के दक्षिणी इलाके में इस तरह के प्रतिष्ठान के खुलने से इस आसपास के इलाके के लोगों को काफी फायदा होगा, और केंद्र सरकार लगातार उद्योग धंधों को बढ़ावा देने में लगी है ,मौके पर उपस्थित लोगों में सौरभ कुमार सोनी विमल कुमार सोनी राजकुमार सोनी अरुण कुमार ठाकुर ऋषि ठाकुर पारसनाथ सिंह सुधीर कुमार अशोक सिंह बसंत सिंह उपेंद्र सिंह राजाराम ठाकुर गौतम कुमार विक्की कुमार अमन कुमार विशाल विश्व रंजन गुप्ता विकास कुमार सरोज सोनी चंदन सोनी सत्यम कुमार गुप्ता सुशील सोनी समेत तमाम लोग मौजूद थे।

अंचल प्राथमिक शिक्षक संघ का चुनाव कार्य गुरुनानक अभ्यासार्थ मध्य विद्यालय मौलाबाग में संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

आराः आरा नगर एवं आरा मुफ्फसिल दक्षिणी का अंचल प्राथमिक शिक्षक संघ का चुनाव कार्य गुरुनानक अभ्यासार्थ मध्य विद्यालय मौलाबाग में संपन्न हुआ आरा नगर के चुनाव पदाधिकारी नंद जी सिंह एवं पर्यवेक्षक संजय कुमार देवांशु के देख रेख में सर्वसमिति से अध्यक्ष पद के लिए मुकेश कुमार सिंह प्रधानाध्यापक गुरु नानक अभ्यासार्थ मध्य विद्यालय मौलाबाग एवं सचिव पद के लिए रामनाथ सिंह प्राथमिक विद्यालय बरहबतरा का चुनाव हुआ । आरा मुफ्फसील दक्षिणी अंचल चुनाव के लिए चुनाव पदाधिकारी प्रभा शंकर सिंह पर्यवेक्षक धर्मदेव सिंह की देखरेख में सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद के लिए विश्वनाथ सिंह उत्क्रमित मध्य विद्यालय बलुआ एवं सचिव पद के लिए चितरंजन कुमार मध्य विद्यालय मानपुर का चुनाव किया गया ।चुनाव मंडल मार्गदर्शक के रूप में ए .आइ .पी .टी .एफ.के काउंसलर ,बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ के ऑडिटर रामभूषण उपाध्याय ,राज्य कार्यकारिणी सदस्य परमात्मा पांडेय उपस्थित रहे ।

उक्त चुनाव में जिला प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रवक्ता नवल किशोर तिवारी शशि भूषण पांडेय, अतीक अहमद मुकेश कुमार श्रीवास्तव एवं अन्य भारी संख्या में शिक्षक उपस्थित रहे जिसमें मुख्य रूप से सविता सिंह अनिल कुमार सिंह प्रियांशु आनंद रत्न ा कुमारी हरेंद्र सिंह ,इशरत परवीन ,परवीन गुलअंसरिया ,अंजलि बानो हलीमा आशा ऋतु कुमारी शाहीन ,कमलेश कुमार निर्भय कुमार अंजनी पाण्डेय आदि कइ शिक्षकों ने हाथ उठाकर सर्वसम्मति से एकजुटता का परिचय दिया ।

स्वच्छता जागरूकता अभियान एवं नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

पटना/डुमरांव(बक्सर) । केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार,पटना के द्वारा रविवार (24.9.2023)को बक्सर जिला के डुमरांव प्रखंड अंतर्गत प्रगति कोचिंग क्लासेस, डुमरांव में स्वच्छता ही सेवा विषय पर जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

इस अभियान के तहत प्रगति कोचिंग क्लास के छात्र-छात्राओं के बीच स्वच्छता शपथ दिलाई गई। इस दौरान विभा कुमारी श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी डुमराव बक्सर ने छात्र-छात्राओं को स्वच्छता के प्रति जागरुक करते हुए कहा कि महात्मा गांधी का सपना था स्वच्छ एवं विकसित देश का आज माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश इस स्वच्छता अभियान को अपना रहा है और आमजन भी इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम सभी सप्ताह में कम से कम दो-दो घंटे यानी प्रतिवर्ष 100 घंटे का श्रमदान करके महात्मा गांधी के इस संकल्प को चरितार्थ करने में अपना योगदान दें। स्वच्छता शपथ के बाद कोचिंग के छात्र-छात्राओं द्वारा आसपास के क्षेत्र की साफ सफाई की गई और उनसे प्राप्त कूड़े कचरे का निष्पादन नगर परिषद द्वारा रखी गई डस्टबिन में देकर किया गया इस अभियान के तहत विभागीय पंजीकृत दल के कलाकारों द्वारा स्वच्छता विषय पर नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं के अलावा बड़ी संख्या में स्थानीय गणमान्य लोगों ने भी भाग लिया।

प्रधानमंत्री के मन की बात को सभी बूथो पर सुना गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। प्रधानमंत्री जी के मन की बात के 105 वें संस्करण को भारतीय जनता पार्टी द्वारा भोजपुर जिला के सभी 32 मंडल अंतर्गत बूथो पर सुना और देखा गया। प्रधानमंत्री जी के मन की बात को भाजपा कार्यकताओं और आम जनता द्वारा टीवी स्क्रीन, रेडियो, मोबाइल,नमो एप्प सहित विभिन्न माध्यमो से सीधा प्रसारण को देखा गया। जिलाध्यक्ष दुर्गा राज के नेतृत्व मे आरा नगर के बूथ नं. 135 वार्ड संख्या 06 मे बाँसटाल स्थित मेयर के निवास स्थान पर टीवी स्क्रीन पर देखा और सुना गया। कार्यक्रम मे जिला उपाध्यक्ष ई. धीरेंद्र सिंह,प्रेम पंकज ललन,प्रमोद गुप्ता, आलोक रंजन सहित बूथ कार्यकर्ता थे।

वहीं भारतीय जनता पार्टी बिहार प्रदेश किसान मोर्चा अध्यक्ष मनोज सिंह का आगमन आरा मे हुए। वे बहिरो बूथ नं. 325 उपमेयर के निवास स्थान पर पहुँचे और मन की बात कार्यक्रम मे शामिल हुए। प्रधानमंत्री जी के मन की बात कार्यक्रम के बाद फलदार वृक्षो का पौधारोपन हुआ। कार्यक्रम मे भाजपा नेता प्रहलाद राय,जिला उपाध्यक्ष वंदना राजवंशी,महेश पासवान, पंचायती राज प्रकोष्ठ संयोजक सरोज सिंह,शंकर दयाल कुशवाहा, ज्योति प्रकाश कुशवाहा, राजीव रंजन तिवारी, मृत्युंजय तिवारी, अभिमन्यु सिंह, अनिल कुमार पाण्डेय, कुमार गौतम,दीपक कुमार सिंह,सुशील मिश्रा सहित कार्यकर्ता शामिल हुए। भोजपुर जिला के विभिन्न स्थानो पर मन की बात कार्यक्रम के लिए बड़ा स्क्रीन लगाया गया था।। बड़हरा विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह अपने विधानसभा क्षेत्र मे कार्यक्रम मे शामिल हुए।

कांग्रेस के परिवर्तन संकल्प रैली को लेकर कार्यक्रम के संयोजक डॉ अजय कुमार सिंह की प्रेस वार्ता

प्रात : किरण संवाददाता

कांग्रेस मैदान शहीद भवन आरा में भोजपुर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित परिवर्तन संकल्प रैली की सफलता को लेकर आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए बिहार प्रदेश कांग्रेस के पूर्व उपाध्यक्ष सह परिवर्तन संकल्प रैली के संयोजक पूर्व विधान पार्षद डॉ अजय कुमार सिंह ने कहा कि केंद्र की किसान विरोधी नौजवान विरोधी एवं जन विरोधी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए परिवर्तन संकल्प रैली में हजारों की संख्या में भोजपुर जनपद के लोग शिरकत करेंगे देश को दो बड़े पूंजीपतियों अडानी और अंबानी के हवाले कर राष्ट्र के संपदा को बिक्री कर केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने देश के साथ धोखा किया है नौजवानों को रोजगार छीनकर सड़क पर खड़ा कर नौजवानों को दर-दर भटकने के लिए मजबूर किया है नौजवानों किसानों का आक्रोश परिवर्तन संकल्प रैली में कांग्रेस मैदान में दिखेगा परिवर्तन संकल्प रैली को सफलता को लेकर आयोजित प्रेस वार्ता में बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस चिकित्सा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष डॉक्टर आलोक कुमार, भोजपुर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अशोक राम बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व प्रतिनिधि शिवकुमार सिंह बिहार प्रदेश कांग्रेस विधि एवं मानवाधिकार विभाग के महासचिव प्रमोद राय अधिवक्ता समेत और गणमान्य लोग उपस्थित थे

एनसीपी अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ अध्यक्ष बने अमीर इकबाल

प्रात : किरण संवाददाता

रोहतास। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी बिहार प्रदेश उपाध्यक्ष सह रोहतास जिला प्रभारी आशुतोष सिंह के अनुशंसा से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी रोहतास जिला कार्यकारी अध्यक्ष रामबाबू के द्वारा नियुक्ति पत्र अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष रोहतास आमिर एकबाल वालीजी को दिया गया,राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी रोहतास जिला अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष आमिर इकबाल बालीजी को आज से बनाया गया,इस अवसर पर जिला कार्यालय में एनसीपी नेता विमलेश सिंह के नेतृत्व में जिला कार्यालय सासाराम में फूलमाला से प्रदेश उपाध्यक्ष आशुतोष सिंह और अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष आमिर एकबाल वालीजी को स्वागत किया गया,इस अवसर पर बिहार प्रदेश उपाध्यक्ष आशुतोष सिंह ने कहा कि एनसीपी के सभी कार्यकताओं के राय से आमिर इकबाल बालीजी को अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष बनाया गया है,पूरा उम्मीद है कि रोहतास जिला के हर प्रखंड हर पंचायत हर गांव में अल्पसंख्यक संगठन को तैयार करेंगे और पार्टी को बहुत ही मजबूत करेंगे,इस अवसर पर अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष ने कहा कि मेरा पूरा कोशिश रहेगा की पार्टी प्रखंड पंचायत गांव तक मजबूत करूंगा और सभी पदाधिकारी कार्यकर्ता को मान सम्मान देने का काम करूंगा,इस स्वागत के कार्यक्रम में मुख्य रूप से बिहार प्रदेश उपाध्यक्ष आशुतोष सिंह,कार्यकारी जिला अध्यक्ष रामबाबू,अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष आमिर इकबाल बालीजी,परशुराम सिंह,विमलेश सिंह,अनिल सिंह,येनुल खान,सुषमा देवी,सतीश पासवान,संजय दुबे,विनोद चौधरी,लता सिंन्हा,गुड्डू अंसारी,आकाश पासवान,तन्बिर इमाम,गुदु इमाम,विशेषण प्रसाद गुप्ता,बंटी पाठक,सैकड़ो लोग जिला कार्यालय सासाराम स्वागत कार्यक्रम में मौजूद थे।

भारतीय फासीवाद के विरुद्ध सांस्कृतिक प्रतिरोध का आह्वान

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। फासीवाद को लेकर किसी विभ्रम में रहने की स्थिति नहीं रह गयी है। चुनावी लोकतंत्र से फासीवाद का अनिवार्य टकराव नहीं है। भारत में फासीवाद लोकतांत्रिक ढांचे का उपयोग करके आया है। सरकार और देश की आलोचना के फर्क को मिटा दिया गया है। आजादी, बराबरी और भाईचारा के जो आधुनिक मूल्य हैं, राष्ट्रीय आंदोलन की जो साझी विरासत है, फासिस्ट सरकार उसे मिटाने पर लगी हुई है। सरकार के विरोध को देशद्रोह के समान बताया जाने लगा है। इसके विरुद्ध हमें अपनी राष्ट्रीय स्मृतियों को जीवित रखने तथा साझी विरासत को बचाए रखने के लिए संघर्ष करना होगा ।" आज दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, आलोचक और जसम राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य प्रो. आशुतोष कुमार ने जन संस्कृति मंच, भोजपुर के प्रथम जिला सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ये विचार व्यक्त किये।

प्रो. आशुतोष कुमार ने कहा कि आज राज्य किसी एक व्यक्ति को भी आतंकवादी बता सकता है। सिर्फ कोई इरादा रखना भी देशद्रोह हो सकता है। किसका क्या इरादा है, यह भी सरकार अपने हिसाब से बताएगी। सोचने, विचार और बहस करने की संभावनाएँ निरंतर खत्म होती जा रही है। मीडिया, न्यायपालिका, मानवाधिकार जैसी संस्थागत व्यवस्थाओं को लगभग खत्म कर दिया गया है। आज कई मुद्दों पर खुलकर बहस करने की स्थिति नहीं रह गयी है। भारत में हमसब फासीवाद की परिस्थितियों के बीच है। बुद्ध, कबीर, अमीर खुसरो, मीरा, बुल्ले शाह, फुले, गांधी, अंबेडकर, भगत सिंह, नेहरू तक जो सांस्कृतिक प्रवाह है, उसे नष्ट करने की कोशिश की जा रही है। फासीवादी ताकतें प्रतिक्रांतिकारी संस्कृति को बढ़ावा दे रही हैं। उन्होंने कहा कि फासीवाद केवल शासकीय तानाशाही नहीं है, बल्कि तानाशाही फासीवाद में तब बदलता है, जब तानाशाह शासक को समाज से समर्थन प्राप्त होता है।

जसम के राष्ट्रीय महासचिव मनोज कुमार सिंह ने कहा कि यह भ्रम है कि फासिस्ट ताकतें विकास करती हैं। सच यह है कि अर्थव्यवस्था के स्तर पर हमारा देश बहुत पीछे चला गया है। आर्थिक विषमता, महंगाई, बेरोजगारी बढ़ी है। फासीवादी हमलों के विरुद्ध सांस्कृतिक मोर्चे पर बड़ी लड़ाई लड़नी होगी। उन्होंने कहा कि प्रतिगामी कला-संस्कृतिकर्म की सरकार खुलकर मदद कर रही है ।जनवादी लेखक संघ के राज्य अध्यक्ष कथाकार नीरज सिंह ने कहा कि 90 के दशक में आर्थिक उदारीकरण और सांप्रदायिक उन्माद की संस्कृति के जरिए फासिस्ट राजनीति मजबूत हुई। इस राजनीतिक-आर्थिक संस्कृति ने पूरे समाज को विभाजित कर दिया है। 1992 में मस्जिद को ढाह दिया गया और देश का बड़ा हिस्सा सिनेमा की तरह उसे देखता रहा। यह जो विचार और विवेक पर चौतरफा हमला हो रहा है, उसके विरुद्ध समाज को एकताबद्ध करना आज का जरूरी सांस्कृतिक कार्यभार है। पत्रकार गुंजन ज्ञानेंद्र सिन्हा ने कहा कि यह सोचना होगा कि फासीवाद को भोजन-पानी-खाद कहाँ से मिलती है? यह अतीत की आहत अस्मिता से मिलती है; जिसे बहुत सुनियोजित तरीके से निर्मित किया गया है।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भोजपुर के अध्यक्ष प्रो. बलराज ठाकुर ने कहा कि अभी तो भारतीय फासीवाद का क्रूर रूप आना बाकी है। प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से कवि ओमप्रकाश मिश्र ने भी जसम के सम्मेलन को शुभकामनाएँ दीं।

इस अवसर पर जनकवि कृष्ण कुमार' निमोहीं गायक राजू कुमार रंजन, सुरेश राम, सूर्य प्रकाश, अमित मेहता, ने जनगीत प्रस्तुत किये। उद्घाटन सत्र का संचालन कवि सुमन कुमार सिंह ने किया। सांगठनिक सत्र की अध्यक्षता जितेंद्र कुमार और कृष्ण कुमार निमोर्ही ने किया। राज्य सचिव दीपक सिन्हा सम्मेलन के पर्यवेक्षक थे। सुमन कुमार सिंह ने सांगठनिक दस्तावेज का पाठ किया। इसके बाद युवानीति के पूर्व सचिव धनंजय, अरुण प्रसाद, कवि वल्लभ, गायक-रंगकर्मी राजू कुमार रंजन आदि ने दस्तावेज पर बहस में भाग लिया। सम्मेलन ने 21 सदस्यीय जिला परिषद और 7 सदस्यीय जिला कार्यकारिणी का चुनाव किया। सुमन कुमार सिंह को जसम, भोजपुर का सचिव तथा जितेंद्र कुमार को अध्यक्ष बनाया गया।

आयुष्मान भारत कार्यक्रम के लाभार्थियों से सिविल सर्जन ने किया तलब

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।आयुष्मान भारत योजना के पांच साल पूरे होने के उपलक्ष्य में शहर के जय प्रकार नारायण सदर अस्पताल सभागार में आयुष्मान दिवस समारोह का आयोजन किया गया है इस समारोह का आयोजन आयुष्मान भवः कार्यक्रम के जिला क्रियान्वयन ईकाई द्वारा किया गया है ।इस समारोह के मुख्य अतिथि सिविल सर्जन डॉ रंजन कुमार सिंह रहे हैं ।इस मौके पर उनके साथ आयुष्मान भारत जिला कार्यक्रम समन्वयक नलिन मौर्य, बीएचएम संजय अंबष्ट, आइटी मैनेजर रीना, प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर कल्याणी और सीएससी मैनेजर सहित डेवलपमेंट पार्टनर सेंटर डायरेक्ट के प्रतिनिधि, सीएससी आपरेटर तथा आरोग्य मित्र आदि मौजूद रहे हैं इस समारोह का शुभारंभ सिविल सर्जन ने दीप प्रज्वलित कर किया है ।उन्होंने बताया आयुष्मान भारत समारोह के आयोजन का मुख्य उद्देश्य इस योजना के लाभार्थियों के साथ संवाद स्थापित करना है ।अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत योजना से अधिक से अधिक लाभार्थी को जोड़ा जाये। यह देश की एक बड़ा लोक कल्याणकारी योजना है। अधिक से अधिक संख्या में आयुष्मान कार्ड बनाया जाये। कॉमन सर्विस सेंटर के आपरेटरों को प्रेरित करते हुए कहा कि आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए अपने स्तर से लोगों को जागरूक करें और बताया कि अब तक कुल 16 हजार से अधिक लाभार्थी इस योजना की मदद से मुफ्त इलाज करा चुके हैं। इनमें दर्जनों लाभार्थी ऐसे हैं जो गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर और ह्रदय रोग जैसी बीमारियों को इलाज करा पाने में सक्षम हुए हैं।

आयुष्मान भारत के जिला कार्यक्रम समन्व्यक नलिन मौर्य ने बताया कि समारोह में 45 से अधिक आयुष्मान योजना के लाभार्थियों ने हिस्सा लिया है ।कार्यक्रम के दौरान बेहतर कार्य करने वाले कॉमन सर्विस सेंटरों के ऑपरेटरों को मोमेंटो दे कर पुरस्कृत किया गया है ।इस मौके पर मगध मेडिकल कॉलेज और जेपीएन सदर अस्पताल में कार्यरत आरोग्य मित्र शुभम कुमार एव विकास पटेल को प्रशस्ति पत्र दिया गया है ।आयुष्मान भारत कार्यक्रम के प्रति लोगों को जागरूक करने, कार्ड बनवाने के लिए प्रेरित करने जैसे कामों के लिए सेंटर डायरेक्ट एवं सीएससी के जिला समन्वयक को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया है।

शेरघाटी प्रखंड के जमील अख्तर ने बताया कि उन्हें गले में कैंसर रूपी गांठ थी जिसका उपचार करना बेहद खचीर्ला था। आयुष्मान कार्ड बनने से पूर्व इलाज में काफी परेशानी आ रही थी, काफी पैसा खर्च हो रहा था लेकिन आयुष्मान कार्ड सही समय पर मिल जाने के कारण उन्होंने अपने गांठ का ऑपरेशन कराया गया है ।इस योजना के तहत उनका निःशुल्क इलाज हो पाया गया है ।अस्पताल में इलाज के दौरान किसी भी प्रकार का समस्या का सामना नहीं करना पड़ा है ।इस समारोह के दौरान जिला आईटी मैनेजर रीना ने आयुष्मान कार्ड बनाने को ले कर ऐप की जानकारी दी गई है ।

सामाजिक अधिकारिता शिविर में सहायक उपकरणों के वितरण का आयोजन

भोजपुर आरा (बिहार) मे सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एडिप योजना के अन्तर्गत निःशुल्क सहायक उपकरण वितरण शिविर का आयोजन किया गया । एडिप योजना के अंतर्गत कुल 2494 लाभाथीर्यों को जिला प्रशासन के सहयोग से जुलाई 2023 में चिन्हित किया गया था। इन पूर्व चिन्हित लाभार्थियों को लगभग रुपए 303 लाख 66 हजार मूल्य के 4194 सहायक उपकरणों का निःशुल्क वितरण किया।

भोजपुर आरा (बिहार) मे आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि आर0के0 सिंह जी, माननीय केन्द्रीय मंत्री, विद्युत नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा, विधायकगण बड़हरा विधायक राघवेंद्र प्रताप सिंह ,राज कुमार, जिलाधिकारी, भोजपुर-आरा, नीतीश कुमार, सहायक निदेशक, भोजपुर आरा व अन्य अतिथिगणों की उपस्थिती मे सम्पन्न किया गया।

समारोह का आयोजन सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के अधीन कार्यरत भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) कानपुर द्वारा एवं जिला प्रशासन भोजपुर आरा के सहयोग से किया गया। शिविर में आये दिव्यांगजनों को भोजपुर आरा जनपद के विभिन्न स्थानों में आयोजित किये गये। परिक्षण शिविरों में चिन्हित किया गया था । इन पूर्व चिन्हित लाभार्थियों को एडिप योजना केअन्तर्गत विभिन्न श्रेणी के दिव्यांगजनों के लिए सहायक उपकरण को जीवन सहायक यन्त्र प्रदान किया। इसमें कोई संदेह नहीं की सहायक उपकरण प्राप्त करने वाले लाभार्थी सक्षम हैं - समर्थ है. इन सहायक उपकरणों के माध्यम से लाभार्थियों को स्वावलम्बी व सशक्त करने और उन्हें समाज की मुख्य धारा के साथ जोड़ने का एक प्रयास है। इस शिविर में भोजपुर से आए दिव्यांग एवं भाजपा के कार्यकर्ता एवं नीता भाजपा पदाधिकारी उपस्थित थे।

चेक गणराज्य में बहती हैं बीयर की नदियां!

नई दिल्ली। क्या आप जानते हैं कि दुनिया में बीयर की सबसे ज्यादा खपत किस देश में होती है? इसका जवाब है चेक गणराज्य। इस यूरोपीय देश में हर आदमी सालाना 140 लीटर बीयर गटक जाता है। सबसे ज्यादा बीयर पीने के मामले में 10 में से नौ देश यूरोप के हैं। इनमें चेक गणराज्य, ऑस्ट्रिया, रोमानिया, जर्मनी, पोलैंड, आयरलैंड, स्पेन, क्रोएशिया और लात्विया शामिल हैं। टॉप 10 में शामिल एकमात्र गैर यूरोपीय देश नामीबिया है।

यामाहा ने मोटोजीपी में शोकेज की अपकमिंग बाइकें

नई दिल्ली। यामाहा मोटर इंडिया ने ग्रेटर नोएडा के बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट में चल रहे मोटोजीपी इंडियन ग्रांड प्रिक्स में अपनी अपकमिंग बाइक आर3 और एमटी-03 को शोकेज किया है। कंपनी दोनों बाइकों को भारत में 400सीसी सेगमेंट में उतारेगी। कंपनी नए मॉडलों को इस साल दिसंबर तक भारत में लॉन्च कर सकती है।

लक्जरी कार कंपनियों को त्योहारी सीजन में बिक्री में भारी उछाल की उम्मीद

नई दिल्ली, एजेंसी। लक्जरी कार कंपनियां मर्सिडीज-बेंज, लेक्सस और ऑडी को चालू त्योहारी सीजन में बिक्री की रफ्तार जारी रहने की उम्मीद है। उनका कहना है कि त्योहारी सीजन में महंगी गाड़ियों की मांग काफी अच्छी है। मर्सिडीज-बेंज इंडिया के प्रबंध निदेशक (एमडी) और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) संतोष अय्यर ने कहा कि इस साल त्योहारी सीजन पिछले साल की तुलना में ज्यादा अच्छा प्रतीत हो रहा है।

उन्होंने कहा, इस साल त्योहारी सीजन चार महीने तक चलेगा और हम इसको लेकर आशान्वित हैं, क्योंकि हमने 'ओणम से बहुत सकारात्मक शुरुआत की है। लेक्सस इंडिया के अध्यक्ष नवीन सोनी ने कहा कि देश में लक्जरी कार बाजार लगातार वृद्धि कर रहा है। उन्होंने कहा, इस साल महंगी कारों की मांग से उद्योग उत्साहित है। विभिन्न खंडों के लिहाज से देखें, तो लक्जरी कारों का बाजार तेज रफ्तार से बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि उच्च संपदा वाले व्यक्तियों (एचएनआई), युवा आबादी, खर्च योग्य आमदनी बढ़ने, स्थिर आर्थिक वृद्धि के साथ यात्रा करने वाले लोगों की बढ़ती संख्या इस वृद्धि को बढ़ावा दे रही है। ऑडी इंडिया के प्रमुख बलबीर सिंह ढिल्लों ने कहा कि कंपनी 2023 की पहली छमाही में 3,474 गाड़ियां बेच चुकी है, जो सालाना आधार पर 97 प्रतिशत वृद्धि है।

पिता बेचते थे फल, बेटे ने खड़ी कर दी 400 करोड़ की कंपनी, मेहनत से हासिल किया मुकाम

साल 1984 में रघुनंदन ने अपना पहला आइसक्रीम ब्रांड नेचुरल्स शुरू किया

कस्टमर की संख्या बढ़ाने के लिए रघुनंदन ने मसालेदार पाव भाजी भी बेची

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं जो आर्थिक रूप से कमजोर थे। लेकिन उन्होंने अपनी मेहनत और लगन के दम पर नई ऊंचाईयों को छुआ है। आज हम आपको एक ऐसे ही शख्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसने अपनी मेहनत के दम पर 400 करोड़ रुपये की कंपनी खड़ी कर दी है। सफलता की ये कहानी है नेचुरल्स आइसक्रीम प्रोडक्ट को ब्रांड बनाने की। साल 1984 में मुंबई में रघुनंदन श्रीनिवास कामत ने इसकी शुरुआत की थी। कामत ने नेचुरल आइसक्रीम को हर घर में पहुंचाने के लिए अपनी पूरी जान लगा दी। आईए आपको बताते हैं कैसे उन्होंने इतनी सफलता हासिल की और किस तरह से अपनी बिजनस को इतना आगे बढ़ाया।

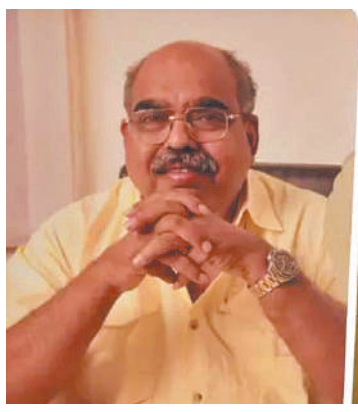

रघुनंदन श्रीनिवास कामत के पिता कर्नाटक के मैंगलोर जिले के एक गांव में आम का ठेला लगाते थे। रघुनंदन ने अपने पिता से फल का सही चुनाव करना और उसे संरक्षित करना सीखा। कई साल तक पिता के साथ रहकर उन्होंने फलों का चुनाव करना और उसे प्रीजर्व्ड करना सीखा, फिर बिजनेस करने की प्लानिंग से मुंबई आ गए। रघुनंदन ने साल 1984 में 14 फरवरी को अपना पहला आइसक्रीन ब्रांड नेचुरल्स शुरू किया और मुंबई के जुहू में पहला स्टोर खोला। उस समय उनकी कंपनी में सिर्फ चार कर्मचारी थे और आइसक्रीम के 10 फ्लेवर के साथ बिजनेस शुरू किया।

आइसक्रीम के साथ बेची पावभाजी

जब रघुनंदन ने आइसक्रीम का बिजनस शुरू किया तो उनके जुहू स्थित आइसक्रीम पार्लर पर ज्यादा लोग नहीं आ रहे थे। वह नेचुरल आइसक्रीम बना रहे थे। लेकिन ग्राहकों की संख्या काफी कम थी। ऐसे में उन्हें एक तरीका सूझा। रघुनंदन ने आइसक्रीम के साथ मसालेदार पाव भाजी का काम भी शुरू किया। अब पावभाजी खाने के बाद लोगों को तीखा लगता तो वह कामत की की मीठी और ठंडी आइसक्रीम खाते। वह केवल फल, दूध और चीनी से आइसक्रीम बना रहे थे। इसमें कोई मिलावट नहीं थी। यही वजह रही कि लोगों को धीरे-धीरे उनपर विश्वास बढ़ने लगा। रघुनंदन के आइसक्रीम पार्लर पर ग्राहकों की संख्या बढ़ने लगी।

छोटी सी दुकान से किया बड़ा धमाल

कामत ने जुहू के कोलीवाड़ा इलाके में 200 वर्ग फीट की अपनी छोटी दुकान से पहले साल में 5,00,000 रुपये का कारोबार किया। एक साल बाद उन्होंने आइसक्रीम का कंप्लीट ब्रांड बनाने के लिए पाव भाजी भेजना बंद कर दिया। कामत का छह टेबल वाला रेस्तरां अब 5 स्वाद में फलों की जमी हुई आइसक्रीम पेश कर रहा था। इसमें कस्टर्ड सेब, काजू किसमिस, आम, चॉकलेट और स्ट्रॉबेरी फ्लेवर के आइसक्रीम शामिल थे।

आज करोड़ों का कारोबार

आज नेचुरल आइसक्रीम के देशभर में 135 से ज्यादा आउटलेट हैं। इन आउटलेट पर कटहल, कच्चा नारियल, काला जामुन जैसे 20 फ्लेवर्स की आइसक्रीम बिक रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, नेचुरल आइसक्रीम का टर्नओवर 400 करोड़ को पार कर गया है। कामत ने अपनी आइसक्रीम की इस खासियत को करीब 4 दशक से बनाए रखा है कि इसमें कोई भी कलर या केमिकल नहीं मिलाया जाता।

इंडिया- मिडिल ईस्ट कॉरिडोर है फायदेमंद, हैं कई चुनौतियां

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली में जी20 समिट में एक अहम घोषणा हुई। समिट में इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर बनाने की घोषणा की गई। इस कॉरिडोर का फायदा भारत, यूएई, सऊदी अरब, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली और यूरोपीय यूनियन समेत आठ देशों को इस प्रोजेक्ट का फायदा मिलेगा। दो महाद्वीपों में फैला एक अंतरराष्ट्रीय रेल और शिपिंग मार्ग एशिया, अरब की खाड़ी और यूरोप के बीच कनेक्टिविटी और आर्थिक गतिवधियों बढ़ेगी, जिसका फायदा इकॉनमी को बढ़ाने में मिलेगी। इतना ही नहीं भारत के मुंबई से शुरू होने वाला यह कॉरोडिर चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का विकल्प होगा। इतना ही नहीं ये कॉरिडोर भारत और अरब देशों के बीच के संबंधों को मजबूत करेगा।

इस कॉरिडोर के रूट की शुरुआत समुद्री मार्ग से मुंबई से जेबल अली, यूएई से शुरू होकर अगला पड़ाव रेल के जरिए सऊदी अरब और जॉर्डन से इजराइज के

हाफिया पोर्ट तक होगा। वहीं तीसरा हिस्सा हाफिया पोर्ट से ग्रीस में पीरियस होते हुए यूरोपीय यूनियन में प्रवेश करेगा। हालांकि इस प्रोजेक्ट के कॉस्ट को लेकर कहीं कोई बात नहीं की गई है। इस कॉरिडोर से माल ढुलाई पर आने वाले खर्च के बारे में भी कोई बात नहीं की गई है।

मौजूदा वक्त में मुंबई से ग्रीस तक स्वेज़ नहर के जरिए परिवहन होता है, जो कि ट्रांसपोर्टेशन का किफायती रास्ता है। आईएमईसी कॉरिडोर को स्वेज़ नहर वाले मार्ग से और अधिक किफायती होना होगा, जो थोड़ा मुश्किल लग रहा है। जमीन के मुकाबले समुद्र के रास्ते परिवाहन करना आसान और सस्ता होता है। रोड और रेल के मुकाबले जहाज से माल ढुलाई सस्ता और आसान रहा है। रेल और रोड के जरिए माल ढुलाई ईंधन और खर्च दोनों को बढ़ाता है। स्वेज़ कैनल यूरोप से भारत तक समुद्री रास्ते से माल ढुलाई का सस्ता विक्लप है। भले ही समंदर का रास्ता लंबा हो, लेकिन फिर भी लो रेल माल ढुलाई से सस्ता पड़ता है। इसे अमेरिका के पनामा कैनाल के फॉर्मूले से समझते हैं। अमेरिका पूर्व से पश्चिम तक माल ढुलाई पनामा कैनाल के जरिए करता है। पनामा कैनाल रेल मार्ग से काफी लंबा है, लेकिन भारी भरकम कैनाल फीस देने के बावजूद ये काफी किफायती है।

एक और उदाहरण से समझ लेते हैं। ओडिशा को माइनिंग का प्रमुख राज्य है। ये दक्षिण और पश्चिम राज्यों के पावर स्टेशन को कोल भेजने का काम करता है। पहले ये काम रेल के जरिए होता था, लेकिन पिछले कुछ सालों से समंदर के जरिए पारादीप पोर्ट के जरिए आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु तक भेजे जाते हैं। भले ही ये रास्ता लंबा है, लेकिन सस्ता होने की वजह से अब समुद्री रास्ते से ही माल ढुलाई होती है। समुद्री मार्ग कैसे रेल या सड़क मार्ग से सस्ता पड़ता है, इसे आंकड़ों से समझते हैं। ओडिशा के पारादीप से गुजरात के दहेज पोर्ट तक कोल भेजने में 256 रुपये प्रति टन का खर्च आता है। लोडिंग के खर्च को जोड़ दें तो ये 560 रुपये प्रति टन तक पहुंच जाता है। ये खर्च रेल से माल ढुलाई पर आने वाले खर्च का आधा है।

अभी तक ये स्पष्ट नहीं हो पाया है कि इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर स्वेज नहर से छोटा है या नहीं। हो सकता है कि ये रास्ता छोटा हो, लेकिन रेल लाइन का क्या अगर मैप को देखें तो सऊदी अरब से लेकर जॉर्डन के बीच रेल मार्ग को पहाड़ों से होकर गुजरना होगा। दो मैप दिख रहा है, उससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि रेल मार्ग लंबा हो सकता है। शिप से रेल और फिर रेल से शिप पर माल की लोडिंग और अनलोडिंग का खर्च भी अतिरिक्त होगा। खर्च के साथ-साथ इसमें लगने वाला समय भी बढ़ेगा। बार-बार माल की लोडिंग और अनलोडिंग से इंश्योरेंस कॉस्ट भी बढ़ने की संभावना है, क्योंकि कार्गो डैमेज का रिस्क बढ़ जाएगा।

भारत की स्टॉक मार्केट दुनिया की सबसे महंगी, कमाई की संभावनाएं सबसे अच्छी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत का स्टॉक मार्केट दुनिया में सबसे महंगा है। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार का कहना है कि हाल में हुए सुधार के बाद भी, निफ्टी वित्त वर्ष 2024 की इनकम के करीब 20 गुना पर कारोबार कर रहा है। इससे भारत दुनिया का सबसे महंगा बाजार बन गया है। एक खबर के मुताबिक, इस महीने की शुरुआत में शुरू हुई एफपीआई की बिक्री 22 सितंबर को खत्म सप्ताह में भी जारी रही। इसी महीने अब तक के 15 कारोबारी सत्र में, 11 दिनों में एफआईआई विक्रेता रहे।

खबर के मुताबिक, एनएसडीएल के आंकड़ों के मुताबिक, 22 सितंबर तक एफपीआई ने 10164 करोड़ रुपए की इक्विटी बेची। इसमें प्राइमरी मार्केट के जरिए से थोक सौदे और निवेश शामिल हैं। विजयकुमार ने कहा कि इस महीने अब तक नकदी बाजार में एफआईआई ने 18260 करोड़ रुपए की बिक्री की है। हालिया गिरावट के बाद भी वैल्यूएशन ऊंचा बना हुआ है। अमेरिकी बॉन्ड यील्ड आकर्षक है (यूएस 10-वर्षीय बॉन्ड यील्ड लगभग 4.49 प्रतिशत है)। एफआईआई बिक्री पर दबाव डाल सकते हैं। उनका कहना है कि जब अमेरिका में 10 साल की बॉन्ड यील्ड करीब 4.49 प्रतिशत है और डॉलर इंडेक्स 105 से ऊपर है, तो एफआईआई से एग्रेसिव तरीके से खरीदारी की उम्मीद करने का कोई मतलब नहीं होगा।

कमाई की संभावनाएं सबसे अच्छी

विजयकुमार ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं कि दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच भारत में विकास और कमाई की संभावनाएं सबसे अच्छी हैं। इसलिए, अगर बाजार में 3 से 4 प्रतिशत की गिरावट आती है, तो एफआईआई खरीदार बन सकते हैं, भले ही अमेरिकी बॉन्ड में रुझान ऊंचा हो। एफआईआई की बिक्री घरेलू निवेशकों के लिए एक अवसर हो सकती है, जिन्हें डॉलर इंडेक्स और यूएस बॉन्ड यील्ड के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

9.5 करोड़ पाकिस्तानी गरीबी में, आर्थिक स्थिरता के लिए तत्काल सुधार की जरूरतः विश्व बैंक

इस्लामाबाद एजेंसी। विश्व बैंक ने कहा है कि पिछले वित्त वर्ष में पाकिस्तान में गरीबी बढ़कर 39.4 प्रतिशत हो गई है। खराब आर्थिक हालात के कारण 1.25 करोड़ से अधिक लोग इसकी चपेट में आए हैं और वित्तीय स्थिरता हासिल करने के लिए देश को तत्काल कदम उठाने होंगे। एक खबर के अनुसार वाशिंगटन स्थित ऋणदाता ने शुक्रवार को एक मसौदा नीति का अनावरण किया। इसे पाकिस्तान की अगली सरकार के लिए सभी हितधारकों की मदद से तैयार किया है।

विश्व बैंक के अनुसार पाकिस्तान में गरीबी एक साल के भीतर 34.2 प्रतिशत से बढ़कर 39.4 प्रतिशत हो गई है। इसके साथ ही 1.25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी रेखा से नीचे आ गए हैं। पाकिस्तान में 3.65 अमेरिकी डॉलर प्रतिदिन के आय स्तर को गरीबी रेखा माना जाता है। मसौदा नीति में कहा गया कि लगभग 9.5 करोड़ पाकिस्तानी अब गरीबी में रहते हैं। पाकिस्तान के लिए विश्व बैंक के प्रमुख अर्थशास्त्री टोबियास हक ने कहा कि पाकिस्तान का आर्थिक मॉडल अब गरीबी कम नहीं कर रहा है और समकक्ष देशों के मुकाबले यहां जीवन स्तर घट रहा है।

एपल, सैमसंग जैसी कंपनियों को राहत, बिना लाइसेंस एक साल और आयात कर सकेंगे कंप्यूटर, लैपटॉप

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत सरकार लैपटॉप, टैबलेट और पर्सनल कंप्यूटर के आयात के लिए लाइसेंस की अनिवार्यता की समयसीमा को और एक साल तक बढ़ा सकती है। सरकार के दो वरिष्ठ अधिकारियों ने यह जानकारी दी है। एपल, सैमसंग और लेनोवो जैसी बड़ी कंपनियों के लिए बहुत राहत की बात होगी।

सरकार ने तीन अगस्त को अचानक बिना लाइसेंस इलेक्ट्रानिक उपकरणों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसका मकसद खराब गुणवत्ता वाले लैपटॉप, टैबलेट और पर्सनल कंप्यूटरों के देश में आने से रोकना और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना था। इससे बड़ी कंपनियों को भारी नुकसान उठाना पड़ा था।

उद्योग जगत के विरोध के बाद सरकार ने इस योजना को लागू करने की समयसीमा तीन महीने बढ़ा दी थी। सूत्रों के मुताबिक, अब सरकार ने एक बार इसके क्रियान्वयन की समय सीमा को

एक साल बढ़ा दी है। इसका मतलब है कि अगले साल सितंबर तक बिना लाइसेंस के लैपटॉप, टैबलेट और पर्सनल कंप्यूटर आयात किए जा सकेंगे।

इधर, आयकर विभाग ने करदाताओं से कहा है कि अगर उनको जल्दी रिफंड चाहिए तो वे पहले के बकाये के संबंध में विभाग को जानकारी दें। सोशल मीडिया पर विभाग ने कहा, वित्त वर्ष 2022-23 के लिए रिफंड को जल्दी पूरा करने के लिए उसके पहले के बकाये के संबंध में जी भी जानकारी मांगी जा रही है, उसे तुरंत देना चाहिए। कुछ करदाताओं को पहले के बकाये के संबंध में नोटिस मिला था। इस पर इन लोगों ने आयकर विभाग से सोशल मीडिया पर सवाल किया था। इसके जवाब में विभाग ने कहा, यह करदाताओं के लिए एक अच्छा उपाय है जहां उनको न्याय दिलाने के लिए एक अवसर दिया जा रहा है। ऐसे में उनको मदद करनी चाहिए।

पांच लाख करोड़ रुपये तक पहुंचेगी सेमीकंडक्टर की मांग

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि आने वाले समय में सेमीकंडक्टर की मांग बढ़कर पांच लाख करोड़ रुपये होगी। यह अभी दो लाख करोड़ रुपये है। माइक्रोन के प्लांट से पहले चिप का उद्घाटन दिसंबर, 2024 से होगा। दो बड़े सेमीकंडक्टर प्रस्ताव प्रक्रिया में हैं। आने वाले कुछ महीनों में इन पर फैसला हो जाएगा। गुजरात के साणंद में माइक्रोन के सेमीकंडक्टर प्लांट के भूमिपूजन पर वैष्णव ने कहा कि परियोजनाएं एक विशेष क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करेंगी, जहां भारत वैश्विक स्तर पर चिप के क्षेत्र में एक अगुवा के रूप में उभर सकता है। वैश्विक सेमीकंडक्टर कंपनियां इस क्षेत्र में भारत की प्रगति और जटिल नीतिगत निर्णयों को क्रियान्वित करने की क्षमता को देख रही हैं। इसने भारत को एक प्रमुख विश्वसनीय देश के रूप में विकसित किया है।

कपड़ा क्षेत्र में चीन की छोड़ी जगह हासिल करने के लिए समग्र दृष्टिकोण जरूरीः एसआईएमए

कोयंबटूर एजेंसी। वैश्विक बाजार में उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाने के लिए कपड़ा और परिधान उद्योग को दीर्घकालिक नजरिए के साथ एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। साउदर्न इंडिया मिल्स एसोसिएशन (एसआईएमए) के अधिकारियों ने शनिवार को यह बात कही। उन्होंने कहा कि रोजगार देने के लिहाज से कपड़ा और परिधान उद्योग का कृषि के बाद दूसरा स्थान है। यह क्षेत्र जीएसटी के रूप में 30,000 करोड़ रुपए का राजस्व देता है और 44 अरब अमेरिकी डॉलर की विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। एसआईएमए के चेयरमैन एस के सुंदररमन ने कहा कि उद्योगों को हाल के दिनों में कच्चे माल के मोर्चे पर संरचनात्मक मुद्दों, उत्पादन की उच्च लागत, संचालन के पैमाने सहित अन्य चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि एसोसिएशन संरचनात्मक मुद्दों का समाधान करने और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने का प्रयास करेगा। एसोसिएशन के अधिकारियों के अनुसार केंद्र सरकार कपड़ा और परिधान उद्योग की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने पर जोर दे रही है और उसने कई मुद्दों पर ध्यान दिया है। एक प्रेस बयान में उन्होंने कहा, हालांकि, कुछ क्षेत्रों में नीति संबंधी खामियों और सरकारी बकाया वापस करने में देरी से उद्योग को लगातार उच्च वृद्धि दर हासिल करने में दिक्कत हो रही है। सुंदररमन ने केंद्रीय कपड़ा मंत्री पीयूष गोयल से अग्रिम प्राधिकरण योजना के तहत आयातित वीएसएफ (विस्कोस स्टेपल फाइबर) और सभी विशेष तथा मूल्य वर्धित फाइबर और फिलामेंट्स को छूट देने का आग्रह किया।

भारत से दुश्मनी ली तो नहीं गल पाएगी टूडो की दाल, लगेगा 3 लाख करोड़ का फटका

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और कनाडा के बीच बढ़ते कूटनीतिक विवाद के बाद दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को झटका लग रहा है। दोनों देशों के व्यापार को नुकसान उठाना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा नुकसान कनाडा को हो रहा है। ऐसा इसलिए क्योंकि कनाडा की इकॉनमी बहुत हद तक भारत और भारतीयों पर निर्भर करती है। न केवल भारत के साथ कनाडा का आयात-निर्यात प्रभावित होगा, बल्कि कनाडा में बसे भारतीय, जो वहां की इकॉनमी में बड़ा रोल

निभाते हैं उनकी नाराजगी झेलनी पड़ सकती है। भारतीय जो कनाडा की इकॉनमी में हर साल 3 लाख करोड़ का योगदान देते हैं, उनकी नाराजगी वहां की अर्थव्यवस्था पर भारी पड़ सकती है।

कनाडा में बसे और कनाडा जाकर पढ़ने वाले भारतीय हर साल वहां की इकॉनमी में 3 लाख करोड़ का योगदान देते हैं। अगर दोनों देशों के बीच संबंध बिगड़े तो कनाडा को इसका नुकसान उठाना पड़ सकता है। कनाडा में बसे 20 लाख भारतीयों वहां की अर्थव्यवस्था में बड़ा रोल निभाते हैं। उनका हर सेक्टर में दबदबा है। सिर्फ कनाडा जाकर पढ़ने वाले करीब साढ़े तीन भारतीय छात्र वहां की इकोनॉमी में 4.9 अरब डॉलर का योगदान देते हैं।

कनाडा में लगभग हर सेक्टर में भारतीयों का दबदबा है। चाहे खेती हो या आईटी, ट्रैवल हो या बिजनेस। प्रॉपर्टी, रिसर्च, स्मॉल बिजनेस में सबसे ज्यादा योगदान भारतीयों का और भारत ते निवेश का है।

खिले निवेशकों के चेहरे, लगा 20 प्रतिशत का अपर सर्किट

नई दिल्ली, एजेंसी। पिछले हफ्ते खबर आई की थी जेपी मॉर्गन इंडेक्स में इंडियन गवर्नमेंट बॉन्ड को शामिल किया जाएगा। शेयर बाजार के लिए यह अच्छी और बड़ी खबर है। इस न्यूज का असर दिखना शुरू हो गया है। पीएनबी गिल्ट्स के शेयरों की कीमतों में शुक्रवार को 20 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली। कंपनी के शेयर 100 रुपये से भी कम है। बता दें, पीएनबी गिल्ट्स गवर्नमेंट बॉन्ड्स को बेचने का काम करती है। शुक्रवार को 20 प्रतिशत का अपर सर्किट लगने के बाद कंपनी के शेयर 81.55 रुपये के लेवल पर बंद हुआ था। यह कंपनी का 52 वीक हाई है। बीते एक साल के दौरान कंपनी के शेयरों की कीमतों में 30 प्रतिशत से अधिक की तेजी देखने को मिली है।

भारत का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सबसे बड़ा 400 रन का स्कोर

राहुल-सूर्या ने जमाई फिफ्टी

आस्ट्रेलिया-भारत दूसरा वनडे

शुभमन गिल ने ठोका 6वां शतक

इंदौर (एजेंसी)। टीम इंडिया ने वनडे सीरीज के दूसरे मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया को 400 रन का टारगेट दिया है। टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 5 विकेट पर 399 रन बनाए। यह भारत का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे क्रिकेट में सबसे बड़ा स्कोर है। इससे पहले, भारतीय टीम ने 2013 में बेंगलुरु में 383 रन का स्कोर बनाया था। इंदौर के होलकर स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर बॉलिंग चुनी। भारतीय ओपनर शुभमन गिल (104 रन) और श्रेयस अय्यर (105 रन) ने शतकीय पारियां खेलीं, जबकि केएल राहुल और सूर्यकुमार यादव ने अर्धशतक जमाए। ऑस्ट्रेलियाई टीम से कैमरून ग्रीन ने 2 विकेट लिए।

गिल-अय्यर की हुई शतकीय साझेदारी-16 रन पर गायकवाड का विकेट गंवाने के बाद गिल और अय्यर ने शतकीय साझेदारी की। दोनों अर्धशतक जमा चुके हैं। पावरप्ले में भारत की हुई मजबूत शुरुआत पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम को गिल और अय्यर ने शानदार शुरुआत दिलाई। 16 पर गायकवाड का विकेट गंवाने के बाद गिल ने अय्यर के साथ अर्धशतकीय साझेदारी की।

शुबमन गिल ने रोहित शर्मा को पछाड़ा, 2023 में लगाए सर्वाधिक छक्के

इंदौर (एजेंसी)। शुबमन गिल को उनके करियर की शुरुआत में ही एक पीढ़ीगत प्रतिभा के रूप में पहचाना जाने लगा था। 2019 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद पंजाब के बल्लेबाज ने अब तक अपनी क्षमता दिखाई है कि वह क्या कर सकते हैं। गिल इस साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। शुबमन ने भारतीय कप्तान रोहित शर्मा के 43 छक्कों की संख्या को भी पीछे छोड़ दिया जो इस साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पूर्ण सदस्य देश के किसी भी बल्लेबाज द्वारा सबसे ज्यादा है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मोहाली में पहले वनडे में 63 गेंदों में 74 रनों की शानदार पारी खेलकर भारत को पांच विकेट से जीत दिलाने के बाद सभी की निगाहें 24 सितंबर रविवार को इंदौर में दूसरे गेम में 24 वर्षीय खिलाड़ी पर थीं। शुबमन ने सावधानीपूर्वक शुरुआत की। ऑस्ट्रेलिया द्वारा पहले क्षेत्ररक्षण करने का निर्णय लेने के बाद उन्होंने पहली 19 गेंदों में नौ रन बनाए। हालांकि उन्होंने नौवें ओवर में सीन एबॉट को एक चौका और एक छक्का जड़कर गियर बदला। इसके बाद शुभमन ने कैमरून ग्रीन द्वारा फेंके गए अगले ओवर में एक और चौका और छक्का लगाया। बारिश के कारण खेल रुकने से पहले दाएं हाथ के बल्लेबाज ने 2023 में 44 अंतरराष्ट्रीय छक्के लगाए।

2023 में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में भारत के लिए सर्वाधिक छक्के

शुबमन गिल - 44*
रोहित शर्मा- 43

पहले वनडे में शानदार अर्धशतक बनाने के बाद रुतुराज गायकवाड़ इसे फॉलो नहीं कर सके और जोश हेज़लवुड ने उन्हें सिर्फ 8 रन पर आउट कर दिया। पहले मैच में रन आउट होने वाले श्रेयस अय्यर को नंबर 3 पर बल्लेबाजी करने का एक और मौका मिला। मुंबई के बल्लेबाज ने साहस के साथ बल्लेबाजी की और अपना अर्धशतक पूरा करने के लिए कई चौके लगाए। श्रेयस को उम्मीद होगी कि वह अपनी तेज शुरुआत का भरपूर फायदा उठाए और बड़ा स्कोर बनाए।

लेवीटोव इंटरनेशनल शतरंज

विश्वनाथन आनंद नें अरोनियन को हराया

एम्स्टर्डम ,नीदरलैंड (एजेंसी)। भारत के पाँच बार के विश्व शतरंज चैम्पियन विश्वनाथन आनंद नें एक बार फिर अंतर्राष्ट्रीय शतरंज के फटाफट फॉर्मेट रैपिड शतरंज में वापसी की है । क्लासिकल शतरंज से लंबे समय से दूर आनंद लगातार विश्वस्तर पर रैपिड शतरंज में नजर आ रहे है और इस बार वह लेवीटोव इंटरनेशनल शतरंज में दुनिया के नौ अन्य खिलाड़ियों के साथ डबल राउंड रॉबिन आधार पर कुल 18 राउंड का टूर्नामेंट खेल रहे है । फिलहाल दो दिन के बाद कुल 9 राउंड खेले जा चुके है और आनंद 5.5 अंक बनाकर तीसरे स्थान पर चल रहे है । नौ राउंड में आनंद नें अभी तक सिर्फ एक मुक़ाबला हारा है जबकि तीन जीत और पाँच ड्रॉ के शानदार परिणाम हासिल किए है । आनंद नें इस दौरान सबसे आगे चल रहे यूएसए के लेवोन अरोनियन और वेसली सो , रूस के यान नेपोमनिशी को पराजित किया है जबकि अजरबैजान के ममेद्यारोव , रूस के डेनियल डुबोव ,ब्लादिमीर क्रामनिक , इज़राइल के बोरिस गेलफंड और रूस के पीटर स्वीडलर से बाजी ड्रॉ खेली है , उन्हे एकमात्र हार रूस के अलेक्ज़ेंडर ग्रीसचुक से मिली । फिलहाल नेपोमनिशी और ग्रीसचुक 6 अंक बनाकर पहले स्थान पर चल रहे है ।

एशियाई खेल : पूजा वस्त्राकर की शानदार गेंदबाजी

बांग्लादेश को हराकर फाइनल में पहुंचा भारत

हांगझोउ (एजेंसी)। पूजा वस्त्राकर की शानदार गेंदबाजी से भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने बांग्लादेश को रविवार को खेले गए एकतरफा सेमीफाइनल में आठ विकेट से हराकर पहली बार एशियाई खेलों के फाइनल में प्रवेश कर लिया। दाहिने हाथ की तेज गेंदबाज पूजा ने भारत से रवानगी से ठीक पहले टीम में अंजलि सरवानी की जगह ली थी। उन्होंने चार ओवर में 17 रन देकर चार विकेट लिए जो उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। बांग्लादेश की टीम 17.5 ओवर में 51 रन पर आउट हो गई जो भारत के खिलाफ उसका न्यूनतम स्कोर है। वस्त्राकर और टिटास साधु ने नई गेंद से कहर बरपाते हुए बांग्लादेश के बल्लेबाजों को बांधे रखा। सिर्फ कप्तान निगार सुल्ताना (12) ही दोहरे अंक तक पहुंच सकी। भारत ने 8.2 ओवर में ही लक्ष्य हासिल कर लिया। कनिका आहूजा (नाबाद 1) और जेमिमा रौड्रिग्स (नाबाद 20) ने टीम को जीत तक पहुंचाया। भारत ने कप्तान स्मृति मंधाना (सात) और शेफाली वर्मा (17) के विकेट गंवाए। भारतीय टीम नियमित कप्तान हरमनप्रीत कौर के बिना खेल रही है जो दो मैचों का निलंबन झेल रही है। हरमनप्रीत को कुछ महीने पहले एक श्रृंखला में बांग्लादेशी अंपायरिंग की आलोचना करने के कारण निलंबन झेलना पड़ा था। वस्त्राकर ने पहली ही गेंद पर शाती रानी (0) को आउट करके बेहतरीन शुरूआत की। उन्होंने इसी ओवर में शमीमा सुल्ताना को पगबाधा आउट किया जबकि शोभना मोस्तारी भी टिक नहीं सकी। पहले तीन ओवर में तीन विकेट लेकर पूजा ने भारत का शिकंजा कस दिया। टिटास ने उनका बखूबी साथ देते हुए सोरना अख्तर को बोल्ड किया। बीच के ओवरों में स्पिनरों ने बल्लेबाजों को खुलकर खेलने नहीं दिया। कुछ बल्लेबाजों के रनआउट होने से बांग्लादेश की मुश्किलें और बढ़ गई।

क्रिकेट विश्व कप2023-सूर्यकुमार को लेकर गौतम गंभीर ने कहा

यह एक बहुत बड़ा जुआ होगा

नईदिल्ली (एजेंसी)। सूर्यकुमार यादव ने 590 दिनों के लंबे इंतजार के बाद आखिरकार ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मोहाली में श्रृंखला के शुरुआती मैच के दौरान एक अच्छा वनडे अर्धशतक जमाया। इस महत्वपूर्ण पारी ने न केवल प्रतिभाशाली बल्लेबाज के लिए पुनरुत्थान का संकेत दिया बल्कि एक प्रासंगिक सवाल भी उठाया द्मद्ध क्या यह अकेला प्रदर्शन उन्हें आगामी विश्व कप के लिए भारत की शुरुआती एकादश में जगह की गारंटी देता है? क्रिकेट जगत के दिग्गज गौतम गंभीर का मानना है कि इसकी संभावना है, लेकिन इसके साथ ही कप्तान रोहित शर्मा और मुख्य कोच राहुल द्रविड़ के लिए चेतावनी भी जुड़ी है।

गंभीर ने कहा, अगर सूर्यकुमार यादव आपकी पहली प्लेइंग इलेवन में हैं तो मैं चाहूंगा कि वह 6-7 नंबर पर बल्लेबाजी करें, लेकिन बड़ा सवाल यह होगा कि नंबर 5 पर कौन बल्लेबाजी करेगा। फिर जडेजा नंबर 5 पर बल्लेबाजी कर सकते हैं, हार्दिक 6 नंबर पर और सूर्यकुमार फिनिशर के रूप में जहां वह अंतिम 15-20 ओवरों में बल्लेबाजी कर सकते हैं।

फिर भी दक्षिणपूर्वी ने समझदारी से बताया कि यह रणनीति अपने जोखिमों और जटिलताओं से रहित नहीं है। उन्होंने कहा, लेकिन यह तय करना एक बड़ा जुआ होगा कि आप जडेजा को नंबर 5 पर चाहते हैं और सूर्यकुमार को जिस फॉर्म में वह वनडे क्रिकेट में हैं, नंबर 7 पर चाहते हैं। इससे शीर्ष चार पर काफी जिम्मेदारी आ जाएगी।

एशियाई खेल

भारतीय पुरुष हॉकी टीम की धमाकेदार शुरूआत, उज्बेकिस्तान को 16-0 से हराया

हांगझोउ (एजेंसी)। चीन के हांगझोउ में चल रहे 19वें एशियाई खेलों में रविवार को भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने अपने पूल ए के पहले मुकाबले में उज्बेकिस्तान को 16-0 से हराकर धमाकेदार शुरुआत की। भारत ने आज यहां अपने पहले मुकाबले के 7वें मिनट में ललित कुमार उपाध्याय ने पहला गोल किया। इस बीच वरुण ने अपनी ड्रैग-फ्लिक को गोल में तब्दील कर भारत की बढ़त 2-0 कर दिया।

दूसरे क्वार्टर में भारतीय टीम ने अपने अटैक और डिफेंस की बदौलत उज्बेकिस्तान पर दबाव बनाए रखा। अभिषेक ने मनदीप के लेफ्ट फ्लैंक को गोल तब्दली बढ़त को कर 3-0 कर दिया। इसके ठीक अगले मिनट ही मनदीप सिंह ने एक बेहतरीन पास को गोलपोस्ट में पहुंचाकर टीम के स्कोर में इजाफा किया। ललित कुमार उपाध्याय ने एक और गोल कर टीम का स्कोर 5-0 पहुंचा दिया। मनदीप सिंह ने एक के एक दो गोल करते भारत का स्कोर 7-0 पहुंचा दिया।

पहले हाफ तक भारत ने 7-0 से अपनी बढ़त बना ली थी और उसने उज्बेकिस्तान को गोल करने का कोई मौक़ा नहीं दिया। दूसरे हाफ की शुरुआत भारत ने रोमांचक अंदाज में की, भारतीय खिलाड़ियों ने फिर लगातार दो गोल कर भारत का स्कोर 9-0 पहुंचा दिया। 38वें मिनट में अमित रोहिदास तो 42वें मिनट में सुखजीत सिंह ने गोल दागकर टीम की बढ़त में इजाफा किया। वरूण कुमार ने लगातार दो गोल दागे। इसी बीच ललित उपाध्याय ने अपना चौथा गोल किया।

भारतीय खिलाड़ी संजय ने 57वें मिनट में एक पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील कर टीम का आखिरी गोल किया। इस तरह भारतीय हॉकी टीम ने उज्बेकिस्तान को 16-0 से हराकर एशियाई खेलों में अपनी धमाकेदार शुरुआत की। भारतीय टीम की ओर से ललित उपाध्याय (7वें, 24वें, 37वें और 53वें मिनट), वरूण कुमार (12वें, 50वें और 52वें मिनट), मनदीप सिंह (18वें, 27वें और 28वें मिनट), अभिषेक (17वें मिनट), सुखजीत सिंह (42वें मिनट), अमित रोहिदास (38वें मिनट) और संजय (57वें मिनट) ने गोल किया। भारतीय पुरुष हॉकी टीम मंगलवार को अपना अगला मुकाबला सिंगापुर से खेलेगी।

एशियाई खेल

श्रीहरि और महिला फ्रीस्टाइल रिले टीम फाइनल में पहुंची

हांगझोउ (एजेंसी)। स्टार तैराक श्रीहरि नटराज और भारतीय महिला टीम ने एशियाई खेलों में रविवार को क्रमशः सौ मीटर पुरूष बैकस्ट्रोक और चार गुणा 100 मीटर फ्रीस्टाइल रिले फाइनल में प्रवेश कर लिया। ओलंपियन माना पटेल, धिनिधि देसिंघु, जानवी चौधरी और शिवांगी शर्मा 3ः53.80 सेकंड का समय निकालकर दस टीमों में छठे स्थान पर रहे। वहीं श्रीहरि 54.71 सेकंड का समय निकालकर अपनी हीट में दूसरे और कुल पांचवें स्थान पर रहे। भारत के उत्कर्ष पाटिल 59.42 सेकंड के साथ पुरूषों की सौ मीटर बैकस्ट्रोक स्पर्धा में 20वें स्थान पर रहे। तनीश जॉर्ज मैथ्यू और अनिल कुमार पुरूषों के 100 मीटर फ्रीस्टाइल फाइनल में क्रमशः 12वें और 17वें स्थान पर रहकर फाइनल में जगह नहीं बना सके।

श्रीलंका को लगा बड़ा झटका, ऑलराउंडर वानिंदु हसरंगा विश्व कप 2023 से बाहर

कोलंबो (एजेंसी)। क्रिकेट विश्व कप 2023 को शुरू होने में कुछ दिन बचे हैं। वहीं इससे पहले श्रीलंका को बड़ा झटका लगा है क्योंकि स्टार ऑलराउंडर वानिंदु हसरंगा को क्रिकेट विश्व कप 2023 से बाहर कर दिया गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार हसरंगा भारत में होने वाले इस प्रमुख कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लेंगे। हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण उन्हें बाहर कर दिया गया है। श्रीलंका क्रिकेट के पास हसरंगा के प्रतिस्थापन की पुष्टि करने के लिए अभी भी चार दिन और हैं क्योंकि 28 सितंबर अंतिम विश्व कप टीम जमा करने का आखिरी दिन है।

हसरंगा श्रीलंकाई टीम के लिए एक प्रमुख खिलाड़ी हो सकते थे क्योंकि आईपीएल में अपने अनुभव की बदौलत वह भारतीय परिस्थितियों को अच्छी तरह से जानते हैं। विश्व कप में स्पिन को भी सहायता मिलने की संभावना है और इसलिए हसरंगा उनकी टीम के लिए गेम चेंजर हो सकते थे। श्रीलंकाई टीम को उनकी काफी कमी खलेगी। पूरी संभावना है कि दासुन शनाका टीम का नेतृत्व करेंगे। उपमहाद्वीपीय परिस्थितियों में श्रीलंका छुपा रुस्तम हो सकता है।

श्रीलंका टूर्नामेंट की शुरुआत 7 अक्टूबर को दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मैच से करेगा। श्रीलंकाई टीम 2 नवंबर को मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में मेजबान भारत से भिड़ेगी, जहां दोनों टीमें 12 साल पहले विश्व कप फाइनल में भिड़ी थीं।

आईसीसी विश्व कप 2023 के लिए श्रीलंका की संभावित टीम - दासुन शनाका (कप्तान), पथुम निसांका, दिमुथ करुणारत्ने, चैरिथ असलांका, धनंजय डी सिल्वा, कुसल मेंडिस, कुसल परेरा, सदीरा समरविक्रमा, डुनिथ वेलालागे, मथीशा पथिराना, कासुन राजिथा, प्रमोद मदुशन। दुष्मंथा चमीरा, लाहिरू कुमारा

पक्षपातपूर्ण रवैया ओलंपिक चार्टर के खिलाफ: ठाकुर

कोयंबटूर। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि अरूणाचल प्रदेश के तीन खिलाड़ियों को चीन द्वारा वीजा नहीं दिया जाना पक्षपातपूर्ण और ओलंपिक चार्टर के खिलाफ है और भारत को यह स्वीकार्य नहीं है। सूचना और प्रसारण और खेल मंत्री ठाकुर ने कहा कि पूर्वोत्तर का यह राज्य भारत का अभिन्न अंग है और रहेगा।

उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों के समर्थन में उन्होंने अपना चीन दौरा रद्द कर दिया है। अरुणाचल प्रदेश की तीन महिला वुशु खिलाड़ियों न्येमान वांग्सू, ओनिलु तेगा और मेपुंग लाम्मु कोएशियाई खेलों के लिए 'एक्रिडिटेशन' (मान्यता) देने से इनकार कर दिया गया है जो खिलाड़ियों के लिए वीजा के रूप में भी काम करता है। ठाकुर ने पत्रकारों से कहा ,'' आप देख सकते हो कि मैं चीन में नहीं हूं। मैं कोयंबटूर में हूं और अपने खिलाड़ियों के समर्थन में हूं। एक देश का ऐसा पक्षपातपूर्ण रवैया जो ओलंपिक चार्टर के खिलाफ है, स्वीकार्य नहीं है।'' उन्होंने कहा ,'' चीन का यह कदम भारत को स्वीकार्य नहीं है और इसी कारण से मैने अपना चीन दौरा रद्द किया है क्योंकि उन्होंने अरूणाचल प्रदेश के खिलाड़ियों को एशियाई खेलों में भाग लेने का मौका नहीं दिया।

एशियाई खेल

अर्जुन-अरविंद को नौकायन में रजत, कॉक्स एट टीम दूसरे स्थान पर

हांगझोउ (एजेंसी)। भारतीय नौकायन खिलाड़ियों ने एशियाई खेलों में रविवार को शानदार शुरूआत करते हुए दो रजत और एक कांस्य पदक जीता। सुबह अर्जुन लाल जाट और अरविंद सिंह ने पुरूष लाइटवेट डबल स्कल स्पर्धा में रजत पदक जीतकर भारत का खाता खोला। भारतीय जोड़ी 6ः28.18 सेकंड का समय निकालकर दूसरे स्थान पर रही। चीन के जुंजी फान और मान सुन ने 6ः23.16 सेकंड का समय निकालकर स्वर्ण पदक हासिल किया। उजबेकिस्तान के शखजोद नुरमातोव और सोबिरजोन सफरोलियेव ने कांस्य पदक अपने नाम किया।

पुरूषों की कॉक्स एट स्पर्धा में भारत और चीन के बीच कड़ा मुकाबला था जिसमें भारतीय टीम 5ः43.01 सेकंड का समय निकालकर दूसरे स्थान पर रही। चीन ने 2.84 सेकंड से बाजी मारकर स्वर्ण पदक जीता। भारतीय टीम में नीरज, नरेश कलवानिया, नीतिश कुमार, चरणजीत सिंह, जसविंदर सिंह, भीम सिंह, पुनीत कुमार और आशीष शामिल थे। इंडोनेशिया को कांस्य पदक मिला। जापान और उजबेकिस्तान जैसे नौकायन के धुरंधरों की टीमें पाचवें और चौथे स्थान पर रही।

कॉक्सलेस पेयर में भारत के बाबूलाल यादव और लेख राम को कांस्य पदक मिला जिन्होंने 6ः50.41 सेकंड का समय निकाला। हांगकांग चीन ने स्वर्ण और उजबेकिस्तान ने रजत पदक जीता। भारत ने नौकायन में 33 सदस्यीय दल भेजा है। अरविंद ने पदक जीतने के बाद कहा कि उनका लक्ष्य स्वर्ण था लेकिन दो महीने पहले लगी चोट के कारण उनकी तैयारियां बाधित हुई। उन्होंने कहा, 'हम 20.25 दिन अभ्यास नहीं कर सके क्योंकि मेरी कमर में चोट लगी थी।ज

उन्होंने कहा कि अगला लक्ष्य पेरिस ओलंपिक 2024 में पदक जीतना है। उन्होंने कहा, 'अब हम पेरिस ओलंपिक पर ध्यान केंद्रित करेंगे और 2026 एशियाई खेलों में स्वर्ण जीतने की कोशिश करेंगे। उनके साथी अर्जुन ने कहा, 'हमने स्वर्ण जीतने की पूरी कोशिश की। हमारे कोच ने कहा कि अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करो। हम अपना व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं दोहरा सके जो हमने पुणे में आर्मी नोडल सेंटर में किया था।

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ में महिलाएं चला रहीं अनोखा बैंक, यहां पैसे नहीं मिलते हैं बर्तन, आमदनी भी जबर्दस्त

रायपुर, एजेंसी। बैंक शब्द का नाम लेते ही रुपये पैसे की लेनदेन वाले बैंक या ब्लड बैंक याद आ जाते हैं। लेकिन छत्तीसगढ़ में महिलाएं एक अनोखा बैंक चला रही हैं जहां रुपए पैसे या ब्लड नहीं बल्कि बर्तन मिलते हैं। देश में स्वच्छ भारत अभियान के तहत लगभग 1560 ऐसे बर्तन बैंक चल रहे हैं। इन बैंकों से आम लोग विभिन्न आयोजनों, समारोह और पार्टी के लिए बर्तन किराए पर लेते हैं। शहरों में सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रतिबंध के बाद इन बैंकों को आम नागरिकों को प्लास्टिक से बने डिस्पोजेबल आईटम जैसे- थाली, प्लेट, कटोरी, गिलास एवं चम्मच आदि के विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। इतना ही नहीं बर्तन बैंकों से शहरी गरीब महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। इन बैंकों को महिलाओं के लिए अतिरिक्त आमदनी के स्रोत विकसित करने के लिए भी एक अनूठा प्रयोग माना जा रहा है। अधिकतर बर्तन बैंक स्वयं सहायता समूह में महिलाओं द्वारा या फिर जन भागीदारी द्वारा चलाये जाते हैं। स्थानीय प्रशासन इसे शुरू करने के लिए रकम उपलब्ध करता है। छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर में एक ऐसे ही बर्तन बैंक के संचालन से में 3 लाख 85 हजार रुपये की आमदनी हुई है। ललिता पांडे, दीदी बर्तन बैंक अध्यक्ष, अंबिकापुर का कहना है की भविष्य में बर्तन बैंक की क्षमता और बढ़ा कर शहर के बैंकवेट-हॉल, होटल आदि से टायअप करना चाहते हैं। कचरा मुक्त शहर बनाने में भी बर्तन बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अधिकतर पार्टी या समारोह में बहुतायात उपयोग होने वाले सिंगल यूज प्लास्टिक यथा डिस्पोजल, थाली, कटोरी, चम्मच एवं गिलास आदि का प्रयोग होता है। इससे शहरों में कचरा फैलता है। नगर निगम रिसाली के निवासी, अंकु सिंह ने बताया की अपने पुत्री पृषा सिंह के जन्मोत्सव की पार्टी में ये कुछ नया करना चाहते थे। तो उन्होंने जीरो वेस्ट इवेन्ट करने की ठानी और दीदी बर्तन बैंक से बर्तन किराए पर लिए थे।

प्रयागराज से अगवा व्यापारी के बेटे की बेरहमी से हत्या, अरवारी जंगल में मिला शव

प्रयागराज, एजेंसी। प्रयागराज जिले के शंकरगढ़ कस्बे से व्यापारी के बेटे को अगवा कर बदमाशों ने चित्रकूट के अरवारी जंगल में पत्थरों से बुरी तरह कूचकर मार डाला। इसके बाद शव को जंगल में फेंक कर हत्यारे मौके से भाग निकले। चरवाहों की सूचना पर रविवार को सुबह बरगढ़ पुलिस ने जंगल से शव बरामद किया है। घटना की जानकारी मिलने पर मृतक के परिजन मौके पर पहुंच गए हैं। प्रयागराज व चित्रकूट की पुलिस हत्यारों की तलाश में जुटी है। प्रयागराज जिले के शंकरगढ़ सदर बाजार निवासी पुष्पराज केसरवानी उर्फ विक्की का 14 वर्षीय बेटा शुभ केसरवानी शनिवार की शाम करीब चार बजे घर से निकला था। इसके बाद फिर घर लौटकर नहीं पहुंचा तो परिजनों ने खोजबीन शुरू की। बताते है कि रात करीब साढ़े आठ बजे किसी अज्ञात व्यक्तियों पुष्पराज को फोन कर अपहरण की बात कहकर फिरौती मांगी। कहा कि उसका बेटा शुभ उनके कब्जे में है। पंद्रह लाख रुपये लेकर डभौरा के जंगल में आने की बात कही। धमकाया कि पुलिस को बताया तो बेटे को गोली मार देंगे। सूत्रों की माने तो पिता ने गुपचुप तरीके से बेटे को छुड़ाने का प्रयास भी शुरू कर दिया था। लेकिन कुछ लोगों ने पुलिस को घटना की जानकारी दे दी। जिससे पुलिस सक्रिय हो गई। शंकरगढ़ थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने जिले की सीमा होने के नाते बरगढ़ थाना के अलावा एमपी के डभौरा थाना पुलिस से भी संपर्क किया। बताते हैं कि बदमाशों की लोकेशन आसपास के जंगलों में मिल रही थी। फलस्वरूप परिजन और पुलिस टीम बदमाशों तक पहुंचने के लिए रात भर लगे रहे। रविवार को सुबह फरवरी जंगल में पहुंचे कुछ चरवाहों ने खून से लथपथ किशोर का शव पड़ा हुआ देखा तो पुलिस को सूचना दी। कुछ देर में थाना प्रभारी बरगढ़ अंजनी कुमार सिंह ने पहुंचकर शव को कब्जे में लिया और शंकरगढ़ पुलिस को अवगत कराया। मौके पर पहुंचे परिजनों ने शव की शिनाख्त की। थाना प्रभारी ने बताया कि प्रथम दृष्ट्या किशोर की पत्थर से कूचकर हत्या की गई है। हत्यारों की तलाश के लिए पुलिस प्रयास कर रही है।

नेपाल से इंडिया आने को विदेशी पर्यटकों के लिए नहीं खुले दरवाजे

पिथौरागढ़, एजेंसी। कोरोना के बाद नेपाल से आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिए भारत ने अब तक दरवाजे नहीं खोले हैं। उत्तराखंड के पिथौरागढ़ और चम्पावत के सीमावर्ती क्षेत्रों में इससे पर्यटन कारोबार प्रभावित हुआ है। साल 2019 तक विदेशी बेरोकटोक भारत प्रवेश करते थे और इनके साथ खूब विदेशी मुद्रा भी आती थी। कोरोना से पहले धारचूला से लेकर बनबसा तक हर साल औसतन 7 हजार से अधिक विदेशी पर्यटक नेपाल के रास्ते भारत में प्रवेश करते थे। संक्रमण के दौरान भारत ने विदेशियों के नेपाल से सीधे प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया। वर्तमान में कोरोना से जुड़े सभी नियम समाप्त हो गए हैं, लेकिन विदेशियों का आने का प्रतिबंध नहीं हटा है। आज भी विदेशी पर्यटक सीमावर्ती इलाकों से लौटने को मजबूर हैं। गड्डा चौकी स्थित आव्रजन कार्यालय के प्रमुख पद्मराज भट्ट कहते हैं हम रोज बड़ी संख्या में विदेशी नागरिक यहां से भारत में प्रवेश करना चाहते हैं। नेपाल के पर्यटन व्यवसायी परमानंद भंडारी का कहना है कि कारोबारियों ने कहा पूर्व की तरह बेरोकटोक हो आवाजाही भारत और नेपाल का पर्यटन कारोबार एक दूसरे देश से जुड़ा रहा है। कोरोना काल के बाद भी रोक नहीं हटना गंभीर है। ऐसे में विदेशी पर्यटकों से होने वाली आय प्रभावित हुई है। इसी प्रकार झूलाघाट के होटल कारोबारी नीरज भट्ट का कहना है कि ऐसे कई लोग दिल्ली, नैनीताल, देहरादून, बद्रीकेदार और केदारनाथ भी जाना चाहते हैं, लेकिन उन्हें दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। जब उन्हें दोनों देशों में विदेशी नागरिक होने के नाते प्रवेश नहीं दिया जाता। इसे हटाया जाए।

जब भी मौका मिला महिला पहलवानों से छेड़छाड़ करते थे बृजभूषण, कोर्ट में दिल्ली पुलिस की दलील

नई दिल्ली, एजेंसी।

महिला पहलवानों के यौन शोषण मामले में शनिवार को दिल्ली पुलिस ने अदालत में अपनी दलील पेश करते हुए कहा कि भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ जो साक्ष्य और सबूत मिले हैं, वह आरोप तय करने के लिए पर्याप्त हैं। दिल्ली पुलिस ने कहा कि बृजभूषण सिंह को जब भी मौका मिलता था, वह महिला पहलवानों की लज्जा भंग करने की कोशिश करते थे।

अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट (एसीएमएम) हरजीत सिंह जसपाल ने महिला पहलवानों के यौन उत्पीड़न मामले में दिल्ली पुलिस की दलीलें सुनीं। दिल्ली पुलिस ने बताया कि बृजभूषण शरण सिंह को पता था कि वह क्या कर रहे हैं और इसलिए उन्होंने शिकायत के जरिए अपने कृत्य को छिपाने की कोशिश की, जिससे उनकी मंशा का पता चलता है।

दिल्ली पुलिस ने अदालत में आरोप पत्र पर बहस करते हुए कहा कि सवाल यह नहीं है कि पीड़ित लड़की ने कोई प्रतिक्रिया दी है या

नहीं। मसला यह है कि उनके साथ गलत किया गया। दिल्ली पुलिस ने शिकायतकर्ताओं के साथ दिल्ली में डब्ल्यूएफआई के कार्यालय में हुई घटना का जिक्र किया और कहा कि क्षेत्राधिकार दिल्ली में ही बनता है।

कमरे में जबर्दस्ती गले लगाने का आरोप

पुलिस ने एक महिला पहलवान की शिकायत का वर्णन करते हुए कहा कि तजाकिस्तान में एक इवेंट के दौरान बृजभूषण ने शिकायतकर्ता को कमरे में बुलाया और जबर्दस्ती गले लगाया। विरोध करने पर बृजभूषण ने कहा कि पिता की तरह व्यवहार किया था। इससे पता चलता है कि बृजभूषण को पता था वह क्या कर रहे हैं।

इस दौरान पुलिस ने कहा कि उनसे जुड़ी कुछ घटनाएं और शिकायतें हैं जिन्हें एफआईआर में एक साथ जोड़ दिया गया है। दिल्ली पुलिस ने यह भी तर्क दिया कि सीआरपीसी की धारा 188 के तहत मंजूरी की आवश्यकता नहीं है क्योंकि कुछ घटनाएं भारत के भीतर हुईं।

विशेष लोक अभियोजक (एसपीपी) अतुल श्रीवास्तव ने अपने दलीलों के समर्थन में आरोपी की मंशा दिखाने के लिए कजाकिस्तान, मंगोलिया, बेल्लारी और नई दिल्ली में हुई घटनाओं का हवाला दिया। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि अभियुक्तों के कार्यों को सह-अभियुक्तों द्वारा सुविधाजनक बनाया गया था। उन्होंने दो शिकायतकर्ताओं के भाई और पति को नई दिल्ली में डब्ल्यूएफआई कार्यालय में आरोपियों के कमरे के बाहर रोक दिया।

यौन उत्पीड़न मामले में बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ आरोप के बिंदु पर दिल्ली पुलिस की आगे की दलीलों पर अदालत 7 अक्टूबर को सुनवाई जारी रखेगी। इससे पहले, दिल्ली पुलिस ने 16 सितंबर को दलील दी थी कि आरोपी बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह को निगरानी समिति ने कभी भी बरी नहीं किया था।

वादाखिलाफी के आरोप में कांग्रेस पर परिवाद ; राहुल और टीएस सिंहदेव समेत 13 पर एफआईआर की मांग

रायपुर, एजेंसी।

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव का समय जैसे-जैसे करीब आ रहा है वैसे-वैसे राजनीति के अलग अलग रंग सामने आ रहे हैं। नेता सत्ता हासिल करने एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं। मतदाताओं को साधने की रणनीति बनाई जा रही है। भाजपा की भूपेश बघेल सरकार पर जन घोषणा पत्र के 36 वादों को पूरा नहीं करने का आरोप लगा रही है। इस बीच दुर्ग जिले के एक अधिवक्ता ने कांग्रेस पार्टी पर वादा पूरा नहीं करने को लेकर दुर्ग न्यायालय में परिवाद दायर कर दिया है।

13 कांग्रेस नेताओं पर एफआईआर दर्ज करने की मांग

परिवाद में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव, संसदीय कार्यमंत्री रविंद्र चौबे सहित 13 कांग्रेस नेताओं पर स्नढ्ढक्र दर्ज करने की मांग की गई है। बता दें कि कांग्रेस पार्टी द्वारा 2018 के विधानसभा चुनाव के पहले जन घोषणा-पत्र जारी किया गया था। इस घोषणा-पत्र में 36 वादे किए गए थे। घोषणा-पत्र में किए गए वादों को पूरा नहीं करने पर अधिवक्ता अशोक शर्मा ने दुर्ग के न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी पुनीतराम गुरुपंच की अदालत में परिवाद दायर किया है।

इन नेताओं पर ऐक्शन की मांग

परिवाद में कांग्रेस नेता राहुल गांधी, मंत्री टीएस सिंहदेव, मंत्री मोहम्मद अकबर, मंत्री रविंद्र चौबे, मंत्र शिवकुमार डहरिया, मंत्री उमेश पटेल, पूर्व मंत्री डा. प्रेमसिंह टेकाम, विधायक धनेंद्र साहू, राज्यसभा सांसद फूलो देवी नेताम, विधायक शैलेष पांडेय, विधायक अरुण वोरा, शिशुपाल शोरी और पूर्व केंद्रीय मंत्री जयराम रमेश के नाम शामिल हैं।

25 सितंबर को न्यायालय में सुनवाई

अशोक शर्मा ने सभी के विरुद्ध छल (धारा 415), धोखाधड़ी (धारा 420), षडयंत्र (धारा 120 बी) और समान आशय (धारा 34) के तहत एफआईआर दर्ज करने थाने को निर्देशित करने का निवेदन कोर्ट में किया है। इस परिवाद पर 25 सितंबर को न्यायालय में सुनवाई होनी है।

कांग्रेस जन घोषणापत्र के वादे छल और कपटपूर्ण

अधिवक्ता अशोक शर्मा ने परिवाद में उल्लेख किया है कि जन घोषणापत्र के वादों को पूरा नहीं करने से प्रदेश का हर वर्ग प्रभावित हुआ है। घोषणा-पत्र में किए गए वादे छल और कपटपूर्ण थे। जिन वादों पर विश्वास करके लोगों ने कांग्रेस प्रत्याशियों के पक्ष में मतदान किया और उनकी सरकार बनी और बाद में वह वादा पूरा करना भूल गए।

गुरुग्राम की 15 बिल्डर कॉलोनियों के 500 मकान होंगे सील, सर्वे के बाद थमाए गए नोटिस

नई दिल्ली, एजेंसी। गुरुग्राम जिला नगर योजनाकार प्रवर्तन विभाग ने 15 बिल्डर कॉलोनियों में बिल्डिंग प्लान नियमों का उल्लंघन करने वाले आवासीय मकानों पर शिकंजा कस दिया है। 500 आवासीय मकानों में अगले माह से सीलिंग होगी। इसमें डीएलएफ फेज-1 से 4 तक, सुशांतलोक-1 व 3 तक, सनसिटी, साउथ सिटी-1 व 2, विपुल वर्ल्ड, उप्पल साउथएंड, वाटिका इंडिया नेक्स्ट, बीपीटीपी जैसी कॉलोनियां शामिल हैं। मकान मालिकों पर आरोप है कि अतिरिक्त निर्माण करके व्यावसायिक गतिविधियां संचालित कर रहे हैं। नोटिस के बाद भी गतिविधियां बंद नहीं हुईं। अब इन मकानों की सीलिंग की कार्रवाई होगी। डीटीपी प्रवर्तन विभाग की ओर से बिल्डर कॉलोनियों का सर्वे कराया गया। इसके लिए चार टीमें बनाई गई थीं। टीमों ने डीएलएफ फेज-1 से 4 तक, सुशांतलोक-1 से 3 तक, सनसिटी, साउथ सिटी, विपुल वर्ल्ड, उप्पल साउथ एंड, वाटिका इंडिया नेक्स्ट, सेक्टर-102 बीपीटीपी, सेक्टर-62 के इमार कॉलोनी समेत अन्य लाइसेंस कॉलोनियां शामिल हैं। इन कॉलोनियों के रिहायशी मकानों में व्यावसायिक गतिविधियां चलाने पर 800 मकान मालिकों को नोटिस दिए गए। डीटीपी विभाग की तरफ से भेजे नोटिस के बाद मकान मालिको ने सीलिंग के डर से कोर्ट में याचिका डाली थी। अब तक करीब 25 याचिका दायर हो चुकी है। इसको लेकर विभाग की ओर से पैरवी की जा रही है। वहीं कोर्ट ने भी रिहायशी मकानों में संचालित व्यावसायिक गतिविधियों पर सख्त रुख अपनाते हुए किसी मामले में स्टे नहीं दिया है। डीटीपी विभाग के अनुसार टाउन एंड कंट्री प्लानिंग के महानिदेशक टीएल सत्यप्रकाश के आदेश पर सीलिंग अभियान अब लगातार जारी रहेगा। कोर्ट केसों में मजबूती से पैरवी की जा रही है। इसी सप्ताह से 100 व्यावसायिक गतिविधियों को सील करने का लक्ष्य रखा गया है। विभाग अधिकारियों का रिहायशी मकानों में व्यावसायिक गतिविधियों पर ठोस कार्रवाई के निर्देश है। ऐसे में डीटीपी प्रवर्तन की जिम्मेदारी तय की गई है कि रिहायशी मकानों में व्यावसायिक गतिविधियों पर किसी भी प्रकार की ढिलाई न बरती जाए।

मैं राजस्थान से कहीं नहीं जाऊंगी, हर राजस्थानी के हक के लिए लड़ती रहूंगी: वसुंधरा राजे

जयपुर, एजेंसी।

राजस्थान की पूर्व सीएम वसुंधरा राजे ने बड़ा बयान दिया है। वसुंधरा राजे ने कि वो किसी भी कीमत पर राजस्थान छोड़ने वाली नहीं हैं। उन्होंने महाभारत की द्रौपदी के चीरहरण का उदाहरण देते हुए कहा कि उनकी रक्षा करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण आए थे। लेकिन मेरी रक्षा नारी शक्ति करेगी। चुनावी माहौल में आए वसुंधरा राजे के इस बयान के अलग-अलग सियासी मायने निकाले जा रहे हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि वसुंधरा राजे ने इशारों में संकेत दे दिया है कि उसे भले ही साइड लाइन कर दिया हो लेकिन वह आसानी से हार नहीं मानेंगी।

वसुंधरा राजे ने दिया सियासी मैसेज

वसुंधरा राजे ने साफ कर दिया है कि वह दिल्ली की बजाय राजस्थान

की राजनीति करना पंसद करती है। राष्ट्रीय राजनीति में आने की उनकी कोई मंशा नहीं है। बता दें बीजेपी आलाकमान ने वसुंधरा राजे के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनकार दिल्ली आने का सियासी मैसेज दिया था। लेकिन वसुंधरा राजे की राजस्थान में भूमिका सीमित कर दी गई। सियासी जानकारों का कहना है कि यह आम धारणा है कि भगवान श्रीकृष्ण में ही याद आते हैं। वसुंधरा राजे के बयान से साफ है वह चुनौतियों से घिरी हुई है। वसुंधरा राजे के धुर विरोधी खेमा बेहद सक्रिय है। यहीं नहीं वसुंधरा राजे कैंप पर पूरी तरह से हावी भी हो गया है। राजे कैंप के नेताओं को तवज्जो नहीं मिल रही है। जबकि वसुंधरा राजे के करीबियों को नोटिस थमाया जा रहा है। पूर्व सीएम वसुंधरा राजे ने शनिवार को सिविल लाइंस स्थित उनके आवास पर रक्षा सूत्र कार्यक्रम में शामिल होने आईं महिलाओं को संबोधित करते हुए राजे ने बड़ा बयान दिया। वसुंधरा राजे ने कहा- मैं राजस्थान से कहीं नहीं जाऊंगी। आपकी सेवा करूंगी, आपके साथ रहूंगी। आपकी आवाज आपके साथ उठाने में कोई कमी नहीं रखूंगी। आपकी शक्ति, आपका साथ, आशीर्वाद बना हुआ है। यह इतना मजबूत है कि जो कोई भी तोड़ने की कोशिश करेगा, टूटेगा नहीं।

राजे शनिवार को सिविल लाइंस बंगले पर महिलाओं को संबोधित कर रही थीं। मैं जहां भी जाती हूं, यही कहती हूं। मैं जाति को तो मानती नहीं हूं। जाति केवल दो ही हैं। एक पुरुष जाति, जिनको साथ लेकर चलते हैं। दूसरी महिला जाति जो हमारी खुद की है राजस्थान में आप हमारी जाति की गिनती करें तो आधी शक्ति हमारी महिलाएं हैं।

कर्नाटक के जेडीएस उपाध्यक्ष सैयद शफीउल्ला साहब ने पार्टी से दिया इस्तीफा

बेंगलुरु, एजेंसी। 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले जनता दल (सेक्युलर) ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ हाथ मिलाने का फैसला किया है। इस ऐलान के कुछ दिनों के बाद जेडीएस के कर्नाटक के उपाध्यक्ष सैयद शफीउल्ला साहब ने पार्टी से अपना नाता तोड़ने का फैसला किया है। शफीउल्ला ने कर्नाटक अध्यक्ष को लिखे अपने इस्तीफे में कहा कि उन्होंने जेडीएस और भाजपा के साथ गठबंधन के कारण खुद को पार्टी से अलग कर लिया है। उन्होंने कहा, मैं बताना चाहूंगा कि मैंने समाज और समुदाय की सेवा करने के लिए कड़ी मेहनत की है। पार्टी की सेवा की है, क्योंकि हमारी पार्टी धर्मनिरपेक्ष साख पर विश्वास करती है और उस पर कायम है। हमारे नेता कुमारस्वामी ने भाजपा से हाथ मिला लिया है।

निज्जर की हत्या में ब्रिटिश कोलंबिया के प्रधानमंत्री को संदेह, कनाडा सरकार छिपा रहा जानकारी

टोरंटो, एजेंसी।

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत के प्रमुख डेविड एबी ने कहा है कि सरकार खालिस्तानी नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में विदेशी हस्तक्षेप के आरोपों के संबंध में जानकारी छिपा रही है। समाचार आउटलेट सीबीसी ने बताया कि लिबरल नेता ने कहा कि सार्वजनिक सुरक्षा मंत्री ने उनसे संपर्क कर कहा है कि ओटावा यह सुनिश्चित करना चाहता है कि प्रांत के पास अपने निवासियों को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक विवरण हों, लेकिन अच्छी तरह से जानकारी साझा नहीं की गई है। एबी ने कहा, मैं लगातार संघीय सरकार और संबंधित एजेंसियों पर इस नवीनतम घटना के बारे में जानकारी दबाये रखने की बजाय प्रांत के साथ साझा करने के लिए दबाव डाल रहा हूं। उन्होंने कहा कि निज्जर की हत्या के बारे में वह जो कुछ भी जानते हैं वह सार्वजनिक दायरे में है।

उन्होंने कनाडाई सुरक्षा खुफिया

सेवा (सीएसआईएस) के निदेशक के साथ एक ब्रीफिंग को भी निराशाजनक बताया क्योंकि कोई ठोस जानकारी प्रदान नहीं की गई। एबी ने सीबीसी न्यूज पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में कहा, कुछ समय से, मेरी राय यह रही है कि ओटावा के पास जो जानकारी है... और उस जानकारी को उन प्रांतों तक संप्रेषित करने की क्षमता में अंतर है जहां हम वास्तव में जमीनी स्तर पर प्रतिक्रिया देने के लिए इसका उपयोग करके मामले में अंतर ला सकते हैं।

एबी ने शुक्रवार को वैंकूवर में एक मीडिया सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि प्रवासी समुदायों की चिंताओं की बेहतर तरीके से रक्षा और समाधान करने के लिए संघीय खुफिया जानकारी की आवश्यकता है। आरोपों से संबंधित सबूतों को साझा करने के एक स्पष्ट संदर्भ में, एबी ने संवाददाताओं से कहा, हम ब्रिटिश कोलंबियाई लोगों को तभी सुरक्षित रख सकते हैं यदि हम एक साथ काम करते हैं। हम प्रवासी समुदायों, दुनिया के अन्य हिस्सों में घरेलू संबंध रखने वाले लोगों को विदेशी हस्तक्षेप से तब तक नहीं बचा सकते जब तक हम नहीं जानते कि यह (विदेशी हस्तक्षेप) हो रहा है। आरोपों से संबंधित सबूतों पर बोलते हुए, भारत-कनाडाई आपातकालीन तैयारी मंत्री हरजीत सिंह सज्जन ने इस सप्ताह कहा कि उनके लिए सबूतों के बारे में कुछ भी चर्चा करना बहुत अनुचित होगा क्योंकि पुलिस जांच चल रही है। सज्जन ने सीबीसी रेडियो को बताया, जब सबूत की बात आती है, तो पुलिस ही सबूत रखती है। और वे अकेले ही इस पर अगली कार्रवाई तय करते हैं। प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने शुक्रवार को मीडिया से बात करते हुए कहा कि भारतीय एजेंटों और निज्जर की हत्या के बीच संभावित संबंध से संबंधित विश्वसनीय आरोपों के बारे में नई दिल्ली को कई सप्ताह पहले सूचित किया गया था।

1 हफ्ते का समय और अब तक पास नहीं हुआ फेडरल बजट.. जो बाइडन ने अतिवादी रिपब्लिकन के एक छोटे समूह को जिम्मेदार ठहराया

वाशिंगटन एजेंसी।

संघीय शटडाउन अमेरिकी परिवारों के लिए एक नया खतरा पैदा कर रहा है। 2 मिलियन सैन्य कर्मियों से लेकर नागरिक कर्मचारी इस समय भारी दबाव का सामना कर रहे हैं।

इस बीच अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने इस बजट गतिरोध के लिए अतिवादी रिपब्लिकन के एक छोटे समूह को जिम्मेदार ठहराया है। बता दें कि अमेरिकी सरकार शटडाउन से महज एक सप्ताह दूर है और सांसदों ने इस मुद्दे को जल्द से जल्द सुलझाने का आग्रह किया है।

जो बाइडन 23 सितंबर को कांग्रेसनल ब्लैक कॉकस पुरस्कार के रात्रिभोज में शामिल हुए थे। यहां उन्होंने कहा कि वह और शीर्ष हाउस रिपब्लिकन केविन मैक्कार्थी पहले सरकारी खर्च के स्तर पर सहमत हुए थे, लेकिन अब अतिवादी रिपब्लिकनों का एक छोटा समूह इस समझौते पर खरा नहीं उतरना चाहता। इसी के कारण अब अमेरिका में हर किसी को इसकी कीमत चुकाने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।

इससे पहले कि सरकारी सेवाओं के लिए धन खत्म हो जाए, अमेरिकी सांसदों के पास व्यय विधेयक पर किसी समझौते पर पहुंचने के लिए 30 सितंबर की आधी रात तक का समय बचा हुआ है। समय कम होने के बीच बाइडन ने कहा कि सरकार को वित्त पोषित करना कांग्रेस की सबसे बुनियादी जिम्मेदारियों में से एक है। अब समय आ गया है कि रिपब्लिकन वह काम करना शुरू करें जिसके लिए अमेरिका ने उन्हें चुना है। जानकारी के लिए बता दें कि सरकारी शटडाउन से संघीय पार्कों, संग्रहालयों और अन्य स्थलों पर काम करने वाले लाखों श्रमिकों की आर्थिक स्थिति खतरे में पड़ जाएगी। अगर ऐसा होता है तो बाइडन को बड़ी राजनीतिक कीमत चुकानी पड़ सकती है, जो दोबारा राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ने जा रहे हैं।

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया में पुलिस अधिकारी की गोली मारकर हत्या

ओटावा, एजेंसी।

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया में खालिस्तान टाइगर फोर्स के प्रमुख हरदीप सिंह निज्जर के 3 माह बाद अब कोक्विटलम में शुक्रवार को एक पुलिस अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी गई और 2 अन्य अधिकारी घायल हो गए। पुलिस के एक बयान में कहा गया कि संदिग्ध को भी गोली मारी गई और वह गंभीर रूप से घायल हो गया।इसमें कहा गया, अधिकारियों की एक व्यक्ति के साथ बहस हुई, जिसके परिणामस्वरूप गोलीबारी हुई, जिसमें कई अधिकारी घायल हो गए और उस व्यक्ति को गोली मार दी गई। घायलों को अस्पताल ले जाया

गया, लेकिन 51 वर्षीय कांस्टेबल रिक ओ ब्रायन ने दम तोड़ दिया। एक घर में तलाशी वारंट के दौरान यह घयना हुई।

बता दें कि पश्चिमी कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत के सरे में एक गुरुद्वारे के बाहर दो अज्ञात हमलावरों ने 18 जून को निज्जर की गोली मारकर हत्या कर दी थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, निज्जर कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया स्थित गुरुद्वारा की पार्किंग में कार की ड्राइविंग सीट पर बैठा था। इसी दौरान दो युवक वहां पहुंचे और ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दीं। इस हमले में निज्जर की मौके पर ही मौत हो गई। बता दें कि निज्जर को भारत ने भगोड़ा घोषित किया हुआ था और उस पर 10 लाख का इनाम भी था।

इस घटना के 3 महीने बाद 18 सितंबर 2023 को कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने हाउस ऑफ कॉमन्स में आरोप लगाया कि निज्जर की हत्या में भारत सरकार के एजेंट्स का हाथ हो सकता है। ट्रूडो के बयान से साफ था कि वह भारत की खुफिया एजेंसी रॉ की तरफ निशाना साध रहे हैं। जिसमें बाद भारत ने इन आरोपों का खंडन किया था। इस बीच कनाडा में ब्रिटिश कोलंबिया के प्रीमियर डेविड एबी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि हरदीप निज्जर की हत्या में भारत की संलिप्तता के संबंध में उन्हें जो जानकारी दी गई है, वह सभी ओपन सोर्स जानकारी है, जो इंटरनेट पर उपलब्ध है। इससे पहले खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या मामले में कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने भारत पर निराधार आरोप लगाए थे।

ट्रूडो ने कनाडा की संसद में निज्जर (45) की हत्या में भारत सरकार के एजेंटों की भूमिका का आरोप लगाया था। हालांकि भारत पहले ही कनाडा की संसद में दिए गए ट्रूडो के बयान को दृढ़ता से खारिज कर चुका है। भारत का स्पष्ट कहना है कि कनाडा में किसी भी तरह की हिंसा में भारत सरकार की संलिप्तता के आरोप बेतुके और बेबुनियादी हैं। निज्जर भारत के सर्वाधिक वांछित आतंकवादियों में से एक था और उस पर 10 लाख रुपये का इनाम था।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129